[illegible]

ज्योतिष शास्त्र का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ

शिव-संहिता

सन्तान, कर्म विपाक, कोष, प्रश्नावली, कुण्डली, फलित, जातक
खण्ड एवं परिशिष्ट उपाय खण्ड–तन्त्र-मन्त्र सहित

सम्पादक :–

ज्योतिर्विद् श्रीसीताराम एडवोकेट

—:o:—

पुस्तक प्राप्ति स्थान :–

श्री बड़ागणेश पुस्तकालय

के. ६३/१६१ बड़ा गणेश, वाराणसी-१

सन् १९[illegible] ई०] सर्वाधिकार सुरक्षित मूल्य रु० ५)



सबका कल्याण करनेवाले प्राचीन ज्योतिष तथा तान्त्रिक विद्याओं के ज्ञाता "माँ" के परम भक्त, पवित्र हृदय, स्वर्गीय पूज्यवर गुरुवर श्री महात्मा जी के नाम से प्रसिद्ध "बलिया के बाबा जी" के चरणों में समर्पित यह लघु भेंट।

विनीत—
सीताराम एडवोकेट
के० ५७।१६१
नवापुरा, वाराणसी-१

विषय-सूची

ॐ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ शिव संहिता (संतान खण्ड)

अथ प्राणिनां पूर्वजन्मशापद्योतकं पंचमभाव, विचारः प्रारभ्यते

अर्थ—अब मनुष्यों के पूर्वजन्म के शाप का द्योतक ऐसे पञ्चम भाव का विचार किया जाता है।

पार्वत्युवाच

देव देव जगन्नाथ शूलपाणि वृषध्वज। केन योगेन मर्त्यानां जायते शिशुनाशनम् ॥ १ ॥ अथवा सर्वथा येन पुत्राभावाश्च जायने। उपायंशिशुरक्षार्थं ब्रूहिमे शशिशेखर ॥ २ ॥ कृपया शापमोक्षं च प्राणिनां जायते ध्रुवम्।

अर्थ—श्रीशिव से पार्वती बोली कि हे देव! हे देव!! हे जगन्नाथ! हे शूलपाणि! हे वृषभध्वज! इस प्राणी के कौन से योग से बालक नष्ट होते हैं। अथवा किस कारण से सर्वदा सन्तान नहीं होती। हे शशिशेखर! इस बाल रक्षा का उपाय मेरे आगे कहिये, तथा जिस कर्म करने से इसके पूर्वजन्म का शाप नष्ट हो वह भी कृपापूर्वक कहिये।

शंकरउवाच

साधुप्रश्नं त्वया देवि कथयामि सुबिस्तरात्।
शृणुष्वैकमना भूत्वा बलावलवशादपि ॥ ३ ॥

अर्थ--शंकर बोले कि हे देवि ! तुमने उत्तम प्रश्न किया, तुम एकाग्र चित्त होकर सुनो। मैं तेरे आगे ग्रहों के बलाबल के कारण जो सन्तान हानि होती है उसको विस्तार पूर्वक कहता हूँ।

सेयं सुनिश्चितं सर्वं राशि चक्रे विशेषतः ॥ ४ ॥ मेषादि मीनपर्यन्तं मूर्त्यादि द्वादश क्रमात्। भावं च भावपं ज्ञात्वा फलं ब्रूयाद्विचक्षणः ॥ ५ ॥ तनुवित्तंबन्धु मातृ-पुत्रशत्रुस्मरो मृतिः। धर्मकर्मं तथा लाभं व्ययान्ता भावसंज्ञकाः ॥ ६ ॥

अर्थ—हे प्रिये ! इस सन्तान का नष्ट होना न होना यह सब मेष से लेकर मीन पर्यन्त मूर्त्यादिक जो बारह राशि हैं उस राशि चक्र में क्रम से कहा है। बुद्धिमान् ज्योतिषी भाव और उस भाव के स्वामी के बलाबल का निर्णय करे फिर फल कहे। जहाँ तनु, धन, बन्धु, माता, पुत्र, शत्रु, स्त्री, मृत्यु, धर्म, कर्म, लाभ और व्यय ये बारह स्थान भावसंज्ञक हैं। जैसे तनुभाव, धनभाव इत्यादिक समझना चाहिये।

सर्पशापकारकयोगाः

रव्याररहुशनयः पुत्रस्था बलसंयुताः।
कारकाद्याक्षीणबलास्त्वनपत्यत्वमादिशेत् ॥ ७ ॥

अर्थ--सूर्य राहु और शनैश्चर ये तीनों ग्रह बलवान् होकर पञ्चम स्थान में बैठे हों और कारकादिक ग्रह क्षीणबली हों तो उसके सन्तान नहीं होगा, ऐसा कहिये।

पुत्रस्थानगते राहुकुजेनापि निरीक्षिते।
कुजक्षेत्रगते वापि सर्पशापात्सुतक्षयः ॥ ८ ॥

अर्थ—राहु पञ्चम स्थान में बैठा होय, और मंगल उसको पर्ण

दृष्टि से देखे, और राहु मंगल के घर में बैठा होय और देखता होय तो उस प्राणी के सर्प के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

पुत्रेशराहुसंयुक्ते पुत्रस्थे भानुनन्दने।
चन्द्रदृष्टे युते वापि सर्पशापात्सुतक्षयः ॥ ९ ॥

अर्थ--पञ्चमेश राहु करके युक्त हो और पञ्चम घरमें शनैश्चर बैठा हो तथा उसको चन्द्रमा देखता हो या उसके साथ बैठा हो तो सर्प के शाप से सन्तान का क्षय हो।

कारके राहुसंयुक्ते पुत्रेशे बलवर्जिते ॥
लग्नाधिपे भौमयुते सर्पशापात्सुतक्षयः ॥ १० ॥

अर्थ—कारकांश में राहु बैठा हो और पञ्चमेश बलहीन हो तथा लग्नेश भौम से युक्त हो तो उसके सर्पशाप से पुत्र का क्षय होता है।

कारके भौमसंयुक्ते लग्नेशे राहुसंयुते।
पुत्रस्थानेन्दुसंयुक्ते सर्पशापात्सुतक्षयः॥ ११ ॥

अर्थ—कारकांश में मंगल बैठा हो और लग्नेश राहु से युक्त हो। तथा पञ्चम स्थान में चन्द्रमा पड़ा हो तो उसके सर्प (नागों) के साप से सन्तान नष्ट हो।

भौमांशे भौमसंयुक्ते पुत्रेसे सोमनन्दने।
राहुमन्दयुते लग्ने सर्पशापात्सुतक्षयः॥ १२ ॥

अर्थ--मङ्गल अपने नवांश में हो और पञ्चमेश के नवांश में चन्द्रमा बैठा हो तथा लग्न में राहु और शनि हो तो सर्प के शाप से सन्तान का नाश हो।

पुत्रस्थाने कुजक्षेत्रे पुत्रे राहुसमन्विते।
सौम्यदृष्टे युते वापि सर्पशापात्सुतक्षयः ॥ १३ ॥

अर्थ—पञ्चम स्थान में और मङ्गल के क्षेत्र में पञ्चमेश राहू से युक्त हो तथा बुध से दृष्ट अथवा युत हो तो उसे सर्पशाप से पुत्र क्षय कहना चाहिये।

पुत्रस्था भानुमन्दाराः स्वर्भानुः शशिजो गुरुः।
निर्बलौ पुत्रलग्नेशौ सर्पशापात्सुतक्षयः ॥ १४ ॥

अर्थ—पञ्चम घर में सूर्य, शनि, मङ्गल, राहू, बुध और बृहस्पति हो तथा पञ्चमेश और लग्नेश ये निर्बल हो तो सर्प के शाप से पुत्र का नाश होता है।

लग्नेशे राहुसंयुक्ते पुत्रशे भौमसंयुते।
कारके राहूसंदृष्टेसर्पशापातसुतक्षयः ॥ १५ ॥

अर्थ—लग्नेश राहु के साथ हो और पञ्चमेश मंगल से युक्त हो और कारक ग्रह राहू से वीक्षित हो तो सर्पअर्थात् नागों के शाप से पुत्र का क्षय कहना चाहिये।

अथ शर्पशापस्यशान्तिः

तद्दोषपरिहारार्थं नागपूजां समारभेत्। स्वगृह्योक्त-बिधानेन प्रतिष्ठां कारयेत्सुधी ॥१६॥ नागमूर्तिं सुबर्णेन कृत्वा पूजां समाचरेत्। गोभूतिलहिरण्यादिदद्याद्वित्तानु-सारतः ॥१७॥ एवं कृते तु नागेन्द्रप्रसादाद्वर्द्धतेकुलम्।

अर्थ—जिसकी कुण्डली में शर्पशाप का योग हो वह अपने मत के अनुसार नागों का पूजन और स्थापना करे। तथा सुबर्ण की नाग मूर्ती बना कर उसका पूजन करे। फिर गौ, पृथ्वी, तिल और सुवर्ण यथा शक्त्यानुसार उसे नाग सहित दान करे। इस प्रकार करने से नागदेवों की प्रसन्नता से कुल की वृद्धि हो।

पितृशापकारकयोगाः

पुत्रस्थानगते भानौ नीचे मन्दांशके स्थिते ।
पार्श्वयोः क्रूरसम्बन्धे पितृशापात्सुतक्षयः ॥१८॥

अर्थ--पञ्चमस्थान में सूर्य नीच का होकर शनि के नवांश में बैठा हो और दोनों ओर क्रूर ग्रहों से सम्बन्ध हो तो उस के पितृश्वरों के शाप से सन्तान का क्षय जानना चाहिये।

पुत्रस्थानाधिपे भानौ त्रिकोणे पापसस्थिते ।
क्रूरांतरे पापदृष्टे पितृशापात्सुतक्षयः ॥१९॥

अर्थ—पञ्चमस्थान का सूर्य मालिक हो और नवम पञ्चम स्थान में पापग्रह बैठे हो तथा सूर्य क्रर ग्रहों से युक्त हो अथवा वीक्षित हो तो उसकी पितृशाप से सन्तान नष्ट होती है ।

भानुराशिस्थिते जीवे पुत्रेशे भानुसंयुते ।
पुत्रलग्ने पापयुते पितृशापात्सुतक्षयः ॥२०॥

अर्थ--सूर्यराशे अर्थात् सिंह राशि पर बृहस्पति होय और पञ्चमेशसूर्य से युक्त हो तथा पञ्चम घर को पापी ग्रह देखता हो तो पितृशाप से सन्तान का क्षय होना चाहिये।

लग्नेशे दुर्बले पुत्रे पुत्रेशे भानुसंयुते ।
पुत्रलग्ने पापयुते पितृशापात्सुतक्षयः ॥२१॥

अर्थ—लग्नेस दुर्बल होकर पुत्र की राशि में पड़ा हो और पुत्रस्थान का मालिक सूर्य के साथ बैठा हो तथा पञ्चम स्थान में पापी ग्रह पड़े होय तो पितृशाप से सन्तान का क्षय होता है।

पितृस्थानाधिपे पुत्रे पुत्रेशे वा तथा स्थिते ।
लग्ने पुत्रे पापयुते पितृशापात्सुतक्षयः ॥२२॥

अर्थ--पितृस्थान का अधिपति पुत्र की राशि में और पुत्रेश

पितृस्थानाधिप की राशि में हो तथा लग्न और पञ्चम भाव का स्वामी पापग्रह युक्त हो तो पितृशाप से सन्तान नष्ट होती है।

पुत्रस्थानाधिपे भानौ पुत्रेशेन समन्विते।
लग्ने पुत्रे पितृस्थाने पापात्संतति नाशनम् ॥२३॥

अर्थ—पुत्रस्थानाधिप सूर्य होय उसके साथ पुत्र घर का मालिक बैठा हो और लग्नेश पुत्रस्थान में बैठा हो तो पाप करने से सन्तान की हानि होना चाहिये।

पितृस्थानाधिपे दुःस्थे कारके पापराशिगे।
पुत्रेलग्नेश्वरेपापे पितृशापात्सुतक्षयः ॥२४॥

अर्थ—पिता के स्थान का अर्थात् दशमेश छठे घर की राशि में स्थित हो और कारक ग्रह पापकी राशि में बैठा हो। और पुत्र लग्न और जन्म-लग्न के अधिपति पापी हों या पाप ग्रह की राशि में बैठे हों, तो पितृ-शाप से सन्तान का नष्ट कहना चाहिये।

लग्नपंचमभावस्थाः भानुभौमशनैश्चराः॥
रंध्र रिष्फे राहुजीवौ पितृशापात्सुतक्षयः॥ २५ ॥

अर्थ—लग्न और पंचम इन भावों में यदि सूर्य मंगल और शनैश्चर पड़े हों, तथा अष्टम और बारहवें घर में राहू बृहस्पति बैठे हों तो पितृ-शाप से सन्तति का नाश होना चाहिये।

व्ययेशे लग्नभावस्थे रंध्रेशे पुत्रराशिगे॥
पितृस्थानाधिपे रंध्रे पितृशापांत्सुतक्षयः॥ २६ ॥

अर्थ—व्ययेश अर्थात् बारहवें घर का मालिक लग्न में बैठा हो और अष्टम भाव का अधिपति पंचम में पड़ा हो तथा दशमेंश अष्टम घरमें पड़ा हो तो पितशाप से सन्तान नष्ट होता है।

लग्नादष्टमगे भानौ पुत्रस्थे भानुनन्दने ॥
पुत्रेशे राहुसंयुक्ते लग्ने पापात्सुतक्षयः ॥ २७ ॥

अर्थ—लग्न से आठवें घर में सूर्य और पञ्चम घर में शनैश्चर पड़ा हो तथा पंचमेंश राहू के संग बैठा हो और लग्न में पापीग्रह हो तो पुत्र का क्षय होय।

रोगेशे पुत्रभावस्थे पितृस्थानाधिपे तथा।
कारके राहुसंयुक्ते पितृशापात्सुतक्षयः ॥ २८ ॥

अर्थ—रोगेश (षष्ठेश) पंचम घरमें तथा दशमेंश पंचम घर में और कारकग्रह राहु युक्त हो तो पितृशाप से पुत्रका क्षय होता है।

पितृशापकीशांति

तद्दोषपरिहारार्थं गयाश्राद्धं च कारयेत्। ब्राह्मणान्भोजयेदत्र अयुतं वा सहस्रकम् ॥२९॥ कन्यादानं ततः कृत्वा गांच दद्यात् सहस्रकम्। एवं कृते पितृशापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥३०॥ वर्द्धते च कुलं तस्य पुत्र पौत्रादिभिस्तदा। दृष्टियोग पदैः सर्वं फलं ब्रूयाद्विचक्षः ॥ ३१ ॥

अर्थ—उन पितृचरों के दोष दूर करने को यह प्राणी गया श्राद्ध करे (या सप्तपिंडी श्राद्ध करे) और दस हजार अथवा १ हजार ब्राह्मग भोजन करावे। फिर कन्यादान करके १ हजार गोदान करे,इस प्रकार करनेसे यह प्राणी पितशाप से निःसन्देह छूट जावे और उन पितश्वरोंके आशीर्वाद से इसके पुत्र पौत्रादिकों से कुल की वृद्धि होय। यह ऊपर जो फल कहा है वह ग्रहों के दृष्टिके बल से सम्पूर्ण फलों को कहना चाहिये।

मातृशापकारकयोगाः

पुत्रस्थानाधिपे चंद्रे नीचे वा पापमध्यगे ।
हिवुके पंचमें पापे मातृशापात्सुतक्षयः ॥ ३२॥

अर्थ--पञ्चमेश और चन्द्रमा ये नीच के हों अथवा पाप ग्रहों के मध्य में हों तथा पापग्रह चतुर्थ और पञ्चम भाव में पड़े हों, तो मातृ के शाप से सन्तान क्षय होती है।

लग्ने मन्दसमायोगे मातृस्थाने शुभे तरम् ।
नीचे पञ्चमगे चन्द्रे मातृशापात्सुतक्षयः ॥३३॥

भावार्थ--लग्न में शनि बैठा हो और चतुर्थ घर में पाप ग्रह हो तथा नीच का चन्द्रमा पञ्चम घर में बैठा हो, तो माता के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

पुत्रस्थानाधिपेन्दुस्थे लग्नेशे नीचराशिगे ।
चन्द्रे पापसमयोगे मातृशापात्सुत क्षयः ॥३४॥

भावार्थ--पुत्रस्थानेश चन्द्र की राशि में हो और लग्नेश नीच-राशि हो एवं चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो, तो माता शाप से सन्तान क्षय हो।

पुत्रस्थानाधिपेन्दुस्थे चन्द्रे पापांशसंयुते ।
लग्ने पुत्रे पापयुते मातृशापांत्सुतक्षयः ॥३५॥

भावार्थ--पंचमेश चन्द्रमा की राशि में हो चन्द्रमा पाप ग्रहों के नवांशक में पड़ा हो तथा लग्न में और पञ्चम घर में पाप ग्रह बैठे हों तो माता के शाप से सुत क्षय हो।

पुत्रस्थानाधिपेचन्द्रे मन्दराव्हारसंयुते ।
भाग्येवापुत्रराशौवा कारके पुत्रनाशनन् ॥३६॥

भावार्थ--पंचमेश और चन्द्र ये शनि भौम और राहु से युक्त हो नवम घर में और पंचम लग्न में अथवा पुत्र कारकांश में बैठे हो, तो पुत्र नष्ट योग समझना चाहिये।

मातृस्थानाधिपे भौमे शनिराहुसमन्विते।
भानुचन्द्रयुते पुत्रे लग्ने सन्तति नाशनम् ॥३७॥

भावार्थ--चतुर्थ स्थान का स्वामी मंगल होकर शनि, राहु युक्त हो और पंचमेश, सूर्य और चन्द्रमा से युक्त लग्न में पड़ा हो तो सन्तान का नाश होता है।

लग्नात्मजेशौ शत्रुस्थौ रंध्रे मात्राधिपे स्थिते।
पितृस्थानेश लग्नस्थे मातृशापात्सुतक्षयः ॥३८॥

भावार्थ—लग्नेश और पञ्चमेश छठे घर में बैठा हो और अष्टमेश चतुर्थेश करके युक्त हो और दशमेश लग्न में बैठे हो तो उसे उसकी माता के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

षष्ठाष्टमेशौ लग्नस्थौ व्यये मात्राधिपेस्थिते।
चन्द्रे जीवे पापयुते मातृशापात्सुतक्षयः ॥३९॥

भावार्थ—षष्टेश और अष्टमेश लग्न में स्थित हो और बारहवें घर में चतुर्थेश स्थित हो। चन्द्र और जीव में पाप ग्रहों से युक्त हो तो माता शाप से सन्तान नष्ट होती है।

पाप मध्यगते लग्ने क्षीणे चन्द्रे च सप्तमे।
मातृ पुत्रे राहुमंदो मातृशापात्सुतक्षयः ॥४०॥

भावार्थ--लग्न पाप ग्रहों के मध्य में हो और क्षीण चन्द्रमा सप्तम में बैठा हो चतुर्थेश और पंचमेश राहु और शनि से युक्त हो तो माता के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

नाशस्थानाधिपै पुत्रे पुत्रेशेनाशराशिगे।
चन्द्रे मातुपतौ दुःस्थे मातृशापात्सुतक्षयः ॥४१॥

भावार्थ—अष्टमेश पंचमे और पंचमेश अष्टम में और चन्द्र और चतुर्थेश छठे घर में स्थित हो तो माता शाप से सन्तान क्षय होती है।

चन्द्रक्षेत्रे तथा लग्ने कुजराहुसमन्विते।
चन्द्रमन्दौ पुत्र संस्थौ मातृशापात्सुतक्षयः ॥४२॥

भावार्थ—चन्द्रमा के स्थान में तथा लग्न में भौम राहु से युक्त हो तथा चन्द्र और शनि ये पंचम घर में बैठे हों तो माता के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

लग्ने पुत्रे रंध्रारिपौ कुज राहूरविः शनिः।
मातृलग्नाधिपौदुस्थे मातृशापात्सुतक्षयः ॥४३॥

भावार्थ—लग्न और पंचम और छठे घर इनमें भौम राहू, सूर्य और शनि बैठे हो तथा चतुर्थेश और लग्नेश छठे घर में बैठे हों तो माता शाप से सन्तान नष्ट होती है।

मृत्युस्थानगते जीवे कुजराहूसमन्विते।
पुत्र स्थाने मन्द चन्द्रौ मातृशापात्सुतक्षयः ॥४४॥
ग्रह योगेपदैः सर्वं फलं ब्रुयाद्विचक्षणः।
शुभे सौख्यं विनिर्दिष्टे मिश्रिते मिश्रितं फलम् ॥४५॥

भावार्थ—मृत्यु स्थान गुरु, मंगल, राहू से युक्त हो और पंचम घर में शनि और चन्द्रमा बैठे हों तो मातृ शाप से पुत्र नष्ट हो। यह ग्रह योग द्वारा सर्व फल कहना चाहिये। शुभ ग्रह देखते ही तो शुभ फल कहे और शुभाशुभ दोनों देखते हों तो मिश्रित फल कहना चाहिये।

मातृशाप की शान्ति

सेतुस्थानं प्रकुर्वीत गायत्रीलक्ष संख्यकम्। गृहदानं च

कर्त्तव्यं रौप्यपात्रे पयस्तथा ॥४६॥ ब्राह्मणान्भोजये त्तद्वदश्वत्थस्य प्रदक्षिणम्। कर्त्तव्य भक्ति युक्तेन अष्टविशं-तृसहस्रकम्॥४७॥ एवं कृते मनुष्याणां शापमोक्षो भविष्यति। सत्पुत्रं लभते तेन रूपशीलगुणान्वितम् ॥४८॥

भावार्थ—माता शाप के दूर करने के लिये नदी नाले का पुल बनावे और ब्राह्मणों से एक लाख गायत्री का जप करावे, २—गृह-दान करे तथा चाँदी के पात्र में दूध भरकर दान करें, ब्राह्मण भोजन करावे, पीपल की अट्ठाईस हजार प्रदक्षिणा करें। इस प्रकार करने से इस प्राणी का शाप दूर हो और उसे रूप शील और गुण युक्त सत्पुत्र पैदा होवेगी।

भाई के शाप से सन्तान नष्ट योग :—

अतः परं प्रवक्ष्यामि भ्रात्रादौ शापकारणम्।
पापयोगे न भावेन कारकस्य बलाबले ॥४९॥

भावार्थ—इसके बाद भ्रातादिकों के शाप कारण को कहते हैं। पापयोगों के भाव से तथा कारक ग्रह के बलाबल से यह फल है।

भ्रातृस्थानाधिपे पुत्रे कुजराहु समन्विते।
पुत्रलग्नेश्वरौ रंध्रे भ्रातृशापत्सुतक्षयः ॥५०॥

भावार्थ—तृतीये मंगल राहू से युक्त पंचम घर में बैठा हो तथा पंचम और लग्नेश अष्टम घर में पड़ा हो तो भाई के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

लग्ने सुते कुजे मन्दे भ्रातृपे भाग्यराशिगे।
कारके नाशराशिस्थे भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५१॥

भावार्थ—लग्न में पंचमेश भौम बैठे हों और तृतीयेश नवम घर में हों तथा पुत्र कारक ग्रह अष्टम राशि में बैठा होय तो भैया के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

भ्रातृस्थाने गुरौ नीचे मन्दः पञ्चमगो यदि।
पुत्रेशे रंध्रभावस्थे भ्रातृशापात्सुतक्षय: ॥५२॥

भावार्थ—तृतीय स्थान में गुरु नीच होकर वैठा हो और शनि पंचम घर में पड़ा हो तथा पंचमेश अष्टम भाव-स्थित हो तो भाई के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

मूर्तिस्थानाधिपे रिस्फे भौमः पञ्चमगो यदि।
पुत्रेशे रंध्रभावस्थे भ्रातृशापात्सुतक्षय: ॥५३॥

भावार्थ—लग्नेश बारहवें स्थान में वैठा हो और मंगल पंचम घर में हो एवं पंचमेश अष्टम स्थान में बैठा हो तो भ्राता के शाप सन्तान नष्ट होती है।

पापमध्यगते लग्ने सुतभे पापमध्यगे।
नाथाच्चकारकोदुःस्थे भ्रातृशापात्सुतक्षय: ॥५४॥

भावार्थ—लग्न पाप ग्रहों के बीच में हो और पंचमेश पाप ग्रहों के मध्य हो तथा कारकेश उच्च होकर छठे में पड़ा हो तो भाई के शाप से सन्तान नाश होती है।

कर्मेशेभ्रातृभावस्थे पाप युक्ते सुते शुभे।
पुत्रे च कुजसंयुक्ते भ्रातृशापात्सुतक्षय: ॥५५॥

भावार्थ—राज्येश तृतीय घर में पाप ग्रह से युक्त वैठा हो और पंचमेश शुभ स्थान में पड़ा हो तथा पंचम घर में मंगल वैठा हो तो भ्राता के शाप से सन्तान की हानि कहनी चाहिये।

पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे शनि राहुसमन्विते।
रिस्फे बिदारौ संस्थानान्भ्रातृशापात्सुतक्षय: ॥५६॥

भावार्थ--पंचम घर में और बुध के घर में शनि राहु बैठे हों और बारहवें घर में बुध तथा भौम पड़ा हो तो भ्राता के शाप से पुत्र नष्ट होता है।

लग्नेशे भातृराशिस्थे भ्रातृस्थानाधिपे सुते ।

लग्न भ्रातृ सुते पापे भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५७॥

भावार्थ—लग्नेश भ्राता कीराशि में स्थिर हो और भ्राता के राशि का स्वामी पंचम में स्थित हो और लग्नेश, भ्राताप्रधिप और पंचमेश पापी हों तो भ्राता के शाप से सुत नष्ट होता है।

बान्धवेनाशराशिस्थे पुत्रस्थे कारके तथा ।

राहुमन्दयुते दृष्टे भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५८॥

भावार्थ--तृतीयेश अष्टम राशि में बैठा हो और पुत्र घर में पुत्रकारक ग्रह हो और राहु और शनि से युक्त और देखे जाते हों तो भ्राता के शाप से पुत्र क्षय होता है।

नाशस्थानाधिपे पुत्रे भ्रातृनाथेन संयुते ।

रन्ध्रे चारार्कि संयुक्ते भ्रातृशापात्सुतक्षयः ॥५९॥

भावार्थ--अष्टमेश पंचम घर में और तृतियेश से युक्त हो और अष्टम घर में मंगल एवं शनि पड़ा हो तो भ्राता के शाप से सन्तान नष्ट होतीहै ।

भ्रातृ शाप की शान्ति

भ्रातृशापविमोक्षार्थं श्रवणं विष्णुकीर्त्तनम्। चन्द्रायणं चरेत्पश्चात् यमुनाकृष्ण सन्निधौ ॥६०॥ अश्वत्थस्थापनं कार्यं दशधेनु प्रदापयेत् । प्राजापत्यं चरेत्तत्र भूमिद्यत्फलान्वितः ॥६१॥ एवं यः कुरुते भक्त्या पुत्रवृद्धिश्च जायते। दीर्घायुर्जायते पुत्रः कुल वृद्धिजायते ॥६२॥

भावार्थ—भ्रातृ-शाप दूर करने के हेतु विष्णु-पुराण और विष्णु-सहस्र नाम को सुनना श्री विष्णु के निकट विष्णु का नाम जाप करना, फिर यमुना जी एवं श्री कृष्ण के समीप चांद्रायण व्रत करना, पीपल का लगाना, १० गोदान, प्राजापत्य व्रत, भूमि और फलों का दान करे, इस तरह करने से पुत्र वृद्धि होता है और वह पुत्र दीर्घायु वाला होता है एवं कुल की वृद्धि होता है।

मामा शापकारयोगाः

अतः परं प्रवक्ष्यामि शापं मातुलकस्य च।
येन पुत्रस्य नाशं स्यत् ग्रहदोषेण भामिनि ॥६३॥

भावार्थ—अब मामा का शाप जिन ग्रहों के दोष से होता है और सन्तान क्षय होती है। उसे हे पार्वती तू सुन।

पुत्रस्थाने बुधे नीचे कुजराहुसमन्विते।
लग्ने मन्दसमायोगे मातुलात्सुतनाशनम् ॥६४॥

भावार्थ—पुत्र स्थान यानी पञ्चम घर में नीच का होकर बुध पड़ा हो और राहु एवं मंगल के साथ हो और लग्न में शनि हो तो मामा के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

लग्ने पुत्रेश्वरोरंन्ध्रे बुधभौमसमन्विते।
मन्देमातुलशापत्वात्पुत्र सन्ततिनाशनम् ॥६५॥

भावार्थ—लग्न में पञ्चमेश और अष्टम भाव में बुध मंगल और शनि हो तो मामी के शाप से सन्तान नाश होती है।

सन्ततिनाश-योगाः

लुप्ते पुत्राधिपे लग्ने सप्तमे भानुनन्दने।
लग्नेशे बुध संयुक्ते तस्य सन्तति नाशनम् ॥६६॥

भावार्थ--पञ्चमेश अस्त होकर लग्न में बैठा हो और सातवें घर में शनि हो और लग्नेश बुध के साथ हो तो उसके सन्तान नष्ट होती है।

पापग्रहयुते लग्ने पुत्रेशे नीचराशिगे।
दारेशे पापसंयुक्ते बुधे सन्ततिनाशनम् ॥६७॥

भावार्थ—लग्न में पापग्रह पड़े हों और पञ्चमेश नीच राशि का हो तथा सप्तमेश पापग्रह और बुध के साथ हो तो सन्तान नाश होती है।

ज्ञानस्थानाधिपे लग्ने व्ययेशेन समन्विते।
शशिसौम्यकुजाः पुत्रे पुत्रसन्तति नाशनम् ॥६८॥

भावार्थ—पञ्चम स्थानाधिप लग्न में द्वादशेश के साथ हो और चन्द्र, बुध और मंगल ये पञ्चम भाव में पड़े हो, तो उसके पुत्र सन्तान नाश हो, परन्तु कन्या जीती है।

पुत्र लग्नाधिपौ युक्तावन्योऽन्यंचाथ वीक्षितौ।
पुत्र परस्परस्थे च पुत्रयोगा इमेस्मृताः ॥६९॥

भावार्थ—पञ्चमेश और लग्नेश ये आपस में एक दूसरे को देखते हो या एकत्र पड़े हों या पञ्चम भाव में बैठे हों अथवा पञ्चमेश पञ्चम में और लग्नेश लग्न में हो, तो ये चारो योग पुत्र देने वाले हैं।

शान्तिः

तद्दोषपरिहारार्थं विष्णोस्थापनकं स्मृतम्। वापीकूप-तडागादि बन्धनाच्छुतदर्शनम् ॥७०॥ पुत्रवृद्धि भवेत्तस्य सम्पपद्वृद्धिः प्रजायते। इदं योगं ग्रहेणैव फलंबूयाद्वि च क्षणः ॥७१॥

भावार्थ—ममा के शाप दूर करने और सन्तान नाश करने के लिये श्री विष्णु का मन्दिर बनाकर विष्णु मूर्ति स्थापना करे और बावड़ी, कूआँ तालाब इत्यादि बनावे तो सन्तान हो और उसके पुत्र वृद्धि एवं सम्पदा वृद्धि हो। यह फल ग्रहों के योगों से विद्वान् को बताना चाहिये।

ब्रह्मशाप का कारण

विद्यागर्वेण यामर्यो ब्राह्मणानवमन्यते।
तद्दोष ब्रह्मशापत्वात्सन्तते स्तस्य नाशनम् ॥७२॥

भावार्थ—जो क्षत्री वैश्य या शुद्र होकर विद्या पढ़के ब्राह्मणों से बाद करके तिरस्कार करे, उस दोष के प्रभाव से ब्रह्म-शाप से उसकी सन्तान नष्ट होती है।

गुरुक्षेत्रे यदाराहुः पुत्रे जीवारभानुजा।
धर्म स्थानातधिपे नाशे ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७३॥

भावार्थ—गुरू के घर में यदि राहु पड़ा हो और पञ्चम घर में गुरु मगल और शनि तथा नवमेश अष्टम घर में हो तो ब्रह्म शाप से सन्तान नष्ट होता है।

धर्मेशे पुत्र भावस्थे पुत्रेशे नाशराशिगे।
जीवारराहु मृत्युस्था ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७४॥

भावार्थ—नवमेश पुत्रघर में और पुत्रेश अष्टम घर में बैठा हो और जीव मंगल, राहु ये अष्टम में बैठे हों, तो ब्रह्मशाप से सन्तान नष्ट होता है।

धर्माधिपे नीचगते व्ययेशे पत्र राशिगे।
राहुयुक्तेक्षिते वापि ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७५॥

भावार्थ—नवमेश नीच का हो और द्वादशेश पञ्चम घर में बैठा हो और या राहु के साथ हो या बीक्षित देखा गया हो, तो ब्राह्मण के शाप से सन्तान का नाश होता है।

जीवे नीचगते राहुलंग्ने वा पुत्रराशिगे ।

पुत्रस्थानाधिपे दुःस्थे ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७६॥

भावार्थ—गुरु नीच राशि का हो, राहु लग्न में या पुत्रराशि में हो और पुत्राधिपं छठे घर में वैठा हो, तो ब्रह्मशाप से सन्तान नष्ट होती है।

पुत्रस्थानधिपे जीवेरन्ध्रे पाप समन्विते ।

पुत्राह्वर्किंचन्द्रार ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७७॥

भावार्थ—पञ्चमेश और गुरु ये अष्टम घर में पाप ग्रह के साथ हो तथा पञ्चम घर में राहू मंगल चन्द्रमा और शनि पड़े हों तो ब्रह्मशाप से सन्तान त्तय होता है।

मन्दांशे मन्दसंयुक्ते जीवे भौमसमन्विते ।

पुत्रेशे व्ययराशिस्थे ब्रह्मशापात्सुतक्षयः ॥७८॥

भावार्थ—शनि अपने ही नवांशक में गुरु और मंगल से युक्त हो और पञ्चमेश बारहवें स्थान में पड़े हो, तो ब्रह्मशाप से सन्तान त्तय होता है।

लग्ने गुरुयुते मन्दे भाग्ये राहुसमन्विते ।

व्यये गुरुसमायोगे ब्रह्मशापात्सूतत्तयः ॥७९॥

भावार्थ—लग्न में गुरु हो और नवम में राहु के साथ शनि हो ओर बारहवें घर में गुरु वैठे हों, तो ब्राह्मण के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

ब्रह्मशाप की शान्ति

तद्दोषपरिहारार्थं व्रतं चांद्रायणं चरेत् ।

ब्रह्म कूचंत्रयं कृत्वाधेनुं दद्यत्सदक्षिणाम् ॥८०॥

पंचरत्नानि देयानि सुवर्णेन समन्वितम् ।
अन्नदानं भोजनं चायुतं साहस्रकं चरेत् ॥८१॥
एवं कृते तु सत्पुत्रं लभते नात्रसंशयः ।
ब्रह्मशाप विशुद्धात्मा सपुमान् सुखमेधते ॥८२॥

भावार्थ—ब्राह्मण शाप के दोष दूर करने के लिए चांद्रायण व्रत करना चाहिये। ब्रह्मकूर्च तीन कर और दक्षिणा के साथ गोदान करना चाहिये। स्वर्ण के साथ पंचरत्न का दान करें। अन्न दान तथा दस हजार ब्राह्मण को भोजन करना चाहिये। इस तरह करने से सुपुत्र प्राप्त होता है और ब्रह्म शाप निवारण होता है। इस प्रकार से सुख भोगोगे।

पत्नी शाप कारक योगाः

दारेशे पुत्रभावस्थे दारेशस्यांशपे शनौ ।
पुत्रेशे नाशराशिस्थे पत्नी शापात्सुतक्षयः ॥८३॥

भावार्थ—सप्तमेश पंचम भाव में पड़ा हो और सप्तमेश के नवांशक में शनि बैठा हो एवं पञ्चमेश अष्टम घर में होय, तो दूसरी मृत पत्नी के शाप से सुत नष्ट होता है।

कलत्रेशे नाशसंस्थेरिष्फेके पुत्रराशिगे ।
कारके पाप संयुक्ते पत्नीशापात्सुतक्षयः ॥८४॥

भावार्थ—सप्तमेश अष्टम में और द्वादशेश पञ्चम घर में हो और पुत्रकारक ग्रह पापी ग्रहों से युक्त हो तो स्त्री के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

पुत्रस्थानगते शुक्रे कामपे रंध्रमाश्रिते ।
कारके पापसंयुक्ते पत्नीशापात्सुतक्षयः ॥८५॥

भावार्थ—शुक्र पञ्चम स्थान में हो और सप्तमेश अष्टम में पड़ा

हो और कारक ग्रह पाप ग्रहों के साथ हो, तो स्त्री के शाप से सुत क्षय होता है।

कुटुंबे पापसंवद्धे कामेशे नाश राशिगे।
पुत्रे पाप ग्रह युते पत्नीशापात्सुतक्षण: ॥८६॥

भावार्थ--चतुर्थ घर में पाप ग्रह हों और सप्तमेश अष्टम घर में वैठा हो पञ्चमेश पापग्रहों के सहित हो तो पत्नी शाप से सुत नष्ट होता है।

भाग्य स्थानगते शुक्रे दारेशे नाशराशिगे।
लग्ने पापग्रह युते पत्नी शापात्सुतक्षय: ॥८७॥

भावार्थ--नवम घर में शुक्र हो और सप्तमेंश अष्टम राशि में बैठा हो, लग्न में पाप ग्रह पड़े हो. तो पत्नी के शाप से सुत नष्ट होता है।

भाग्यस्थानाधिपे शुक्रे पुत्रेशे शत्रुराशिगे।
गुरुलग्नेशदारेशा: दु:स्थासंतति नाशनम् ॥८८॥

भावार्थ--नवम घरका अधिपति शुक्र हो और पञ्चमेश शत्रु की राशि में विराजमान हो तथा गुरु लग्नेश और सप्तमेश ग्रह (दोनों) छठे घर में बैठे हों तो पत्नी शाप से सन्तान नष्ट होता है।

पुत्रस्थाने भृगुक्षेत्रे राहुश्चन्द्र समन्विते।
व्यये लग्ने घने पापे पत्नीशापात्सुतक्षय: ॥८९॥

भावार्थ--पञ्चम घर में या शुक्र के क्षेत्र में चन्द्रमा के साथ राहु बैठा हो और बारहवें लग्न में और दूसरे पाप ग्रह पड़े हों तो पत्नी के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

सप्तमे मन्दशुक्रौचेद्रंध्रे ज्ये पुत्रभेरवौ।
लग्ने राहु समायोगे पत्नीशापात्सुतक्षय: ॥९०॥

भावार्थ—सप्तम घर में शनि और शुक्र बैठे हों, अष्टम में बृहस्पति और पञ्चम में सूर्य और लग्न में जिसके राहु बैठा हो तो उसकी सन्तान पत्नी शाप से नष्ट होता है।

धने कुजे व्यये जीवे पुत्रस्थे भानुनन्दने।
राहुयुक्ते क्षितेवापि पत्नीशापात्सुत क्षयम् ॥९१॥

भावार्थ—धन स्थान में मंगल, बारहवें स्थान में जीव पञ्चम भाव में राहु के साथ या राहु वीक्षित शनि हो, तो उसकी स्त्री के शाप से सन्तान क्षय होती है।

नाशस्थौ वित्तदारेशौपुत्रे लग्नेकुजेशनौ।
कारके पापसंयुक्ते पत्नीशापात्सुतक्षयः ॥९२॥

भावार्थ—द्वितीयेश और सप्तमेश यह दोनों अष्टम घर में हों, पञ्चम घर में मंगल और लग्न में शनि तथा कारक में पापग्रह पड़े हों तो उसे पत्नी के शाप से सन्तान क्षय होती है।

लग्न पंचम भाग्यस्थाराहु मंदारजाक्रमात्।
रंध्रस्थौ पुत्रदारे शौपत्न्याशापात्सुतक्षः ॥९३॥

भावार्थ—लग्न और पञ्चम भाव में यदि राहु, शनि और भौम हों और अष्टम में पञ्चमेश और सप्तमेश हो, तो पत्नी शाप से सन्तान नष्ट होती है।

पत्नी दोष से उद्धार

तस्यदोष प्रशांत्यर्थं दशकन्यां प्रदापयेत्।
लक्ष्मीनारायणं देवं सर्वाभरण भूषितम् ॥९४॥
मूर्तिदानं च कर्त्तव्यं दशधेनुं प्रदायेत्।
शय्यां सभूषणां चैव दंपत्यो संप्रदापयेत् ॥९५॥

एवं कृते मनुष्याणां वांच्छासिद्धिश्च जायते ।
पुत्रं संजायते देवि भाग्यवृद्धिश्च सर्वदा ॥९६॥

भावार्थ--पत्नी के दोष से उद्धार होने के लिये दशकन्या दान करना चाहिये और सभी आभूषणों से सुशोभित कर लक्ष्मी-नारायण की मूर्तिदान करना चाहिये और दस गोदान करना चहिये और स्त्री के साथ ब्राह्मण को अलंकार से सुशोभित शय्या का दानकरना चाहिये। इस तरह से मानव की इच्छा पूर्ण होती है और हे देवि ! उसे सुन्दर पुत्र हो तथा सदा भाग्योदय होता है।

प्रेत के शाप कारक योगाः

मंत्र शापान्मनुष्याणां पिशाचं वाध्यते सदा ।
कर्मलोपितृभ्यश्चशापांद्वंशविनाशनम् ॥९७॥

भावार्थ—यदि मन्त्र को विधिवत न जपे, तो उसको मन्त्र के शाप वाधा होती है और पितृश्वरों की श्राद्धादि कर्म के लोप करने से पितृश्वरों के शाप से वंश नष्ट होता है।

पुत्रस्थिते मंदसूर्ये क्षीणचंद्रस्तु सप्तमे।
लग्न व्यये राहुजीवौ प्रेतशापात्सुतक्षय ॥९८॥

भावार्थ—शनि और सूर्य पञ्चम घर में पड़े हों और क्षीण चन्द्रमा सप्तम घर में में बैठा हो और लग्न एवं बारहवें में राहु और जीव हो तो प्रेत वाधा से वंश नष्ट होता है।

पुत्रस्थानाधिपे मन्दे नाशस्थे लग्नगे कुजे ।
कारके नाशराशिस्थे प्रेतशापात्सुक्षयः ॥९९॥

भावार्थ—पुत्रस्थान का स्वामी और शनि अष्टम घर में बैठा हो और लग्न में मंगल पड़ा हो तथा कारक ग्रह अष्टम घर में स्थित हो, तो प्रेत के शाप से सन्तान नष्ट होती है।

लग्ने पापे व्यये भानुः सुते चारार्कि भौमजाः ।
पुत्रेशेरन्ध्रभावस्थे प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥१००॥

भावार्थ—लग्न में पापग्रह हो, बारहवें घर में शनि, सूर्य और मंगल हो तथा पञ्चमेश अष्टम घर में हो तो प्रेत के शाप से सन्तान का क्षय होता है।

लग्ने राहुसमायोगे पुत्रस्थे भानुनंदने ॥
कारके नाशराशिस्थे प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥१०१॥

अर्थ—लग्न में राहु हो और पञ्चम भाव में शनि हो तथा कारकग्रह अष्टम राशि में हो तो प्रेत के शाप से सन्तान नष्ट होता है।

लग्ने राहुश्व शुक्रेज्ये चंद्रमंदयुतेथवा ॥
लग्नेशे मृत्युराशिस्थे प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥१०२॥

अर्थ—लग्न में राहु, शुक्र, वृहस्पति अथवा चन्द्र, शनि से युक्त हों तथा लग्नेश अष्टम राशि में हो तो प्रेत के शाप से सन्तान का विनाश होता है।

लग्ने राहूसमायोगे पुत्रस्थे भानुनंदने ॥
कुजदृष्टे युते वापि प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥१०३॥

अर्थ—लग्न में राहु तथा पञ्चम भाव में शनि और उसको मंगल देखता हो अथवा शनि के साथ हो तो प्रेत के शाप से सन्तान विनाश होता है।

कारके नीचराशिस्थे पुत्रस्थानाधिपेस्थिरे ॥
नीचदृष्टे नीचयुते प्रेतशापात्सुतक्षयः ॥१०४॥

अर्थ—पुत्रकारक ग्रह नीच राशि का हो तथा पञ्चमेश स्थिर राशि का हो, उसको नीच ग्रह देखता हो या युक्त हो तो प्रेत शाप से सन्तान नष्ट होता है।

लग्ने मंदयुते राहुरंध्रं भानुसमन्विते ॥
व्यये भौम सभायोगे प्रेतशापात्सुतक्षय: ॥१०५॥

अर्थ--लग्न में शनि के साथ राहु हो तथा अष्टम भाव मंगल से युक्त हो, बारहवें स्थान में मंगल पड़ा हो तो प्रेत शाप से सुत का नाश होता है।

कामस्थानाधिपे दु:स्थे पुत्रे चंद्रसमन्विते ॥
मंदमांदियुते लग्ने प्रेतशापात्सुत य: ॥१०६॥

अर्थ—सप्तमेश अष्टम भाव में पड़ा हो और पञ्चमेश चन्द्रमा के साथ लग्न में बैठा हो तो प्रेत शाप से सन्तान क्षय होता है।

बाधास्थानाधिपे पुत्रे शनिशुक्र समन्विते ॥
कारके नाशराशिस्थे प्रेतशापात्सुतक्षय: १०७॥

अर्थ--अष्टमेश पञ्चम में शनि और शुक्र के साथ बैठा हो एवं पुत्रकारक ग्रह अष्टम में हो तो प्रेत के शाप से सन्तान का विनाश होता है।

प्रेतदोष शान्ति

तद्दोषस्य प्रशांत्यर्थं विष्णुश्राद्धंच कारयेत् ॥
रुद्रस्नानं प्रकुर्वीत व्रतमूर्ति तु दापयेत् ॥१०८॥
धेनुं रजतपात्रं च नीलचैलं प्रदापयेत् ॥
एतत्कर्म कृते तत्र शापमोक्षं प्रजायते ॥१०९॥
पुत्रप्राप्तिर्भवेत्तेन विप्रेभ्यो दक्षिणां दिशेत् ॥

अर्थ--प्रेत दोष शान्त्यर्थ विष्णु श्राद्ध करना चाहिये। रुद्राभिषेक करना चाहिये। प्रदोष आदि का व्रत करना चाहिये और विष्णु तथा शिव की मूर्ति का दान करना चाहिये। गोदान, चाँदी

का पत्र, नीलावस्त्र, इनका दानकर ब्राह्मणको दक्षिणा देना चाहिये, इन कर्मों के करने से प्रेत शाप की शान्ति होती है और प्राणी को पुत्र की प्राप्ति होती हैं।

बहुपुत्र योगाः

पुत्रे राहूरविः सौम्याकारके शुभसंयुते ॥
शुभेषु वीक्षिते वापि बहुपुत्र समादिशेत् ११०॥

अर्थ—पञ्चम घर में राहु सूर्य और सौम्य ग्रह हों और पुत्र-कारक ग्रह शुभ के साथ हों या शुभ ग्रह वीक्षिप्त हो तो उसे बहुत से पुत्र हो।

पुत्रेशे शुभराशिस्थे शुभदृष्टि समन्विते ॥
कारके केन्द्रभावस्थे बहुपुत्रं समादिशेत् ॥१११॥

अर्थ—पंचमेश शुभ राशि में बैठा हो और शुभग्रह वीक्षित (अस्त) हो तथा कारक ग्रह केन्द्र भाव में पड़ा हो तो बहुत से पुत्र होते हैं।

लग्नेशे पुत्रराशिस्थे पुत्रे लग्नसमाश्रिते ।
केन्द्रत्रिकोणगे जीवे बहुपुत्रयुतो नरः ॥११२॥

अर्थ—लग्नेश पंचमेश की राशि में बैठा हो और पंचमेश लग्न में विराजमान हो और गुरु केन्द्र और त्रिकोण में बैठा हो तो उसके बहुत से पुत्र होते हैं।

पुत्रस्थानगते राहौ मन्दांशक बिवर्जिते ।
बहुँपुत्रौ नरोविद्यान्च्छुभग्रह निरीक्षिते ॥११३॥

अर्थ—पंचम घर में राहु बैठा हो किन्तु शनि के नवांश में न बैठा हो और शुभ ग्रह के साथ निरीक्षित होने से बहु पुत्र होता है ।

पुत्रस्थानाधिपे स्वेच्चे लग्नेशे शुभ संयुते ।
कारके शुभसंयुक्ते बहुपुत्रयुतो नरः ॥११४॥

अर्थ—पंचमेश अपने उच्च में पड़ा हो और लग्नेश शुभग्रह के साथ हो तथा कारक ग्रह भी शुभ ग्रह से युक्त हो तो उस प्राणी के बहुत संतान कहनी चाहिये।

पुत्रस्थाने स्तदीशो वा गुरौ वा शुभवीक्षिते ।
शुभेन सहितो वापि बहुपुत्रयुतो नरः ॥११५॥

अर्थ—पंचम घर में पंचमेश या गुरु पड़ा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों अथवा शुभ ग्रह से युक्त हो तो वह मनुष्य बहुत सन्तान वाला होता है।

परिपूर्णंबले जीवै लग्नेशे पुत्रराशिगे ।
पुत्रेशे बलसंयुक्ते पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥११६॥

अर्थ—परिपूर्णबलि गुरु हो और लग्नेश पंचमेश की राशि में बैठा हो एवं पंचमेश बलिष्ट हो तो उसके बहुत से सन्तान कहना चाहिये ।

वर्गोत्तमांशगे जीवे लग्नेशस्थांशपे शुभे ।
पुत्रेशेनयुते दृष्टे पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥११७॥

अर्थ—गुरु अपने वर्गोत्तम के नवांश हो और लग्नेश शुभ ग्रह के नवांश में हो तथा वह लग्नेश पंचमेश के साथ हो या वीक्षित हो तो उसे पुत्र की प्राप्ति निःसन्देह होती हैं।

वित्तस्थे पुत्रभावेशेपरिपूर्णबलान्विते ।
वैंशेषिकांशके जीवे पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥११८॥

अर्थ-परिपूर्णबलि पञ्चमेश द्वितीय स्थान में बैठा हो बैशेषिक

ग्रह के नवांश में गुरु पड़ा हो तो निःसन्देह पुत्र की प्राप्ति होती है।

लग्नात्पुत्राधिपः स्वोच्चे अन्योन्यात्वाजिवीक्षिते ।
परस्परस्थानगते पुत्रगोइमे स्मृता ॥११९॥

अर्थ— लग्न में पञ्चमेश उच्च का हो तथा लग्नेश और पञ्चमेश एक दूसरे को देखते हों और लग्नेश पञ्चम में और पञ्चमेश लग्न में हो तो ये तीनो योग पुत्र प्राप्ति कराता है।

पुत्रस्थानाधिपस्थांशराशीशे शुभसंयुते ।
शुभेन वीक्षिते वापि पुत्र प्राप्ति कराइमे ॥१२०॥

अर्थ--पुत्र स्थानाधिप के राशि का नवमांश के शुभ ग्रहों से युक्त हो अथवा वीक्षित हो तो ये पुत्र प्राप्ति योग होता है।

लग्नपुत्राधिपौ केन्द्रे शुभग्रह समन्विते ॥
कुटुंवेशे बलाढयो तु पुत्रप्राप्ति कराइये ॥१२१॥

अर्थ—लग्नेश और पञ्चमेश ये केन्द्र शुभ ग्रह के साथ हो तथा कुटुम्बमेश बलि हो तो ये पुत्र प्राप्ति कर्त्ता समझना चाहिये।

लग्नेशे दारभावस्थे दारेशे लग्नमाश्रिते ॥
द्वितीयेशे विलग्नस्थे पुत्रप्राप्ति कराइमें ॥१२२॥

अर्थ—लग्नेश सप्तम भाव में वैठे हों और सप्तमेश लग्नेश में पड़ा हो तथा द्वितीयेश लग्नेश में पड़ा हो तो ये योग पुत्र प्राप्ति कर्त्ता होता हैं।

दारेशेन च संयुक्ते नवांशभवनाधिपे ॥
पुत्रलग्नविलग्नेशे पुत्रप्राप्ति कराइमे ॥१२३॥

अर्थ—पञ्चमेश और लग्नेश तथा इनके नवांशक भवन का अधिपति सप्तमेश करके संयुक्त हो तो ये पुत्रप्राप्ति कर्त्ता जानना चाहिये।

अनपत्यत्वयोगाः

पुत्रवित्तकलत्रेशा संयुक्तानव भागयाः ॥
पापांशकाः पापयुताः त्वनपत्यत्व मादिशेत् ॥१२४॥

अर्थः—पंचमेश धनेश, सप्तमेश ये नवांश के साथ बैठे हों तथा पापांशक पापग्रहों करके युक्त हों तो उस प्राणी को सन्तान हीन कहना चाहिये।

गुरुर्लग्नेश दारेश पुत्रस्थानाधिपेषु च ॥
सर्वेषु बलहीनेषु वक्तव्यात्वनपत्यता ॥१२५॥

अर्थ—गुरु लग्नेश सप्तमेश और पञ्चमेश इन सबके निर्बली होने से उस प्राणी को सन्तान हीन कहते हैं।

व्ययेश संयुतांध्रेशो मृत्युराशिस्थिते यदि ॥
पुत्रेशे क्रूरदृयांशे त्वनपत्यत्वमानिशेत् ॥१२६॥

अर्थ—द्वादशेश अष्टमेश करके युक्त अष्टम घर में बैठा हो, और पञ्चमेश क्रूर ग्रहों से वीक्षित हो तो उसको सन्तान का धनि कहा जाता है।

लग्ने पुत्रेश्वरे दुस्थे कारके नीचराशिगे ॥
अनपत्य ग्रहे पुत्रे अनपत्यत्वमादिशेत् ॥१२७॥

अर्थ—लग्नेश और पञ्चमेश ये छठे में पड़े हों और कारक ग्रह नीच राशि का हो तथा सन्तान नाशक ग्रह के घर में पञ्चम में पड़ा हो उसके अनपत्यत्व कहा जाता है।

क्रूरषष्टांशके जीवे पुत्रस्थे नाशराशिगे ॥
पुत्रेशे नाशराशिस्थे अनपत्यत्वमादिशेत् ॥१२८॥

अर्थ--जीव क्रूर ग्रह के या छठे स्थानाधिप के नवांश में हो और पञ्चमेश की राशि में अष्टम राशि का स्वामी हो तथा पंचमेश अष्टम राशि में बैठा हो तो सन्तान हीन होता है।

सुतपतिरस्तंगतो वा पापयुतः पापवीक्षितो वापि ॥
संतति बाधां कुरुते केन्द्रे पापान्विते चन्द्रे ॥१२९॥

अर्थ--यदि पंचम घर का मालिक अस्त हो गया, वा पापी ग्रहों के साथ बैठा हो अथवा पापी ग्रह उस सन्तानाधिप को देखते हो तो उस प्राणी को सन्तान की वाधा जानना चाहिये। अथवा चन्द्रमा केन्द्र में पाप ग्रहों से युक्त बैठा हो तो भी उसको सन्तान की बाधा कहनी चाहिये। इस श्लोक में चार योग कहे गये हैं।

सन्तानाधिपते पचरिष्फषष्टस्थिते खले।
पुत्र भावो भवेत्तस्य जातोपि भ्रियते शिशुः ॥१३०॥

अर्थ--पञ्चमेश से पाँचवें में बारहवें और छठे स्थान में यदि पापग्रह पड़े हों तो उसके पुत्र नहीं होते। और यदि होते हैं भी तो जीते नहीं हैं।

अथ तत्कालपुत्रकारकयोगः

लग्नाधिपे कुजस्वोच्चे रन्ध्रे मन्दचरेरवौ।
शुभ दृष्टि समायोगे चिरात्पुत्र मुपैति सः ॥१३१॥

अर्थ—लग्नेश, मंगल ये दोनों उच्च के हों, और शनि सूर्य अष्टम में तो तथा इन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो तत्काल पुत्र की प्राप्ति कहा जाता है।

लग्ने मन्दगुरौ रन्ध्रे व्यये भौमसमन्विते ।
शुभ दृष्टः स्वतुंगे वा चिरापुत्रमुपैति सः ॥१३२॥

अर्थ—लग्न से शनि, अष्टम में गुरु और वारहवें घर में मंगल हो ये शुभ ग्रहों कर बीक्षित हों अथवा उच्च के हो तत्काल पुत्र कीं प्राप्ति कहनी चाहिये।

पुत्रस्थामन्द जीव ज्ञालग्ने पुत्रांधिपे शुभे ।
पुत्रेशे शुभराशिस्थेचिरात्पुत्र मुपैतिसः ॥१३३॥

अर्थ—पञ्चम घर में शनि गुरु और वुध हो तथा लग्न में पुत्राधिप शुभग्रह करके युक्त हो अथवा पञ्चमेश शुभ राशि का हो तो तत्काल पुत्र की प्राप्ति होती है।

सुतेराव्हर्कशुक्रेज्याशुभर्शे शुभर्क्षे शुभवीक्षिते ।
पुत्रेशेशुभराशिस्थेचिरात्पुत्र मुपैति सः ॥१३४॥

अर्थ—पञ्चम भाव में राहु सूर्य और गुरु बैठा हो अथवा ये शुभ ग्रह के स्थान में पड़े हों और शुभ ग्रह देखते हों तथा पञ्चमेश शुभ राशि में बैठा हो तो उसके बहुत जल्दी सन्तान होवे ऐसा कहना चाहिये।

लग्ने सौम्यधने पापे तृतीये पापखेचराः ।
शुभेशे शुभ राशिस्थे चिरात्पुत्र मुपैति सः ॥१३५॥

अर्थ—लग्न में शुभग्रह और धन भाव में पापग्रह तथा

तीसरे घर में भी पापग्रह हो तथा शुभग्रह राशि में पड़ा हो तो तत्काल पुत्र की प्राप्ति होती है ।

दत्तकसुतयोगाः

पुत्रस्थाने कुजे मन्दे बुधक्षेत्रे बिलग्नपे ॥
बुधदृष्टे युते वापि तदा दत्त सुतादयः ॥१३६॥

अर्थ--पञ्चम में मंगल शनि और बुध घर में लग्नेश हो, वह बुध से युक्त हो अथवा दृष्ट हो तो उस प्राणी को दत्तकसुत अर्थात् गोदलिया लड़का है ऐसा कहा जाता है ।

पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्द क्षेत्रेऽथवा भवेत् ।
मन्दमांदियुते दृष्टे तदा दत्तसुतादयः ॥१३७॥

अर्थ--पञ्चम में वा बुध के क्षेत्र में अथवा शनि के क्षेत्र में शनि बैठा हो अथवा अन्य दुष्ट ग्रह पड़े हों अथवा उनको देखते हो तो उसको गोदलिये लड़का कहना चहिये ।

पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे बुधस्वंशेक्षितेपि वा ।
लग्नाधिपे शनौ वापि दत्तपुत्रा भवंतिये ॥१३८॥

अर्थ-पञ्चम में बुध के क्षेत्र में अपने नवांशक में पड़ा हो या देखता हो अथवा लग्नेश और शनि पड़े वा उसको देखते हों तो उसके दत्तक (गोद का लड़का) हो ।

पुत्रेशे मन्दसंयुक्ते कुजसौम्यनिरीक्षिते ।
लग्नाधिपे बुधांशे वा दत्तपुत्रा भवन्ति हि ॥१३९॥

अर्थ-लग्नेश शनि से युक्त हो और मंगल, बुध करके वीक्षित हो अथवा लग्नेश बुध के नवांशक में हो तो उसे गोदलिये लड़के होते है ।

कामेशे लग्नभावस्थे पुत्रेशे शुभ संयुते ।
पुत्रे मन्द बुधे वापि दत्तपुत्राभवन्ति हि ॥१४०॥

अर्थ-सप्तमेश लग्नमें और पञ्चमेश शुभग्रह करके युक्त और पञ्चम भाव में शनि और बुध बैठे तो उसके गोदके लड़के कहे जाते हैं।

पुत्रेशे भाग्यभावस्थे भाग्येशे कर्मराशिगे ।
पुत्रेश बुधदृष्टे तु दत्तपुत्रस्तु सन्तति ॥१४१॥

अर्थ—पुत्रेश भाग्य भाव में बैठा हो और भाग्येश दशम राशि में पड़ा हो और उस पुत्रेश को बुध देखता हो तो उसके गोदलिये पुत्र जानना चाहिए।

लग्नाधिपे भृगुस्वोच्चे पुत्रे मन्दसमन्विते ।
कारके बल संयुक्ते दत्तपुत्रस्तु सन्तति ॥१४२॥

अर्थ—लग्नेश और शुक्र ये उच्च के और पञ्चमभाव शनि से युक्त हों तथा पुत्र कारकेश बलवान् हो तो उसके गोदलिये लड़का कहना चाहिये।

पुत्रस्थानाधिपे चन्द्रे लग्ने पुत्रे शनैश्चरे ।
परिपूर्ण बलेजीवे दत्तपुत्राः सुतावहाः ॥१४३॥

अर्थ—पुत्र स्थान का अधिप चन्द्र हो, लग्न में पञ्चमेश शनि और परिपूर्ण बली राहू बैठा हो तो दत्तकपुत्रक से पुत्रवान् कहना चाहिये।

पुत्राधिपे रवौ लग्नेपुत्रस्थे शनिसोमजौ।
पुत्राधिपयुते लग्ने दत्तपुत्रात्सुतं भवेत् ॥१४४॥

अर्थ—पञ्चमेश और सूर्य ये लग्न में बैठा हो और पञ्चम घर में शनि और बुध हो तथा लग्न पुत्राधिप से युक्त हो तो दत्तक [गोद के] पुत्र से पुत्रवान् कहना चाहिये।

लग्नाधिपे बुधे पुत्रे कुजदृष्टि समन्विते ।
कारके लाभराशिस्थे दत्तपुत्रात्सुतं भवेत् ॥१४५॥

अर्थ—लग्नेश और बुध ये पञ्चम में हो तथा इनको मगल देखता हो और कारक ग्रह लाभराशि [ग्यारहवें] बैठा होतो दत्तक पुत्र से पुत्रवान् कहना चाहिये।

लग्नाधिपे गुरौ पुत्रे शनिदृष्टि समन्विते ।
पुत्रेसे भौमराशिस्थे दत्तपुत्रात्सुतावहः ॥१४६॥

अर्थ--लग्नेश और गुरु पञ्चम में बैठे हों और शनैश्चर इनको देखता हो तथा पञ्चमेश मगल को राशि पर स्थित हो तो दत्तक पुत्र से अर्थात् गोद के लड़के से पुत्रवान् कहलाता है।

मन्दांशे पुत्रराशीशः स्वरांशौ गुरुभार्गवौ ।
पूर्वंदत्त सुतप्राप्तिः परं नार्याः पुनः सुतः ॥१४७॥

पुत्र स्थान का स्वामी शनि के नवांश में हो और गुरु शुक्र अपनी राशि में हो तो प्रथम दत्तपुत्र की प्राप्ति होती है बाद स्त्री से पुनः पुत्र होता है।

सुतेसितांशे च सितेन दृष्टे बहून्यपत्यानि विधोरपीदम्। दासी भावान्यात्मज भावनाथे यावन्मितेंऽशे शिशुसंमितिःस्यात्।१४८।

यदि पञ्चम भाव में शुक्र का नवांश हो और शुक्र से दृष्ट हो तो दासी या रखेल से उत्पन्न बहुत सन्तान होतीं है। और पंचम भाव में चन्द्रमा का नवांश हो और चन्द्रमा से दृष्ट हो तो भी दासी से या रखेल (सुरैतिन) से उत्पन्न बहुत सन्तान होती है। पंचम भाव के स्वामी के नवांश संख्या के तुल्य सन्तान की संख्या होती है।

इति श्रीशिव संहितायाम् सन्तानः खण्डम् समाप्तम् ॥ शुभम्भूयात्
॥ सत्य सत्यम् सुखम् शिवम् ॥

॥ श्री गणेशायनमः ॥

अथ शिवसंहिता (कर्म विपाक खण्ड)

१. अश्विनीनक्षत्र चरण १–२–३–४

लोकमत्याचू नृसिंह शर्मायं पूर्व जन्मनि,
मध्यदेशोद्भवः श्रीमान् दुःखी ब्राह्मणहायतः । १ ।
प्राग्भूतेयं चेतवर्मा गुणवत्याखिया सह,
अयोध्यानिकटेजातः दुःखी मातुल हायतः । २ ।
वैश्यवीर्य्यश्चोलवर्मा प्रभावत्यान्यजन्मनि,
नारायणपुरे जातः ब्रह्मकोपाच्च दुःखितः । ३ ।
नन्दने लक्ष्मणः शूद्रोकल्याण्यास्तेयकृच्चयः,
प्राग्भवेनरकान् भुक्त्वाभध्यदेशेयमागतः । ४ ।

२. भरणी नक्षत्र चरण १–२–३–४

काकुस्थनगरे रम्ये द्विजो लीलाधरः पुरा,
रुक्मिण्यापुन राजातः ब्रह्मवृत्यऽपहारकः । ५ ।
जानकी नगरेजातः लून शर्माचयः पुरा,
पातिव्रत्यात्स्त्रियाः सोयं ब्रह्मदोपा दिहागतः । ६ ।
लेक्खावैश्यः शिवपुरेवाभाक्ष्या गुडवृत्तिमान्,
यद्धारेणमृतोनड्वन् सोऽस्मिन् जन्मनिचागतः । ७ ।
लीलयालोकशर्मायं वधिकःप्राग्भवेऽभवत्,
सर्पान्मृत्युभयंनीतः नरदेहं पुनर्गतः । ८ ।

३–कृत्तिका नक्षत्र चरण १–२–३–४

अहिवर्णो भवेभूते गुडग्रामेऽभवत्पुरा,
कलयाराजवंशीयोमृगीघ्नः पुनरागतः । ९ ।

कान्या कुब्ज इद्रंशर्मा रुद्र मत्यास्त्रियापुरा,
मृतकस्य महादानं गृहीत्वा पुनरागतः ।१०।
उद्योतः सूर्यनगरेद्विजोगिरिजयायुतः,
तैलकारकृतंदानं गृहीत्वाऽत्रा गतः पुनः ।११।
माहिष्मत्यांकान्यकुब्ज एलाधारी द्विजोऽभवत्,
दानव्यासोऽद्यसंजातः वैश्यस्य धनहारकः ।१२।

४–रोहिणी नक्षत्र चरण १–२–३–४

गंगायमुनयोर्मध्ये जातोऽयं प्राक्द्विजोऽधमः.
ओरीनाममहाचौरः तत्फलाभासवानिह ।१३।
वैमानिकपुरेजातः वासुदेवोद्विजोत्तमः,
जारवत्यास्त्रियानाम्न्या लीलावत्या समागतः ।१४।
विष्णुदासस्तुयंनामशंकरस्यपुरेपुरा,
प्राग्भवात्सइहाजातः सौन्दरी साधुभर्त्सनात् ।१५।
अंतर्वेदेबुद्धिशर्मा पौरोहित्यं चकारयः,
प्रतिग्रहादिहाजातः नरकादद्य जन्मनि ।१६।

५–मृगशिरा नक्षत्र चरण १–२–३–४

मध्यदेशे शुभ्रपुरे सुशीलासंयुतो गृही,
वेदशर्मेतिविख्यातः लोहकारांश हारकः ।१७।
अधमाचप्रियायस्यजाताप्राग्बोधशर्मणः,
नदनस्य पुरात्सोयमना चारादिहागतः ।१८।
कुलालष्कामचंदाखयो पुरीकापुरजः पुरा,
देवकीति प्रियायस्य सूर्प्पकारान्सुहृत्पुनः ।१९।
भूतेजन्मनियोजातः केशवस्यपुरे द्विज,
किशोराख्योभवेत्सोयं लघुभ्रातृसुहृद्व्रतः ।२०।

६–आर्द्रा नक्षत्र चरण १–२–३–४

रंगकारःकुबेराख्योमहाकाळ पुरेपुरा,
लीळायायोवसत्सोयं ब्राह्मणीगमनादिह ।२१।

यासीदासेति वणिज उज्जयिन्यां निवासतः,
स्वर्गभुक्त्वापुनर्जातः ब्राह्मण स्वर्णहारकः ।२२।
मांगल्य पुरवासाप्तउज्जयिन्यां फलोदयः,
तथापि विप्रोङ्कवालः चौर्य्याज्जातोऽद्य जन्मनि ।२३।
छागालः शूद्रजाजीय उज्जयिन्यामजायत,
प्राज्ञः सोद्यभवेजातः स्वर्णकारांश हारकः ।२४।

७--पुनर्वसु नक्षत्र चरण १–२–३--४

शूद्रःकेशव नामाख्योवल्लकः सुन्दरीयुतः,
वसन्वसंतनगरे स्वर्णस्ते यादिहागतः ।२५।
प्रभावत्या स्वर्णकारष्को दामोदर नामकः,
लक्ष्मणाख्येपुराजात आभीरी गमनात्कृशः ।२६।
हार्द दुरेतियन्नामनापितः ककशायुतः,
पासं शिवपुरे कृत्वाहत्वा वैश्यमिहागतः ।२७।
कैवर्तोहि मनोनाममत्ता युक्तश्चयः पुरा,
नंदनाख्यपुरेजातः सोयंमत्स्यविहिंसकः ।२८।

८–पुष्य नक्षत्र चरण १--२--३--४

प्राग्भवेवल्लवः शूद्रः कैकेय्या मध्यदेशजः,
हूहशाकेतुस्संजातःलोभाद्वैश्य प्रघातकः ।२९।
हस्तिनेशिल्पिकारे कोहेमदासेर्ति विश्रुतः,
भार्य्याभ्यां मानुषीं योनिजातः पिप्पलछेदनात् ।३०।
जवनेलोहकारैकोहोमकारेति विश्रुतः,
गांपंकमग्नांनगतः हत्ययां सोयमागतः ।३१।
यश्चित्रयासाककारी रामपुर्य्यांपुराऽभवत्,
डंवरस्सोयमायातःमार्जारीवधकारणात् ।३२।

९—श्लेषा नक्षत्र चरण १–२–३–४

गौर्य्ययाडिंडिभः भूतेमांडव्ये लौणकारकः,
पुरोहितार्थगोदानेब्राह्मकोयादिहागतः ।३३।

सोऽयंडुलंभगोपालःजातोऽलर्कं पुरेचयः ,
गवामरक्षणो नैवपृष्ठिघातादिहागतः ।३४।
डेलवेंद्रेतियोजातः मालाकारः पुराभवे ,
स्वर्णाहर्षाच्चवैश्यस्यचंद्रावत्यासआगतः ।३५।
कैवर्तोडोलकोनामलक्ष्मणाख्यपुरेपुरा ,
केशव्यास इहाजातः मत्स्यभुक् जीवहिंसकः ।३६।

१०—मघा नक्षत्र चरण १--२--३--४

निवसन्मंगलग्रामेवैश्योऽयं मंगलाभिधः ,
दानापहरणाद्दुःखंकोशलामरणात्सुखम् ।३७।
भूतेजन्म निमित्राखयः नंदिग्रामोद्भवोद्विजः ,
कर्कसाख्यास्त्रिया जातःमघवेश्यारतोयतः ।३८।
कुलालोमंथरग्रामेमूर्तिर्नाम्नावसत्पुरा ,
अद्यजन्मनिचायातःब्राह्मण्या कांतयासह ।३९।
विकांच्यांपालिकानाम्न्या स्त्रियाऽयमेकरंदनः ,
प्राग्भवेकृपयणोवैश्यःदेवतानाम पूजकः ।४०।

११—पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र चरण १--२--३--४

सौराष्ट्रेशोभनपुरेमोहनोनामवर्मजः ,
स्ववृषौकूपतितौश्रुत्वारात्रौ गतोनयः ।४१।
काष्टकारःटकारीतिकार्णाटे पूर्वजन्मनि ,
गोत्रकन्याऽभिगमनात्सोयमत्रागतःपुनः ।४२।
टीकावैष्णवदासोऽयंकायस्थःसिंहलेपरा ,
सूर्ययास्वर्णकारस्यकन्यकागमनादिह ।४३।
टूकमल्लेतिविप्रोऽयं शंकरस्यपुरेपुरा ,
कलत्रत्यागलंपापंभुक्त्वेदानीमिहागतः ।४४।

१२—उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र चरण १--२--३--४

टैकोवैश्यः कोशलायास्स्वत्न्या स्वर्गतिंगतः ,
विप्रस्वरोपभोगात्सःपनरत्र समागतः ।४५।

स्वर्णकारःपराजातःटोंडाख्यः पुरुषोत्तमे,
मालार्थैविप्रस्वर्णधृत्वाभुक्त्वागतः पुनः ।४६।
पट्टने तैल कारोयः परागी पूर्वजन्मनि,
जेष्ठस्त्री विषदानात्सइहाऽयातोऽति दुःखितः ।४७।
पीरुमल्लोगयावासो मद्यपःपूर्वजन्ममि,
सोऽयंवेश्याप्रसंगेनमनुजः पाप लक्षणः ।४८।

१३–हस्त नक्षत्र चरण १--२--३--४

प्राग्भवेभोकदेशीयः पूपाख्यस्स्वर्ण कारकः·
चांचल्यां पुनरायातः वैश्यः स्यर्णाऽपहारकः ।४६।
वंगेदेशेखङ्गनामानापितोवसति प्रिये,
ज्येष्टपत्रवधू भोगाल्लीलयासः समागतः ।५०।
कारुषकोसिकी ती!रेणालनामा भवेपुरा,
लोभग्रस्तोऽत्र संयातः नरकात्पुण्यवर्जितः ।५१।
ठाकेवलष्कमलयागजेन्द्रस्य पुरेचयः,
कायस्थः प्राग्भवे जातः ब्रह्मदोषादिहागतः ।५२।

१४–चित्रा नक्षत्र चरण १--२--३--४

प्रेमसिंहो गयायांयः चांचल्याप्रिययासह,
कन्यायास्त्व विवाहाच्च भुक्तेऽघंचाद्यजन्मनि ।५३।
मद्यवेश्या रतोविप्रः पोलाख्यः कालिकापुरे,
भुक्ताशुभांस्त्रियं पूर्वे भवेस्मिन्पुनरागतः ।५४।
रतिदासो वणिक् लक्ष्म्या सुधर्माऽख्येऽभवत्पुरा,
चांचलययाहृतंद्रव्यंभुक्तागोपस्यचागतः ।५५।
प्रतिष्ठानपुरेविप्रःभ्रष्टःपरमयागतः,
स्वैरिण्या पातकं भुक्त्वाऋषिशोयं समागतः ।५६।

१५–स्वाती नक्षत्र चरण १--२--३--४

रुद्रवर्मा कान्यकुब्जे प्रभावत्या पुराभवे,
विप्रस्त्री हरणात्पापंभुक्त्वापुनरिहागतः ।५७।

पुराविंध्य भवोविप्रः पापीपुत्र सतीरतः,
रेधनेश्वरयन्नामसोयमद्यभवेगतः ।५८।
वल्लवोयंकुरुक्षेत्रेरीहिताख्यो भवत्पुरा,
पुंश्चल्या सोयमायातः पुण्येननरतां पुनः ।५६।
पांडवानांपुरेपूर्वे भवेतारा धरेतियः,
शुद्रोजातः कुपुत्राभ्यांपुंश्वल्यारंडयागतः ।६०।

१६--विशाखा नक्षत्र चरण १--२--३--४

तिलवर्मेतियो नाम्नाकां पिल्यो लोभमूर्तिमान्,
अदत्वापत्नि पुत्राभ्यामन्नंसर्पहतोगतः ।६१।
तुलाधारी द्विजः कांच्यांशिवद्रोही पुराभवे,
भुक्त्वास नरकंघोरं पुनरत्र समागतः ।६२।
तेजवर्मा द्विजद्वेष्टा विदर्भेयः पुराभवे,
जातः सोऽद्यभवे भूयोद्विजानां वृत्तिहारकः ।६३।
मायायांतोवरो वर्माशीला ढ्योंहे महारकः,
भूते जन्मनि संभुज्यसुख मत्रागतः पुनः ।६४।

१७--अनुराधा नक्षत्र चरण १--२--३--४

कल्याण नगरेवैश्यःनान्हूनाम्नापुनराऽभवत्,
विशालाद्याचस्वैरिण्या पुनरालभतेजनुः ।६५।
मागधे काष्टकारीयः नीलकंठेति विश्रुतः,
यतेर्द्रव्यहरः पापात् पुनर्जन्मारिवहागतः ।६६।
ग्रामदाही सुफर्मायां सौराष्ट्रे नूतनोद्विजः,
जातः सोऽद्यभवेद्भूपः पापचिन्ह धरोवरः ।६७।
देव्यावंदीजनो नाम्नानेतासौराष्ट्र सम्भवः,
मार्जार्य्याः पंचपुत्राणां हननात् पुनरागतः ।६८।

१८-- ज्येष्ठा नक्षत्र चरण १--२--३--४

नोषेनाम्ना वेदपाठी महाराष्ट्रेऽभवत द्विजः,
नरतांपनरापातः भ्रातुरंशेन दूषितः ।६९।

पट्टने लौहकारैकोथाज्ञो गोवर्द्धनाभिधः,
स्त्री पुत्र त्यागान्नरकंभुक्त्वा पुनरिहागतः ।७०।
ताम्बूलकारः शूद्रोयं जीमूतोदेव नागरः,
पुत्रस्त्री हरणाद्दुःखं भुक्त्वापुनरिहागतः ।७१।
चतुर्भुजे पट्टकारौ विशालायुक्ष्मणौचयौ,
पत्नि प्रघातान्नरकं भुक्त्वापुनरिहागतौ ।७२।

१९--मूल नक्षत्र चरण १--२--३--४

योरामदासकायस्थो देविकाख्यस्त्रियाचयः,
अयोध्या नगरे जातोविप्रधान्यादनाद्गतः ।७३।
राघवस्य पुरेयोगीं शर्माजातो गुणज्ञया,
सएव पुनराऽऽयातः भ्रातुरंशेन दूषितः ।७४।
भावसेनो मनोहर्य्या वर्माऽयं मंगलेपुरा,
संभूतः पापजं भुक्त्वा पुनर्जात इहातुरः ।७५।
डिंडवे पुण्यमत्यायः भीमोलवण कारकः,
वृषभौ कूप पतितौ श्रुत्वारात्रौ गतोश्वसः ।७६।

२०--पूर्वाषाढ़ नक्षत्र चरण १--२--३-४

कोशलायां पुराजातो वसिष्ठस्याश्रमे द्विजः ।
भागिनेय वधू भोगद्भू धनेशोयमागतः ।७७।
धरणीधर वैश्योयं जातः शिवपुरेपुरा ।
ब्राह्मणस्य धनंभुक्त्वा सुंदर्य्या पुनरागतः ।७८।
गंधर्वस्य पुरेजातः फालीलोध्रो महाबलः ।
विप्रभूमि हरोऽज्ञानात्पुनरत्र समागतः ।७९।
अयोध्यायां पुराजातो मालाकारश्वढ़ाकलः ।
विप्रस्याऽर्ध धनं भुक्त्वासोऽयत्र समागतः ।८०।

२१-उत्तराषाढ नक्षत्र चरण १-२-३-४

रामपुर्य्यां पुराजातः श्वेततीर्थो द्विजोत्तमः ।
कनिष्ठं भ्रातरं हत्वा भेरीसोऽयं समागतः ।८१।

मंकेश्वरः पुरेभोजः म्लेच्छवाणी रतोद्विजः।
स्वपत्न्याभ्रातृ पुत्रस्य कारयित्त्वा वधगतः। ८२।
जवनेजय देवाख्यः शीलमत्याद्विजः पुराः।
भगिनी वध दोपात्सः इहाऽयातोऽति दुःखितः। ८३।
गुर्जरेजीवलो जातो वेदपाठी द्विजः पुरा।
म्लेच्छान्न भोजनात्पत्न्या मानुषे पुनरागतः। ८४।

२२-श्रवण नक्षत्र चरण १-२-३-४

मरुंत नगरे विप्रः खील गौतम विश्रुतः।
भुक्त्वामित्र धनंपूर्वे मालिन्या पुनरागतः। ८५।
गांधारेयवस्नेही द्विजोखुन्नी धरोवरः।
सास्मिन् द्वितीये संजातः भवेम्लेच्छान्नभोजनः। ८६।
गंगयाखेड शर्माख्यः द्विजः काश्मीरवासतः।
पुनर्नृतनुतां जातः भवेस्मिन्धर्म वर्जितः। ८७।
खोसिद्धलाल शर्मायं देव्या पुनरिहागतः।
यादवस्य पुराद्विप्रः भुक्त्वा चौर्यकृतं फलम्। ८८।

२३-धनिष्ठा नक्षत्र चरण १-२-३-४

गंगा पुर्य्यागयं दोऽयंजातः पंचनदेपुरा।
भागिनेय वधाद्विप्रः मानुषे पुनरागतः। ८९।
निर्महानंदशर्मायः प्राग्भवेऽयंवनेगतः।
स्वकर्म रहितस्सोऽस्मिन् जातस्सर्पहतः पुनः। ९०।
सौराष्ट्रे गुर्वरोवर्मा भुक्त्वापूर्वभवेसुखम्।
गर्भिणीं हरिणीं हत्वा पुनरत्रसमागतः। ९१।
गेलभद्रश्छीपकारो जातस्सिद्ध पुरेपुरा।
विग्रहेज्येष्ठ पुत्रस्य मित्रद्विज वधात्पुनः। ९२।

२४-शतभिषा नक्षत्र चरण १-२-३-४

मथुरायां पुराजातः गोपालः सइहागतः।
गवामरक्षणे नैव वृष निर्वीर्यके न च। ९३।

मध्यदेशे पुराजातः संमृगारिर्हि लुब्धकः।
मृगपक्षि वधात्सोऽयं मानुषे पुनरागतः। ९४।
धुरंधर पुरेजातः द्यूतवे श्यारतः पुरा।
ब्रह्मकर्म परिभ्रष्टस्सीतारामस्स आगतः। ९५।
हेमंतस्य पुरेजातस्तु कर्माखगो वणिक् पुरा।
ब्राह्मणस्य धनं हृत्वापार्वत्या पुनरागतः। ९६।

२५-पूर्व भाद्रपद नक्षत्र चरण १-२-३-४

सेवादासाख्य पतिनामाथुरेशाक कारिणा।
ब्राह्मणाय विषदत्वा राधिका पुनराऽऽगता। ९७।
काम्पिल्ले यः पुराजातस्सोमशर्मा सआगतः।
कंन्याधनं चोरयित्वा दौहित्रविप दोषभाक्। ९८।
गांधारेयः पुराजातः दयाशर्मा सआगतः।
धर्मकर्म विहीनश्च मद्यवेश्या प्रसंगकः। ९९।
बलभद्र पुरेजातः दीर्घशर्मात्र भूत्पुरा।
स्त्रीत्यागादग्निदाहाच्च पुनस्त्र समागतः। १००।

२६-उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र चरण १-२-३-४

उज्जयिन्यां दुर्गवर्मा पुंश्चल्यायः पुराभवत्।
सएव पुनराजातः कुत्राक्यत्रह्म हिंसकः। १०१।
प्रतिष्ठाने पराजातः कायस्थोर्थभ मैत्रकः।
वैश्य पत्नोहरः पापस्स एत्र पुनराऽऽगतः। १०२।
यः पुरामिश्रितेजातः झाऊदामोदरो नृपः।
वंश मत्याऽगतोव्याधः ब्राह्मणीगमनादिह। १०३।
अंगूरे यः पुराजातः वैश्योगोपिकया युतः।
ब्राह्मणास्यधनं भुक्त्वा व्यंडादासस्स आगतः। १०४।

२७—रेवती नक्षत्र चरण १, २, ३, ४,

देवदासोलुब्धकस्तुमागधेयोभवत्पुरा।
सोऽस्मिन्भवे पिसं जातकःष्ठी मृगविहिंसकः। १०५।

दोलाधरोद्विज·कश्चिज्जातोवैश्री पुरे पुरा।
वाणिज्यकर्मा मूर्तियो विक्रीयाच्चगुरोः शुभाम्। १०६।
चरित्रचारी लवणस्यकर्ता माणिक्यके पुरे।
पुश्चल्या पुनराजातः विषात्ब्राह्मणहिंसकः। १०७।
आलर्के चील वर्माऽसौयोदिव्यास्त्वास्त्रियापुरा।
ब्रह्मवृत्ति हरः पापं मुक्त्वाऽत्र लभते तनुम्। १०८।
स्वकर्मवश जातानां जनानां दुःखवर्तिनाम्।
प्रायश्चित्ताऽर्थरचितासैषासम्पूर्णतांगता। १०९।
प्रायश्चित्तान्यहं वक्ष्ये गदितानिमहर्षिभिः।
यथा शक्त्यासु साध्यानिकार्यसिद्धि कराणि च। ११०।
हरिवंश पुराणस्य श्रवणं धेनु पूजनम्।
पुनस्सन्तान गोपाल जपं पुत्र प्रदायकम्। १११।
गृह वित्तार्थ दानेन पुराणेन श्रवणेन च।
स्वर्णाकृति प्रदानेन सर्वं दुःखं व्यपोहति। ११२।
शीघ्र कर्मवि बोधार्थं यामयाश्लोक रूपिणी।
रचिताष्टोत्तरी मालरामार्पण कृताऽधुना। ११३।

———

॥ श्री हरिः ॥

ज्योतिश्शास्त्रनिघण्टुः।

अर्थात्

ज्योतिश्शास्त्र कोशः

नक्षत्रनिघण्टुः प्रकरणम्

यः कर्ता जगतां भर्ता संहर्ता महतां निधिः।
प्रणमामि तमादित्यं बहिरन्तस्त मोपहम्॥
भवत्यश्विनिनक्षत्रमश्वी दस्रस्तुरंगमः।
आद्यस्तुरंगस्तुर गोऽश्वो वाजी च हयो हरिः।१।

भरणी स्याद्यमो याम्यस्तत्वन्तको यमसंज्ञिकः ।२।
कृत्तिका बहुला ज्ञेया हुत भुग्र वह्निसंज्ञिका।
पट्तारकः पावकश्चानलोऽथ ज्वलनस्तथा ।३।
रोहिणी च विधिर्ब्रह्मा प्राजापत्यश्चतुर्मुखः ।
प्रजापतिः प्रजेशश्च विधाता पङ्कजासनः ।४।
आत्मभूः पद्मयोनिःस्यात् ब्रह्मनाम ततः परम् ।५।
मृगशीर्षा मृगश्चन्द्र ऐन्दवो हिमदीधितिः ।
स्याद्विधुः शशिभं सौम्यो निशानाथो निशाकरः ।६।
आर्द्रारौद्रं च पुरजित् शर्वः स्थाणुर्भवो हरः ।७।
पुनर्वस्वदितिर्देव माता आदित्यमेव च ।८।
इज्यायौं तिष्यपुष्ये तु पूजितो गुरुनामकः ।
वागीशश्चमरेज्यश्च जीवोदेव पुरोहितः ।९।
आश्लेषोरग सार्पाहि भुजंग व्यालसंज्ञिका ।
मघापिता च पैत्रश्च मेखला पितृभंतथा ।१०।
भाग्यं पूर्वाफल्गुनी स्यात् भगाख्यं भगसंज्ञकम् ।११।
अर्यमर्यमणं चैव अर्यम्णु चोत्तरातथा ।१२।
हस्तः सवितृसावित्रे अर्कः सूर्योदिवाकरः ।१३।
चित्रास्यात्त्वष्टदैवत्यं त्वाष्ट्रेन्द्र सुरवर्धकम् ।१४।
स्वाती समीरणो वायु पवनश्चानिलो मरुत् ।१५।
विशाखं शूर्पमिन्द्राग्निद्विदैवत्यं पिशाखभम् ।१६।
मित्रंमैत्रमनूराधमनूराधस्य संज्ञकम् ।१७।
ज्येष्ठेन्द्रो पुरुहूतश्चैवेन्द्रः शतमखस्तथा ।१८।
मूलं निशाचरं प्रोक्तमासुरं नैर्ऋतं तथा ।
नक्तंचरं कोणपं च राक्षसं पिशिताशनम् ।१९।
पूर्वाषाढा जलं तोयमुदकं चाप एव च ।२०।
उत्तराषाढविश्वे च ।२१।
अभिजिद्वा प्रकाशकम् ।२२।

श्रवणं वैष्णवं श्रीशं श्रीकान्तं मुरजिद्धनम् ।२३।
श्रविष्ठा च धनिष्ठा च वसुर्वासव एव च ।२४।
प्राचेतसो जलनिधिः शततारश्च वारुणः ।२५।
अजैकपात् प्रोष्ठपदा पूर्वाभाद्रपदा तथा ।२६।
उत्तराभाद्रकं चैवाहिर्बुध्नं च निशामुखम् ।२७।
रेवती पौष्ण इत्याहुरन्त्यः पूषा तथैव च ।२८।

इति नक्षत्रनिघण्टु प्रकरणम् ।

अथ राशिनिघण्टु प्रकरणम्

अजा क्रिया छागवस्तौ तूवरा विश्वभेषजी ।
मेषमाद्या क्रिया प्रोक्ता छागी वागी रयस्तथा । १ ।
वृषभस्तो उरुगोंश्च वृष उक्षा तथैव च ।
अनड्वान् सौरभेयश्च दूरक्षोभी वृषाह्वयः । २ ।
मिथुनं यमलं युग्मं नृ युग्मं च युगं तथा । ३ ।
कुलीरकर्कौ कटकः कर्किणो निचली झमान् । ४ ।
सिंहों मृगारिर्मृगराट्र मृगेन्द्रो मृगनायकः ।
हरिः पञ्चाननोराजा लेयः कण्ठीरवस्तथा । ५ ।
अङ्गना स्त्री वधू कन्या पार्थेयं कन्यकावला । ६ ।
तुला तौलिर्वणिक् जूकस्तुला भृद्धटसंज्ञिका । ७ ।
अलिः सरीसृपः कौर्पी कीटो वृश्चिकवाचकः । ८ ।
शार्ङ्गी शरासनं प्रोक्तं तौक्षिकं मार्गणासनम् ।
चापं तूणीरवाणं च धनुः कोदण्डकार्मुकम् । ९ ।
मकरः स्यान्मृगो नक्रश्चाको केकश्च कथ्यते ।१०।
कुम्भो घटो जलधरो हृद्रोग इति कीर्तिताः ।११।
मीनोऽन्त्यो निमित्रो मत्स्यो झषश्चवारि जोण्डजः ।
जळजः पृथु रोमा च मोन सञ्ज्ञाश्च कीर्तिताः ।१२।

इति राशि निघण्टु प्रकणम् ।

ग्रहनिघण्टुः प्रारम्भः

आदित्योऽर्को रविर्भानुभास्करश्च दिवाकरः ।
मार्तण्डः सविता हेलिस्तीक्ष्णांशुर्मिहिरो रविः । १ ।
चन्द्रः शशीशशांकश्च विधु सोमो निशाकरः ।
शीतांशुरुडुनाथश्च इन्दुचन्द्रमसौ विदुः । २ ।
आरो वक्रो महीजश्च रुधिरो रक्त एव च ।
अंगारकः कुजोभौमो लोहितांगो महीसुतः । ३ ।
सौम्यो विद्ज्ञो बुधोहेमः सोमजो बोधनः क्रमात् ।४।
जीव आंगिरसो वाचस्पतिश्चित्रखण्डिजः ।
आर्यो बृहस्पतिः सूरिर्वागीशो वचसांपतिः । ५ ।
शुक्रो भृगुर्भृगुसतस्तत्सुजश्च सितश्चसः ।
उशना दैत्यपूज्यश्च काव्यः कविरितिस्मृतः । ६ ।
कोणोमन्दः शनिः कृष्णः सूर्यपुत्रो यमश्च सः ।
पंगुः शनैश्चरः सौरिः कालश्छायासुतः स्मृतः । ७ ।
राहुस्तमः सुरोगश्च स्वर्भानुश्च विधुंतुदः ।
पातुश्च सैंहिकेयश्च भुजगाख्य इतिस्मृतः । ८ ।
केतुः शिखीध्वजो धूम्र उत्पातो बहुरूपकृत् ।
शिरोहीनो घोररूपश्चित्रवर्णः खुकेतवः । ९ ।

इति ग्रहनिघण्टुः ।

स्थाननिघण्टुः

क्षितीशोप्युदयो राशिलग्नं होरोदयस्तनुः ।
कल्यो विलग्नमात्मा च भावोऽयं प्रथमोभवेत् । १ ।
द्वितीयं धनवाग्वित्तं कुटुम्बं नेत्र संज्ञकम् । २ ।
तृतीयं विक्रमं भ्रातृ दुश्चिक्यं सहजस्तथा । ३ ।
चतुर्थं हिबुकं वेश्म वंधु रन्धिः सुखं जलम् ।
पातालं जननी मातृ उदकं च पयोऽमृतम् । ४ ।
पंचमं तनयो मंत्री ह्यात्मा च सुत उच्यते । ५ ।
षष्ठं चरिपु रित्याहुऋणं क्षतम पीति च । ६ ।

सप्तमं द्यूनमस्तं च द्यूतं च मदनः स्मरः ।
कामो विवाहो जामित्रं भार्येति त्रिनिदर्शितम् । ७ ।
अष्टमं निधमं रन्ध्रं पापमायुर्मृती रुजा । ८ ।
नवमं च त्रिकोणं च सुकृतंगुरु भाग्यकम् ।
पितृज्ञानोदयो भक्तिर्देवतोपासनस्था । ९ ।
दशमो मान आज्ञापि कर्मस्थानमिति स्मृतः ।
वृद्धिकर्माभिधानं च वत्रीशंत्तय उच्यते ।१०।
एकादशो भवेल्लाभ आयुश्चविजयी शुभः ।११।
द्वादशं च व्ययस्थानं पापस्थानं प्रशस्यते ।१२।

इति स्थाननिघण्टुः ।

भावनिघण्टुः ।

लग्नं स्यादुदयो राशिः कल्पं होरोदयस्तनुः ।
आद्यो देहः शरीरं च विलग्नाधारमूर्तयः ।
स्वभावो जन्म चात्मा च भावोयं प्रथमः स्मृतः ।१।
द्वितीयं द्रविणं स्वार्थो कुटुम्बो धनवेश्मकम् ।
सत्यवाचिकवाक्यस्थाने युग्मं कोशो हिरण्यकम् ॥
कर्णः प्रयाण नेत्र च, मुखं दक्षिणनेत्रकम् ।
लोहं मुक्ताफलं स्वर्णं विद्या भुक्तिस्तु कम्बलः ॥
रत्न धातुश्च वित्तं च भावो यं च द्वितीयकः ॥२॥
तृतीयं भगिनी भ्राता सहजश्चाग्रजोऽनुजः ।
सहभावः क्षुधायोगोदासी दास्यादिवर्गकम् ॥
सत्वं पराक्रमः कोपो रौद्र शान्तमुपायकम् ।
कार्यसाधनमिले च स्वरो गरल भक्षणम् ॥
आपोक्लीवं दक्षत्रं भावो यंश्च तृतीयकम् ॥३॥
चतुर्थं जलपाताले बन्धुश्च हिवुकं सुखम् ।
वापी कुपतटाकाश्च प्रवाहो द्वार मेदिनी ॥
पुस्तकं गृहशय्या च पशुः सस्यं च धान्यकम् ।
विद्या वाहनकार्ये च माता चोषधमंत्रकम् ॥
विवादसाक्षि पौराणं भावो यंच चतुर्थकम् ॥४॥

पञ्चमं मंत्रि पुत्रश्च तनयः प्रतिभात्मजः।
फणापरश्च शक्तिश्च भावो यं पंचमः स्मृतः ॥५॥
षष्ठो वैरी रिपुः शत्रुः क्षतारी रोग भीतिदम्।
ज्ञातिः शास्त्रापणं पापं भावोयं षष्ठकः स्मृतः ॥६॥
जामित्रं जूकमस्तं च कामो भार्येति च स्मरः।
कटको द्यूतवाणिज्ये क्रयविक्रयसंग्रहः ॥
कलत्रं सौख्यवैवाहे भोगस्थानं मनोहरम्।
अलंकृतिश्च सर्वेषां भावोयं सप्तमः स्मतः ॥७॥
अष्टम निधनं रन्ध्रंमृति नाशिश्चनैधनम्।
आयुष्यं जीवनोपायं मोक्षो लयनिवारणे ॥
भक्ष्य भोज्यादिनाशश्च भावोयं चाष्टमः स्मृतः ॥८॥
दशमं तपदीकं च सुकृतं गुरुभाग्यकम्।
पितृ ज्ञानं दया भक्तिर्देवतोपासनं तथा ॥
चित्रानंदस्तथा स्वामी भावोयं नवमः स्मृतः ॥९॥
दशमं मानसं कर्म व्यापारोंवरमेव च।
कार्यं च व्योम चाकाशमजापुण्यं च राज्यकम् ॥
वीर्यस्थानं च सत्कर्म-भावोयं दशमः स्मृतः ॥१०॥
एकादशं भवेदायुरर्थलाभो जयस्तथा।
अधः पृष्ठं च पृष्ठं च भावश्चैकादशः स्मृतः ॥११॥
द्वादशांत्यो व्ययोरिःफ आपोक्लीमापवर्गको।
लाक्षीणोनरकोनाशो भावोयं द्वादशः स्मृतः ॥१२॥

इति भावनिघण्टुः

कारक निघण्टुः

आत्मा प्रभावः शक्तिश्च पितृचिंता रवेः फलम्।
मनोबुद्धिः प्रसादश्च मातृचिंता च चन्द्रमाः ॥१॥
भ्राताभृत्यगणो भूमिः भौमे नैव बिचिंतयेत्।
प्रज्ञाच कर्मविज्ञानं बुधेनैव विचिंतयेत् ॥२॥

गुरुणा देहपुष्टिश्च बुद्धि पुत्राथ संप्रदः ।
शुक्रो विवाहं भाग्यं च भोगस्थानं च वाहनम् ।।३।।
आयुष्यं जीवनोपायं मरणं च शनैश्चरः ।
तटाका रामविश्रामान् राहोर्मातामहं भवेत् ।।४।।
केतो पितामहश्चिंता बहुदानश्च मोक्षदः ।।५।।
इति कारकनिघण्टुः ।।

अंक संज्ञानिघण्टुः

शशि सोमः शशांकश्च इंदुश्चंद्रः कलानिधिः ।
राजा विधुः सुधांशुश्च यम एकजनस्तथा ।।१।।
अक्षी चक्षुकरं नेत्रं लोचनं बाहुकर्णकाः ।
पक्षदृष्टिद्वयं युग्मगंवकौ नयनेक्षणे ।।२।।
वह्नी रामः शिखी चाग्निः पावको दहनानलौ ।
शंकराक्षि पुरो लोकास्त्रीणि कालस्त्रयो गुणाः ।।३।।
·अब्धिसागर चत्वारि व वनराशियुगोऽम्बुधिः ।
चतुर्वार्धिर्गतिश्चापि जलोधिर्नीरधिस्तथा ।।४।।
इन्द्रियं पंचमं ज्ञानमिषुर्बाणश्च मार्गणः ।
प्रतं शूलंशरः पर्वा प्राणश्च विषयस्तथा ।।५।।
शास्त्रं षट्कं रुचिश्चैव कालश्च ऋतुसंज्ञकम् ।
रसद्रव्यां च कोशश्च षडदर्शनडागमौ ।।६।।
शैलोद्रिद्वीपवायुश्च मुनिः सप्ताचलो गिरिः ।
तुरगाश्वनगागोत्रा महीन्द्रश्चपि संज्ञकः ।।७।।
अष्टमं गजकर्णी च दिग्गजो दन्ति हस्तिनौ ।
सामजीमत्तमातंगदिक्पाल वसुवारणाः ।।८।।
नवमं नवरत्नं च ब्रह्मा च कमलासनः ।
निधिर्गृहश्च खंडं च रध्रभावश्च लब्धकः ।।९।।
आकाशं गगन न्शूयमंतरिक्षंमरुत्पथम् ।
कादिःर्न बोटादिनवः पादिपञ्चश्च याष्टक ।।१०।।
इति अङ्कसंज्ञानिघण्टुः ।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

शिव-संहिता

(प्रश्नावली खण्ड)

चक्रम्

ॐ	सि	द्ध	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ऋ	ॠ	लृ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
अः	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज
झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ
द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य
र	ल	व	श	ष	स	ह	क्ष	श्री

शिव संहिता [फलित प्रश्नावली खण्ड]

श्री गणेशाय नमः। श्रीसरस्वत्यै नमः। ॐ मंत्रः श्रीसर्वन्तामाय सत्यं वदाय स्वाहा। सिकारे सिद्धिदं सर्वं शुभं च शुभवासना। सिद्धिश्च वहुलाभः स्याज्जीवितं च फलं भवेत् ॥ १ ॥ द्धंकारे वहुवृद्धिः स्याद्धर्मकामार्थमोक्षकाः ॥ वहुलाभो भवेत्क्षिप्रं सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥ २ ॥ अकारे विजयां विघ्नं धनप्राप्तिस्तथैव च। सिध्यंति सर्वकार्याणि पुत्रलाभस्तथैव च ॥ ३ ॥ आकारे शोकसंतापो विरोधः सर्वजंतुषु। आवर्तसंभवो व्याधिदुःखं चैव न संशयः ॥ ४ ॥ इकारे

मंगलं सौख्यं सिद्धिश्चैव प्रजायते। नश्यंति सर्वरोगाणि धनधान्यं प्रजायते ॥ ५ ॥ ईकारे धनलाभश्च पुत्रलाभस्तथैव च। सिध्यंति सर्वकार्याणि सौभाग्यमतुलं लभेत् ॥ ६ ॥ उकारे सर्वसंतापो वियोगश्च भवेद्ध्रुवम्। दुःखं चैव भवेद्धोरमापदा च न संशयः ॥ ७ ॥ ऊकारे लभते स्थानं प्रतिष्ठां चैव शोभनाम्। सिध्यंति सर्वकार्याणि ह्यर्थलाभो भविष्यति ॥ ८ ॥ ऋकारे अर्थप्राप्तिश्च स्वर्णरत्नसमुद्भवः। सिध्यंति सर्वकार्याणि लाभः स्याच्च न संशयः ॥ ९ ॥ ॠकारे जायते वृद्धिर्दुःखं संताप एव च। मित्रैः सह विरोधश्च भवत्यत्र न संशयः ॥ १० ॥ लृकारे लभते सिद्धिं मित्रैः सह समागमः। आरोग्यं जायते नित्यं राजसम्मानमेव च ॥ ११ ॥ लॄकारे दृश्यते हानिर्व्याधिश्चैव भविष्यति। संपत्तिहरणं नित्यं कार्यहानिर्न संशयः ॥ १२ ॥ एकारे दृश्यते सिद्धिर्मित्रैः सह समागमः। ततश्च लभते सिद्धिं शुभेनेह शुभाभवत् ॥ १३ ॥ ऐकारे बंधनं चैव विरोधश्च भविष्यति। विघ्नं च प्रभवेत्तूर्णं मृत्युश्चैव न संशयः ॥ १४ ॥ ओकारे दृश्यते सिद्धिः कार्यसिद्धिस्तथैव च। सिध्यंति सर्वकार्याणि भवेच्चैव न संशयः ॥ १५ ॥ औकारे सर्वकार्याणां सिद्धिस्तस्य न जायते। मित्रैः सह विरोधश्च शोकः संताप एव च ॥ १६ ॥ अंकारे च महाहानिर्बंधनं च भविष्यति। महादुःखं महाशोको भयं चैव न संशयः ॥ १७ ॥ अःकारे लभते सिद्धिं प्रतिष्ठां लभते नरः। धनलाभं महत्सौख्यं लभते नात्र संशयः ॥ १८ ॥ ककारे राजसम्मानं सर्वत्र प्रियदर्शनम्। कल्याणं च लभेत्तुल्या सिद्धिश्चैव प्रजायते ॥ १९ ॥ खकारे शोकसंतापो द्रव्यनाशस्तथैव च। शरीरे जायते व्याधिर्जीवितेपि न संशयः ॥ २० ॥ गकारे चिन्तिते कार्यं सिद्धिश्चैव प्रजायते। सौभाग्यं सर्वमाप्नोति मित्रैः सह समागमः ॥२१॥ घकारे कार्यसिद्धिं च लभते च शुभप्रदाम्। सौभाग्यं च भवेतस्य कल्याणं च प्रजायते ॥ २२ ॥ ङकारे कार्यनाशश्च सिद्धिर्भवति निष्फला। जायतेऽर्थश्च विफलो विफलं कर्म सर्वदा ॥ २३ ॥ चकारे विजयं कार्यं राजसंमानमेव च। सर्वक्षेमकरं राज्यलाभं चैव

प्रदर्शयेत् ॥ २४ ॥ छकारे सर्वकार्याणि रत्नानि विविधानि च । आनंदः क्षेममारोग्यं शोभनं च सदा भवेत् ॥ २५ ॥ जकारे दृश्यते हानिः कार्यं चैव विनश्यति । मित्रैः सह विरोधं च कलहं लभते नरः ॥ २६ ॥ झकारे त्वर्थलाभश्च कार्यं च सुफलं भवेत् । सौभाग्यमर्थसंप्राप्तिः कार्यं चैव फलप्रदम् ॥ २७ ॥ ञकारे शोकसंतापौ बंधनं च भविष्यति । दुष्टैस्सह विरोधश्च मृत्युं चैव फलं लभेत् ॥ २८ ॥ टकारे दृश्यते लाभा विषयांश्च तथैव च । प्राप्नोति विफलं कार्यं तुल्यं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥२९॥ ठकारे सर्वसिद्धिं च फलं राज्यं तथैव च । आरोग्यमथ विद्या च जायते नात्र संशयः ॥ ३० ॥ डकारे लभते सिद्धिं वर्तमानं तथैव च । अत्यन्ततरमारोग्यं लभते नात्र संशयः ॥ ३१ ॥ ढकारे बन्धनं व्याधिः शोकसंताप एव च । विदेशगमनं कार्यं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ ३२ ॥ णकारे सुफलं विद्यात्सम्यगानन्दवान् भवेत् । धनं पुत्रं च सौभाग्यं लभते नात्र संशयः ॥ ३३ ॥ तकारे चार्थलाभः स्यात्सौभाग्यमपि जायते । अपरां लभते सिद्धिं सर्वकार्यार्थसाधनम् ॥ ३४ ॥ थकारे कार्यहानिश्च स्थानहानिस्तथैव च । अतिसंभवरोगश्च भवेदेव न संशयः ॥ ३५ ॥ दकारे धनलाभश्च सर्वसिद्धिकरः परम् । भुंक्ते सुखं वैभवं च लभते नात्र संशयः ॥ ३६ ॥ धकारे धनलाभश्च सुखमारोग्यमेव च । प्राप्नोति सौख्यमतुलं मानं तत्र न संशयः ॥ ३७ ॥ नकारे भूमिसंप्राप्तिर्बहुलाभो भविष्यति । आरोग्यं सुफलं कार्यं भवेत्तस्य न संशयः ॥ ३८ ॥ पकारे धनलाभश्च व्याधिबन्धनमेव च । उद्वेगः कलहो नित्यं जन्मना जायते नरः ॥ ३९ ॥ फकारे धनसंप्राप्तिः सर्वसंपत्तिरेव च । सर्वकार्याणि सिध्यंति नैरृत्यां लभते सुखम् ॥ ४० ॥ बकारे बन्धनं चेव धननाशो भविष्यति । प्राप्नोति मृत्युं नित्यं वा व्याधिश्चैव प्रदृश्यते ॥ ४१ ॥ भकारे दृश्यये लाभो दृश्यमानो मनोरथः । पुत्रभावं विजानीयात्तथा सिद्धिर्भविष्यति ॥ ४२ ॥ मकारे निधनं नूनमापदा परमा स्मृता । न च भोगो भवेत्तस्य सर्वं भवति निष्फलम् ॥ ४३ ॥ यकारे कार्यमाप्नोति धनधान्यसमाकुलम् । शोभनं च भवेत्तस्य सर्वलाभो भविष्यति ॥ ४४ ॥

रकारे तु भयं कार्यं विरोधश्च जनैः सह। नित्यं च जायते हानिर्मरणं दुःखमेव च ॥ ४५ ॥ लकारे धनसंप्राप्तिर्लाभश्चापि तथैव च। विपुलं च महाभाग्यं लभते नात्र संशयः ॥ ४६ ॥ वकारे कार्यनाशश्च धनहानिश्च जायते। दुःखशोकजसंतापो महाभाग्यमुपस्थितम् ॥ ४७ ॥ शकारे सर्वसिद्धिश्च सुलभं च दिने दिने। अर्थश्च प्रभवेन्नित्यं सर्वभावो भविष्यति ॥ ४८ ॥ षकारे धनधान्यं च सर्वकार्यं च सिद्धिदम्। कुशलं च सदा तुल्यं शोभनं च भविष्यति ॥ ४९ ॥ सकारे निष्फलं नित्यं चिन्तां वै लभते नरः। मनसा चिन्तिते हानिः कार्यमेवं विनश्यति। ॥ ५० ॥ हकारे च महासिद्धिः सर्वकार्यफलप्रदा ॥ सर्वकार्याणि सिध्यन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ ५१ ॥ क्षकारे सफलं कार्यं सर्वसिद्धिः प्रजायते। सर्वत्र लभते सिद्धिं शिववाक्यं न संशयः ॥ ५२ ॥

इति श्री शिव संहिता प्रश्नावली खण्ड सम्पूर्णः ॥ शुभम् ॥

बारह राशियों का अद्भुत चित्र



१. मेष
२. वृष
३. मिथुन
४. कर्क
५. सिंह
६. कन्या
७. तुला
८. वृश्चिक
९. धन
१०. मकर
११. कुम्भ
१२. मीन

|| श्री गणेशाय नमः ||

शिव-संहिता (कुण्डली-खण्ड)

चन्द्रयोग-कुण्डली

म० चं० ०
सुनफा

(सुनफा ३१ भेद)

० च० बु०
अनफा

(अनफा के ३१ भेद)

म च० बु०
दुरधरा

(दुरधरा के भेद १८०)

च० ० ०
केमद्रुम

(शेष केमद्रुम योग)

पार्वत्युवाच—

देव ! देव ! महादेव ! त्रिकालज्ञ ! महेश्वर !

ब्रूहि मे चन्द्र चक्रस्य प्रकारं पूर्वसूचितम् ||१||

पार्वतीजी ने पूछा—हे देव ! देव ! महादेव ! त्रिकालज्ञ ! महेश्वर ! कृपया मुझे पहिले बताए हुये चन्द्र कुण्डली की विधि बतलाइये ।

श्री शिव उवाच

चन्द्र चक्रं प्रवक्ष्यामि शृणुत्वस्वस्थ्य मानसः ।
पूणम् चन्द्र योगस्य कुण्डल्यां प्रभेदतः ॥२॥

श्री शिव जी ने कहा—हे पार्वती स्वस्थ चित्त होकर पहिले चन्द्र कुण्डली के विशेष भेदों को सुनो ।

प्रभेद श्लोक

चन्द्र चक्रं प्रवक्ष्येऽहं सावधानतया शृणु ।
तस्यभेदोपभेदेश्च सहितं पार्वतात्मजे ॥३॥

पाठान्तर में कहीं ऐसा भी लिखा है, कि भगवान् शंकर ने पार्वती जी से कहा कि हे पार्वती सावधान होकर चन्द्र योग कुण्डली के विशेष भेद को सुनो ।

चन्द्रयोगस्य चतुर्विप्रभेदेन जगद्विख्यातम् ।
सुनफाऽनफा दुरुधरा केमद्रुम महावलाम् ॥४॥

चन्द्र योग के चार विशेष भेद जगत में विख्यात हैं । जिनमें सुनफा, अनफा, दुरुधरा, केमद्रुम महावलशाली हैं ।

चन्द्रमा से दूसरे स्थान में भौम, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इनमें से एक-एक, दो-दो, तीन-तीन, चार-चार, पांच-पांच ग्रहों के रहते इकतीस प्रकार का सुनफा योग होता है और ऐसे ही वारहवें स्थान में इकतीस प्रकार का अनफा योग होता है तथा दूसरे और वारहवें इन दोनों स्थानों में उक्त ग्रहों में से भिन्न-भिन्न एक-एक और एक-एक, दो-दो और एक-एक, तीन-तीन, और एक-एक, और चार-चार, एक-एक और दो-दो और दो-दो, तीन-तीन और तीन-तीन, दो-दो, ग्रहों के रहते एक सौ अस्सी प्रकार का दुरुधरा योग होता है ।

इन भेदों के स्पष्ट करने की यह रीति है कि (इच्छाविकल्पैः) अर्थात् इष्टसंख्यक वस्तु को जितने वार आपस में वदलना हो, उतने वार

(क्रमशोभिनीय नीतेर्निवृत्तिः पुनरन्यनीतिः) अर्थात् उक्त वस्तु-समूह में एक को स्थिर मान अन्य को चर मानकर, उस चर को बदले; फिर जब सब चर बदल चुके तब किसी अन्य को स्थिर मान और किसी को चर मानकर वहां भी फिर चरों को उतने बार बदले, ऐसे ही करने से सब रूप स्पष्ट होते हैं । यथा—

मंगल बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर ये पांच प्रत्येक इष्ट हैं और प्रत्येक को एक बार बदलना है, तो प्रत्येक का एक-एक रूप होगा और यदि इनमें दो इष्ट हों और उन्हें दस बार बदलना हो तो मंगल को स्थिर मान बुधादि को चर मान के बदले तो मंगल बुध १, मंगल, बृहस्पति २, मंगल, शुक्र ३, मंगल शनैश्चर ४ रूप हुए । अब बुध को स्थिर मान अन्य को चर मान उन्हें बदले तो बुध बृहस्पति १, बुध शुक्र २, बुध शनैश्चर ३ रूप हुए । अब बृहस्पति को स्थिर मान अन्य को चर मान उन्हें बदले तो बृहस्पति शुक्र १, बृहस्पति, शनैश्चर २ रूप हुए । अब शुक्र को स्थिर मान अन्य को चर मान उन्हें बदले तो शुक्र शनैश्चर १ रूप हुआ । इसी तरह तीन चार इत्यादि इष्ट होने पर रूप स्पष्ट होते हैं ।

पूर्वोक्त सुनफा, अनफा योगों के सब भेदों की संख्या जानने की यह रीति है कि एक दो तीन चार और पांच इनको पहले क्रम से लिखें, फिर उनके ऊपर उक्त संख्या को व्युत्क्रम से लिखें । नीचे लिखे हुए अङ्कों को भाजक माने और ऊपर लिखे

५	४	३	२	१
१	२	३	४	५

हुए अङ्कों को भाज्य माने और पूर्व-स्थान में जो लब्धि मिले उसे ऊपर में स्थित उत्तरांक का गुणक माने, फिर क्रिया करे तो भेदों की संख्या ज्ञात होती है । यथा—

पांच के नीचे एक है तो पांच में एक का भाग दिया तो लब्धि मिले

पांच, ये प्रत्येक ग्रह के वदलने से रूप हुए। अव इसी पांच के अङ्क से उत्तरांक चार को गुणा किया तो बीस हुए। इनमें नीचे लिखे हुए दो का भाग दिया तो दस लव्ध हुए। ये दस दो ग्रहों के वदलने से रूप हुए और इसी अङ्क से फिर उत्तरांक तीन गुण दिया तो तीस हुए इनमें नीचे लिखे तीन से भाग दिया तो दस लव्ध हुए। ये दस तीन ग्रहों के वदलने से रूप हुए और इसी अङ्क से उत्तरांक दो को गुण दिया तो बीस हुए। इनमें लिखे हुए चार का भाग दिया तो लव्ध पांच हुए। ये पांच चार ग्रहों के वदलने से रूप हुए और इसी अङ्क से उङ्करांक एक को गुणा दिया तो पांच ही हुए इनमें नीचे लिखे पांच का भाग दिया तो लव्ध एक हुआ, यही पांचो ग्रहों का एक रूप हुआ। इन पूर्वोक्त योगों के सम्पूर्ण रूप। यथा :—

चन्द्रमा से दूसरे स्थान में मंगल हो तो १, बुध २, वृहस्पति ३, शुक्र ४, शनैश्चर ५ और मंगल, वुध ६ मंगल, वृहस्पति ७, मंगल, शुक्र ८, मंगल शनैश्चर ९, बुध वृहस्पति १०, बुध शुक्र ११, बुध शनैश्चर १२, वृहस्पति शुक्र १३, वृहस्पति शनैश्चर १४, शुक्र शनैश्चर १५ और मंगल बुध वृहस्पति १६, मंगल बुध शुक्र १७, मंगल बुध तथा शनैश्चर १८, मंगल वृहस्पति शुक्र १९, मंगल वृहस्पति शनैश्चर २०, मंगल शुक्र शनैश्चर २१, बुध वृहस्पति शुक्र २२, बुध वृहस्पति शनैश्चर २३, बुध शुक्र शनैश्चर २४, वृहस्पति शुक्र शनैश्चर २५, और मंगल बुध वृहस्पति शुक्र २६, मंगल बुध वृहस्पति शनैश्चर २७, मंगल वृहस्पति शुक्र शनैश्चर २८, मंगल बुध शुक्र शनैश्चर २९, बुध वृहस्पति शुक्र शनैश्चर ३०, मंगल बुध वृहस्पति शुक्र शनैश्चर ३१ इतने प्रकार के सुनफा होते हैं। और ऐसे ही चन्द्रमा से वारहवें स्थान में ग्रहों के स्थित होने से अनफा होता है। चन्द्रमा से दूसरे, बारहवें इन दोनों में क्रम से और व्युत्क्रम से मंगलादि ग्रहों के स्थित होने से दुरुधारा योग के एक सौ अस्सी रूप होते है। यथा—

बुध और मंगल २, मंगल और वृहस्पति ३, वृहस्पति और

मंगल ४, मंगल और शुक्र ५, शुक्र और मंगल ६, मंगल और शनैश्चर ७, शनैश्चर और मंगल ८, बुध और वृहस्पति ९, वृहस्पति और बुध १०, बुध और शुक्र ११, शुक्र और बुध १२, बुध और शनैश्चर १३, शनैश्चर और बुध १४, वृहस्पति और शुक्र १५, शुक्र और वृहस्पति १६ वृहस्पति और शनैश्चर १७ शनैश्चर और वृहस्पति १८ शुक्र और शनैश्चर १९ शनैश्चर और शुक्र २० तथा मंगल और बुध, वृहस्पति २१ बुध वृहस्पति और मंगल २२ और शुक्र बुध २३ बुध, शुक्र और मंगल २४ मंगल और बुध, शनैश्चर २५ बुध, शनैश्चर और मङ्गल २६ मङ्गल और वृहस्पति, शुक्र २७ वृहस्पति, शुक्र और मङ्गल २८ मङ्गल और वृहस्पति, शनैश्चर २९ वृहस्पति, शनैश्चर और मङ्गल ३० मङ्गल और शुक्र शनैश्चर ३१ शुक्र, शनैश्चर मङ्गल ३२ बुध और मङ्गल, वृहस्पति ३३ मङ्गल वृहस्पति और बुध ३४ मङ्गल और शुक्र ३५ मंगल, शुक्र और बुध ३६ और बुध मंगल, शनि ३७ मंगल, शनि और बुध ३८ और बुध वृहस्पति, शुक्र ३९ वृहस्पति, शुक्र और बुध ४० बुध और वृहस्पति, शनैश्चर ४१ वृहस्पति, शनैश्चर और बुध ४२ बुध और शुक्र शनि ४३ शुक्र, शनि और बुध ४४ वृहस्पति और मंगल, बुध ४५ मंगल, बुध और वृहस्पति ४६ वृहस्पति और मंगल शुक्र ४७ मगल शुक्र और वृहस्पति ४८ वृहस्पति और मंगल, शनि ४९ मंगल, शनि और वृहस्पति ५० वृहस्पति और बुध, शुक्र ५१ बुध, शुक्र और वृहस्पति ५२ वृहस्पति और बुध, शनि ५३ बुध शनि और वृहस्पति ५४ वृहस्पति और शुक्र, शनि ५५ शुक्र, शनि और वृहस्पति ५६ शुक्र और मंगल, बुध ५७ मंगल बुध और शुक्र ५८ शुक्र और मंगल वृहस्पति ५९ मंगल वृहस्पति और शुंक्र ६० शुक्र और मंगल शनि ६१ मंगल शनि और शुक्र ६२ शुक्र और बुध वृहस्पति ६३ बुध वृहस्पति और शुक्र ६४ शुक्र और बुध शनि ६५ बुध शनि और बुध ६६ शुक्र और वृहस्पति, शनि ६७ वृहस्पति, शनि और शुक्र ६८ शनि और मंगल, बुध ६९ मंगल बुध और शनिं ७० शनि

और मंगल, वृहस्पति ७१ मंगल वृहस्पति और शनि ७२ शनि और मंगल. शुक्र ७३ मंगल, शुक्र और शनि ७४ शनि वुध और वृहस्पति ७५ वुध वृहस्पति और शनि ७६ शनि और वुध शुक्र ७७ वुध शुक्र और शनि ७८ शनि और वृहस्पति, शुक्र ७९ वृहस्पति शुक्र और शनि ८० तथा मंगल और वुध वृहस्पति, शुक्र ८१ वुध गुरू शुक्र और मंगल ८२ मंगल और वुध गुरु शनि ८३ वुध एवं गुरु शनि और मंगल ८४ मंगल और वुध शुक्र शनि ८५ वुध शुक्र शनि और मंगल ८६ मंगल और गुरु शुक्र शनि ८७ गुरु शुक्र शनि और मंगल ८८ वुध और मंगल वृहस्पति शुक्र ८९ मंगल वृहस्पति शुक्र और वुध ९० वुध और मंगल वृहस्पति शनि ९१ मंगल वृहस्पति शनि और वुध ९२ वुध और मंगल शुक्र शनि ९३ मंगल शुक्र शनि और वुध ९४ वुध और वृहस्पति शुक्र शनि ९५ वृहस्पति शुक्र शनि और वुध ९६ वृहस्पति और मंगल वुध शुक्र ९७ मंगल वुध शुक्र और बृहस्पति ९८ वृहस्पति और मंगल वुध शनि ९९ मंगल वुध शनि और वृहस्पति १०० वृहस्पति और मंगल शुक्र शनि १०१ मंगल शुक्र शनि और बृहस्पति १०२ वृहंस्पति और वुध शुक्र शनि १०३ वुध शुक्र शनि और वृहस्पति १०४ शुक्र और मंगल वुध वृहस्पति १०५ मंगल वुध वृहस्पति और शुक्र १०६ शुक्र और मंगल वुध शनि १०७ मंगल वुध शनि और शुक्र १०८ शुक्र और मंगल बृहस्पति शनि १०९ मंगल वृहस्पति शनि और शुक्र ११० शुक्र और वुध वृहस्पति शनि १११ वुध वृहस्पति शनि और शुक्र ११२ शनि और मंगल वुध वृहस्पति ११३ मंगल वुध वृहस्पति और शनि ११४ शनि और मंगल वुध शुक्र ११५ मंगल वुध शुक्र शनि ११६ शनि और मंगल वृहस्पति शुक्र ११७ मगल वृहस्पति शुक्र और शनि ११८ शनि और वुध वृहस्पति शुक ११९ वुध वृहस्पति शुक और शनि १२० तथा मगल और वुध वृहस्पति शुक शनि १२१ वुध वृहस्पति शुक शनि और मगल १२२ वुध और मगल वृहस्पति शुक शनि १२३ मगल वृहस्पति शुक शनि और वुध १२४ बृहस्पति और मगल वुध शुक शनि

१२५ मंगल वुध शुक शनि और वृहस्पति १२६ शुक और मगल बुध वृहस्पति शनि १२७ मगल वुध वृहस्पति शनि और शुक १२८ शनि और मंगल बुध वृहस्पति शुक १२९ मंगल बुध वृहस्पति शक्र और शनि १३० तथा मंगल वुध और वृहस्पति शुक १३१ वृहस्पति शुक और मङ्गल वुध १३२ मंगल वुध और वृहस्पति शनि १३३ वृहस्पति शनि और मंगल वुध १३४ मङ्गल वुक्ष और शुक शनि १३५ शुक शनि और मङ्गल वुध १३६ मंगल वृहस्पति और शुक्र वुध १३७ शुक्र वुध और मंगल वृहस्पति १३८ मंगल वृहस्पति और वुघ शनि १३९ वुध शनि और मंगल वृहस्पति १४० मंगल वृहस्पति और शुक्र शनि १४१ शुक्र शनि और मंगल वृहस्पति १४२ मंगल शुक्र और वुध वृहस्पति १४३ वुध वृहस्पति और मंगल शुक्र १४४ मंगल शुक्र और वुध शनि १४५ वुध शनि और मंगल शुक्र १४६ मंगल शुक्र और वृहस्पति शनि १४७ वृहस्पति शनि और मंगल शुक्र १४८ वुध वृहस्पति और मंगल शनि १४९ मंगल शनि और वुध वृहस्पति १५० मंगल शनि और वुध शुक्र १५१ वुध शुक्र और मंगल शनि १५२ मंगल शनि और वृहस्पति शुक्र १५३ वृहस्पति शुक्र और मंगल शनि १५४ वुध वृहस्पति और शुक्र शनि १५५ शुक्र शनि और वुध वृहस्पति १५६ वुच शुक्र और वृहस्पति शनि १५७ वृहस्पति शनि और वुध शुक्र १५८ वृहस्पति शुक्र और वुध शनि १५९ वुध शनि और वृहस्पति शुक्र १६० तथा मंगल वुध और वृहस्पति शुक्र शनि १६१ वृहस्पति शुक्र शनि और मंगल वुध १६२ मंगल वृहस्पति और वुध शुक्र शनि १६३ वुध शुक्र शनि और मंगल वृहस्पति १६४ मंगल शुक्र और वुध वृहस्पति शनि १६५ वुध वृहस्पति शनि और मङ्गल शुक्र १६६ मङ्गल शनि और वुध वृहस्पति शुक्र १६७ वुध वृहस्पति शुक्र और मङ्गल शनि १६८ वुध वृहस्पति और मङ्गल शुक्र शनि १६९ मङ्गल शुक्र शनि और वुध वृहस्पति १७० वुध शुक्र और मङ्गल वृहस्पति शनि १७१ मङ्गल वृहस्पति शनि और वुध शुक्र १७२ वुध शनि और मङ्गल वृहस्पति शुक्र १७३ मंगल वृहस्पति शुक्र

और बुध शनि १७४ वृहस्पति शुक्र और मंगल बुध शनि १७५ मंगल बुध शनि और वृहस्पति शुक्र १७६ वृहस्पति शनि और मंगल बुध शुक्र १७७ मंगल बुध शुक्र और वृहस्पति शनि १७८ शुक्र शनि और मङ्गल बुध वृहस्पति १७९ मंगल बुध वृहस्पति और शुक्र शनि १८० ॥ ४ ॥

इति श्री शिव संहितायाम् कुण्डली खण्डम् समाप्तम् ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

शिव संहिता [कुण्डली फलित खण्ड]

सुनफा योग

श्रीमान् स्वबाहु विभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद् बहुयशाः स्वगुणाभिरामः ।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथवास्यात्
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने ॥१॥

सुनफा योग में जन्म लेनेवाला व्यक्ति श्रीमान्, अपने बाहु से विभव (धन उपार्जन) वाला, बहुत धर्मवान, शास्त्र के अर्थ का ज्ञाता, यशस्वी गुणवान शान्त सुखी राजा, मन्त्री के समान बहुत बुद्धिमान होता है ।

सुनफा योगकारक ग्रहों के अलग-अलग फल :—

विक्रमवित्तप्रायो निष्ठुरवचनश्चमूपतिचण्डः ।
हिंस्रो दम्भविरोधी सुनफायां भौमसंयोगे ॥२॥
श्रुतिशास्त्रगेयकुशलो धर्मपरः काव्यकृन्मनस्वी च ।
सर्वहितो रुचिर तनुः सुनफाया भौमजे भवति ॥३॥

यदि सुनफा योग-कारक मङ्गल हो तो पराक्रमी, धनी, निष्ठुर वचन बोलनेवाला, सेनापति, उग्र, हिंसक, घमण्डी, विरोधी होता है ।

यदि बुध योगकारक हो तो जातक वेद शास्त्र गान-विद्या में चतुर, धर्मात्मा, कवि, मनस्वी, सबका शुभचिन्तक और सुन्दर शरीरवाला होता है।

विद्याचार्यं ख्यातं नृपतिं नृपतिं नृपतिप्रियं वाऽपि।
सुकुटुम्बधनसमृद्धं सुनफायां सुरगुरुः कुरुते ॥४॥
स्त्रीक्षेत्रवित्तविभवश्चतुष्पदाढ्यः सुविक्रमो भवति।
नृपसत्कृतः सुधीरो दक्षः शुक्रेण सुनफायाम् ॥५॥
निपुणमतिर्ग्रामपुरे नित्यं संपूजितो धनसमृद्धः।
सुनफायां रविपुत्रे क्रियासुयुक्तो भवेद्धीरः ॥६॥

सुनफा योगकारक गुरु हो तो जातक सब विद्याओं में आचार्य प्रसिद्ध, राजा या राजा का प्रिय कुटुम्ब एवम् धन सम्पत्ति से पूर्ण होता है। यदि शुक्र योग बनावे तो जातक स्त्री, खेत, धन, वैभव, चौपायों से युक्त पराक्रमी, राजा से सम्मान धैर्यवान और कामों में कुशल होता है। यदि शनि योगकारक हो, तो चतुर बुद्धि, गांम एवं नगरवासियों से पूजित, धनी, कार्यों में लगा हुआ और धैर्यवान् होता है।

अनफा योग

वाग्मी प्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्न पानकुसुमाम्बर कामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
यागे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः ॥७॥

अनफा योग में जन्म होने पर भाषण देनेवाला, प्रभाव सहित, धनी, नीरोग, सुशील, अन्न, पान फूल, वस्त्र और स्त्री इत्यादि का सुख को भोगनेवाला, प्रसिद्ध गुणी, सुखी, प्रसन्न-चित्त और सुन्दर रूपवाला होता है।

दुरधरा योग

वाग्बुद्धि विक्रमगुणैः प्रथितः पृथिव्यां
स्वातन्त्र्यसौख्य धन वाहन भोग भोगी।
दाता कुटुम्बजनपोषणलब्ध खेदः
सद्वृत्तवान दुरुधराप्रभवो धुरिस्थः ॥८॥

दुरुधरा योग में जन्म लेनेवाला वक्ता, बुद्धिमान, विक्रमी और गुणों से पृथ्वी में प्रसिद्ध, दानी, परिवार के पोषण में परिश्रम करनेवाला, स्वतन्त्र, सुखी. धन, वाहन इत्यादि के भोग का भागी, अच्छा व्यवहार कर्त्ता और कार्यों में लीन होता है।

केमद्रुम योग

कान्तान्नपानगृहवस्त्र सुहृद्विहीनो
दारिद्र्यदुःखगददैन्यमखैरुपेतः
प्रेष्यः खलः सकल लोकविरुद्ध वृत्तिः
केमद्रुमे भवति पार्थिव वंशजोऽपि ॥९॥

केमद्रुम योग में राज्य वंश में जन्म लेने वाला भी स्त्री अन्न, पान (पीने का पदारथ), घर, वस्त्र और मित्रों से रहित, दरिद्र, दुःख, रोग और गरीबी के दुःख सहित, श्रम करके जीनेवाला, दुष्ट, सबसे विपरीत व्यवहार करनेवाला होता है।

इति श्री शिव संहितायाम् खण्डेन समाप्तम्।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

शिव संहिता (जातक खण्ड)

पार्वत्युवाच—

देव ! देव ! महादेव ! सर्वज्ञ ! शशिभूषणः ।
ज्योतिषार्णवपीयूषं संक्षेपेण वदस्व मे ॥१॥

पार्वतीजी शिवजी से बोलीं हे देव ! देव ! महादेव ! सर्वज्ञ ! शशिभूषण ! थोड़े में ज्योतिष रूपी सागर का अमृत-सार मुझे बतलाइये ॥ १ ॥

अनुग्रहार्थं लोकस्य चापि कारुण्यवत्सल ।
दैवज्ञशास्त्र सारं च फल भागं वदस्व मे ॥२॥

हे कारुण्यवत्सल ! लोक के लाभ हेतु कृपा करके हमें ज्योतिष शास्त्र के साररूप फलित खण्ड को कहिये ॥ २ ॥

शिव उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सावधानेन तच्छृणु ।
सप्तविंशतिऋक्षाणि द्वादश राशयः स्मृताः ॥३॥

शिवजी बोले हे देवि ! जो मैं कहता हूँ उसे तुम सावधान होकर सुनो । आकाश में सत्ताईस नक्षत्र और बारह राशियां हैं ॥ ३ ॥

सूर्यादीनां ग्रहाणां च नीचोच्चस्थानका स्मृताः ।
राहुः केतुस्तु सर्वेऽपि राशयः स्वगृहास्तथा ॥४॥

सूर्य इत्यादि ग्रहों का उच्च एवं नीच स्थान याद करने के लिये तथा राहु-केतु की सब राशियां तथा स्वगृह कही गई हैं ॥ ४ ॥

जन्म काले तु संप्राप्ते लग्नं निश्चित्य पण्डितः ।
तस्मिन काले खेचराणां चारं सम्यक् विनिश्चयेत् ॥५॥

पण्डित लोग जन्म होने पर उस काल का लग्न का निश्चय करने के वाद में ग्रहों के चाल का भी विशेष निश्चय करते हैं ॥ ५ ॥

पूर्वमायुः परीक्ष्यैव पश्चात्लक्षणमादिशेत् ।
नीच लक्षण ज्ञानेन आयुषा व्यर्थमाप्नुयात् ॥६॥

पहले आयु का विचार करे, वाद में शुभाशुभ लक्षण कहना चाहिये; वुरे लक्षण-ज्ञान से यानी न्यून आयु से सव फलादि के विचार का श्रम करना व्यर्थ है ॥ ६ ॥

भाव प्रवृत्तो हि फलं प्रवृत्तिः,
पूर्णं फलं भावसमानकेषु ।
हासः क्रमाद् भाव विरामकाले,
फलस्य नाशः कथितो मुनीन्द्रः ॥७॥

भाव की प्रवृत्ति होने से ही पूर्ण फल की प्रवृत्ति होती है। भाव के बीच में सम फल, अन्त में कृम से ह्रास को प्राप्त होकर फल का नाश होता है ॥ ७ ॥

भाव की प्रधानता—

सभी भाव से मिलत हैं, जग की वस्तु तमाम ।
विना भाव कैसे मिले, सीतापति श्रीराम ॥
नफा वस्तु में है नहीं, नफा भाव में होय ।
विना भाव भगवान् को, कैसे पावे कोय ॥

वैसे जन्म-कुण्डली में भाव के ऊपर बहुत से स्वतन्त्र ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिसके द्वारा आश्चर्यजनक फल ज्ञात होता है। जैसे—भाव-चिन्तामणि, भाव-माला, भाव-जातक, भृगु-सूत्र आदि ।

बारह भावों का भेद वर्णन

प्रथमं लग्नभावश्च द्वितीयं धनमेव च ।
तृतीयं भ्रातृभावं स्याच्चतुर्थं मातुरेव हि ॥८॥
पञ्चमं तु त्रिकोणं च षष्ठं तु रिपुसंज्ञकम् ।
जायास्थानं सप्तमं स्यादष्टमं निधनं तथा ॥९॥
नवमं तु त्रिकोणं स्यात् तदेव पितृसंज्ञकम् ।
दशमं कर्मसंज्ञं स्याल्लाभमेकादशं तथा ॥१०॥
द्वादशं तु व्ययस्थानमिति भावाः प्रकीर्तिताः ।
तेषां मध्ये भावपञ्च दुःखदा इति कथ्यते ॥११॥

पहिला लग्न भाव, द्वितीय धन भाव, तीसरा भाई भाव और चौथा माता भाव है। एवं पांचवां त्रिकोण सन्तान भाव, छठा शत्रु भाव सातवां स्त्री भाव, आठवां मृत्यु भाव, नवां त्रिकोण धर्म भाव, दशवां कर्म भाव और पिता संज्ञक, ग्यारहवां लाभ भाव और बारहवां व्यय भाव कुण्डली में होता है। यह जो बारह भाव बतलाये गये हैं इनके बीच में पांच भाव दुःख एवं दरिद्रता के देने वाले हैं ॥८-११॥

दुःख के पञ्चभाव (स्थान)

२ / ३तृ	१	१२ ला. / ११ व्यय
४	चन्द्रमा	१०
५ / ६शत्रु	७	९ / ८रंध्र

तृतीय, षष्ठ, अष्टम, एकादश एवं द्वादश इन पांच स्थानों के योगों से उत्पन्न फल कष्टकारक होता है।

जायमान योग

लाभं रन्ध्रं तृतीयं च शत्रुस्थानं व्ययं तथा ।
एतद्योगेन यद्योगः तन्नाशं प्रतिपद्यते ॥१२॥

लाभ, रन्ध्र (अष्टम), तृतीय शत्रु स्थान और व्यय ये ही वे पांच भाव हैं, जिनके योग से जायमान योग नाश को प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

चत्वारो राशयो भावाः केन्द्रकोणशुभावहाः ।
तेषां संयोगमात्रेण ह्यशुभोऽपि शुभं भवेत् ॥१३॥

चार राशि केन्द्र (१।४।७।१०) और कोण (१।५।९) शुभ हैं। इनके संयोग से अशुभ भी शुभ होता है ॥ १३ ॥

केन्द्रश्चतस्रो विख्यात ऋषिभिस्तत्वदर्शिभिः ।
तेषां मध्ये तु शुभदौ कर्मबन्धू सुसंज्ञकौ ॥१४॥
तावेतौ योगकर्तारौ शेषौ तु फलभागिनौ ॥१५॥

तत्व के ज्ञाता हमारे ऋषिगण केन्द्र के चार (१।४।७।१०) स्थान बतलाये हैं, इनके बीच में कर्म भाव (दशवां) और बन्धु भाव (चतुर्थ) दो योग के करने वाले हैं और विशेष शुभ फल देते हैं और बाकी दो साधारण फल के भागी हैं ॥ १४-१५ ॥

चक्रवर्त्ती राज्य योग

लक्ष्मीस्थानं त्रिकोणः स्याद् विष्णुस्थानं तु केन्द्रकम् ।
तेषां संयोगमात्रेण चक्रवर्ती नृपो भवेत् ॥१६॥

त्रिकोण लक्ष्मी का स्थान है । केन्द्र विष्णु का स्थान है । इन दोनों के संयोग से चक्रवर्त्ती राजा होता है ॥ १६ ॥

नवेश योग

लग्नाधिपोऽतिबलवानशुभैरदृष्टः,
केन्द्रस्थितः शुभखगैरवलोक्यमानः ।
दोषान् व्यपोह्य सकलानपि भाग्यतश्च,
दीर्घायुराशिरभवेच्च नवेशयोगात् ॥१७॥

लग्नेश अत्यन्त बलिश्ठ होकर केन्द्र में हो, उसे शुभ ग्रह देखते हों और दुष्ट ग्रह न देखते हों, तो नवेश योग होता है। इस योग में पैदा मनुष्य सब दोषों का नष्ट करने वाला, भाग्यवान और दीर्घायु होता है ॥ १७ ॥

लग्नाधिपः कोणपसंयुतश्चेद् ददाति
सौभाग्यमतीव कीर्तिम् ।
साम्राज्यलाभं च सुधर्मलाभं
दीर्घायुराशिश्च सदा नराणाम् ॥१८॥

यदि लग्नेश त्रिकोण के मालिक के साथ हो, तो वह भाग्यशाली एवं कीर्ति को देने वाला है और साम्राज्य, सुन्दर धर्म और लम्बी आयु को देता है ॥ १८ ॥

जातक अरिष्ट योग

लग्नाधिपो रन्ध्रपसंयुतश्चेदल्पायुरैश्वर्यविनाशनश्चेत् ।
शुभैरदृष्टो यदि पापदृष्टः, करोति जातन्न चिरायुषश्च ॥१६॥

लग्नेश अष्टमेश से संयुक्त हो, तो स्वल्प आयु होता है। धन को नष्ट करता है। यदि उसे शुभ ग्रह न देखे और पाप ग्रह देखे तो जातक दीर्घजीवी नहीं होता ॥ १६ ॥

सुत मदननवान्त्यरन्ध्रेऽशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः ।
भृगुसुतगुरुचन्द्रपुत्रदृष्टो, यदि न भवेच्च चिरं प्रशान्तचित्तः ॥

यदि चन्द्रमा पाप ग्रह के साथ ५, ७, ८, ९, १२ स्थानों में से किसी में हो और उसे बलिष्ठ शुक्र, बुध, गुरु न देखे, तो शिशु की मृत्यु होती है ॥ २० ॥

लग्ने राहुःस्थितो यस्य लग्नपेन युतोऽपि वा ।
चन्द्रेण तु युतश्चापि भूतग्रहवसन्नयेत् ॥२१॥
तत्तद्भावेशकर्मेशौ रन्ध्रलाभैर्युतौ यदि ।
ईक्षितौ वा तदीशेन तत् पाके मरणं ध्रुवम् ॥२२॥

जिसके जन्म काल में लग्नपति से योग होकर राहु या चन्द्रमा से योग लग्नपति केन्द्र में हो तो वह बीते हुए ग्रह के वस में होता है। जिसके लग्न में राहु स्थित हो अथवा लग्नेश राहु से युक्त हो एवं चन्द्रमा से युक्त हो तो जातक भूतग्रह को प्राप्त होता है। यही भावेश यदि दशमेश अष्टमेश एकादशेप से युक्त हो तो भी वही फल होता है अर्थात् शीघ्र मरण होता है। यदि भावेश एवं कर्मेश अष्टम और एकादश भाव से मिले हों और उनके मालिक से देखा जाये तो उसकी दशा में अवश्य मृत्यु होती है ॥ २१-२२ ॥

महाधनी योग

धनाधिपः कोणपसंयुतश्चेन्महाधनी भूपतिभाग्ययोगः ।
दयाऽनुकम्पी बहुपोषकश्च विद्याऽधिको मन्दिरसौख्यवाँश्च॥२३

यदि धनेश नवमेश से मिले तो महाधनी भूपति भाग्य योग होता है। वह दयालु, बहुत जनों का पालन करने वाला, अधिक विद्यावाला मन्दिर घर इत्यादि बनवाने वाला और सौख्य करने वाला होता है ॥ २३ ॥

त्रिकोणयोर्यदाऽन्योन्यं संयुक्तो वीक्षितोऽपि वा ।
तत्काले श्रियमाप्नोति केन्द्रपेन विशेषतः ॥२४॥

यदि ५-९ दोनों त्रिकोण के स्वामी एक राशि में हों या आपस में देखें, वो शीघ्र लक्ष्मी मिले। यदि वे केन्द्र के स्वामी से युक्त एवं देखे, तो विशेष लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ २४ ॥

त्रिकोण (५, ९) के स्वामी अन्योन्य अर्थात् पंचमेश नवम में एवं नवमेश पंचम में हो अथवा एक दूसरे को देखते हों तो द्रव्य प्राप्ति होती है। इसी प्रकार यदि पंचमेश नवमेश एक स्थान में कहीं केन्द्र में हों एवं केन्द्रेश से युक्त भी हो तो विशेष रूप से द्रव्य लाभ करता है।

दुष्टभावपसंयोगे फलं श्रियमवाप्नुयात् ॥२५॥

दुष्ट भाव के स्वामी से मिला हो या देखा जाये, तो अच्छा बुरा दोनों फल होता है ॥ २५ ॥

त्रिकोणपाभ्यां यदि बन्धुनाथो युतोऽपि
वा दृष्टियुतोऽपि वाऽथ।
स राजलक्ष्मीसहितो मनुष्यो विद्याऽधिको
वाहनभाग्यवांश्च ॥२६॥
मातृसौख्यप्रदश्चैव बन्धुपोषणतत्परः।
गृहसौख्यप्रदश्चैव भोगवान् स जितेन्द्रियः ॥२७॥

यदि चतुर्थ स्थान का स्वामी त्रिकोण के स्वामी से युत हो या देखा जाये तो वह प्राणी राजलक्ष्मी से युक्त, अधिक विद्या और सवारी वाला, भाग्यशाली होता है। माता को सुख देने वाला, भाइयों को पालन करने में तैयार, घर को सुख देने वाला, सुख भोगने वाला, इन्द्रियों को जीतने वाला होता है ॥ २६-२७ ॥

अमात्य योग

केन्द्राधिपः कोणपेन संयुतो वीक्षितोऽपि वा।
अमात्ययोगो विख्यातस्तत्पाके मृत्युमादिशेत् ॥२८॥

यदि केन्द्र के स्वामी त्रिकोण से युत या दृष्ट हों, तो अमात्य योग होता है और इसी दशा में मरण होता है ॥ २८ ॥

योगे कालेऽप्युच्चभागे खेचरो यदि संस्थितः ।
तद्योगः पूर्णयोगः स्यान्न्यूनं न्यूनत्वमाप्नुयात् ॥२६॥

यदि योग करने के काल में ग्रह उच्च राशि में हो, तो पूर्ण योग होता है और नीच में हो, तो थोड़ा योग करने वाला होता है ॥२६॥

राज्य सार्वभौम योग

कोणपाभ्यां च संयोगे योगोऽयं सार्वभौमिकः ।
तस्मिन् योगे दासपुत्रः सार्वभौमो भविष्यति ॥३०॥
तस्मिन् भावे सुयोगः स्यात् तदधीशस्य योगतः ।
तत्पाके श्रियमाप्नोति भवत्येव न संशयः ॥३१॥

दोनों त्रिकोण (५, ६) के स्वामी का योग होता है। वह सार्वभौम योग है। इस योग से नौकर से पैदा भी उसके दशा अन्तर में राजा होता है। त्रिकोणाधीश के संयोग से त्रिकोण (५वां ६वां) भाव में सुयोग होता है। उस भावधीश के दशा में अवश्य लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ ३०-३१ ॥

रन्ध्राधिपस्तु यं भावं वीक्षितः संयुतोऽपि वा ।
तद्भावपस्य पाके वा शत्रुवृद्धिर्नृपो भवेत् ॥३२॥
लाभाधिपयुतो वाऽपि ईक्षितो वाऽपि कामया ।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति रन्ध्रपेन युतोऽपि वा ॥३३॥
धनाधिपो नीचगतो रन्ध्रलाभैश्च ईक्षितः ।
कामपस्तु तथैव स्यान्मृत्युमाप्नोति निश्चितम् ॥३४॥

पितृभावो मातृभावः पुत्रभावस्तथैव च ।
सर्वेषामेव भावानामेतन्मात्रेण निश्चयेत् ॥३५॥

जिस भाव में अष्टमेश मिला हो या जिस भाव को देखे उस भावेश की दशा में दुश्मन बढ़ते हैं, परन्तु वह राजा होता है । जो भाव लाभेश से युत हो या इच्छानुसार दृष्ट हो या अष्टमेश से युत हो, तो उसी भावेश की दशा में अवश्य मरण होता है । धनभाव का मालिक नीच राशि में हो उसे अष्टमेश एवं लाभेश देखे और उसी तरह कामेश भी हो, तो अवश्य मरण होता । पितृ भाव, मातृ भाव और पुत्र भाव एवं सभी भावों को इन्हीं भावों से निश्चय करना चाहिये ॥ ३२-३५ ॥

आदित्यादिग्रहा सप्त एते योगाधिपाः स्मृताः ।
राहुः केतुस्तथा नास्ति संयोगेन फलन्ति हि ॥३६॥
छायाग्रहौ राहुकेतू शुभयोगे श्रियं भवेत् ।
पापयोगे तु पापः स्यादिति शास्त्रार्थनिर्णयः ॥३७॥

सूर्यादि सब ग्रह योगाधिप हैं, राहु और केतु योगाधिप नहीं हैं क्योंकि वे दूसरे ग्रहों के मेल से ही फलों को देते हैं । राहु और केतु छायाग्रह हैं वे शुभ ग्रह के मेल से लाभकारी हैं और पाप ग्रह के योग से पापकारी हैं ऐसा शास्त्र का निर्णय है ॥ ३६-३७ ॥

सिंहगो राजयोगस्थो राहुं दृष्ट्वा स्थितो यदि ।
राहुपाके दुःखवन्तो भवत्येव न संशयः ॥३८॥

राजयोग कारक ग्रह सिंह राशि में बैठे हों और यदि राहु को देखे या युक्त हों तो मनुष्य राहु की दशा में विना सन्देह दुःखी होता है ॥ ३८ ॥

राहुः प्रीतिमवाप्नोति केतुः प्रीतिं प्रयच्छति ।
राहोः केतोश्च संयोगे फलं तु निश्चयाद् बुधः ॥३९॥

राहु एवं केतु प्रीतिदायक हैं। राहु केतु के संयोग से विद्वान लोग फल का निश्चय करते हैं ॥ ३९ ॥

राहु प्रीति को प्राप्त करता है केतु प्रीति देता है अतः बुद्धिमान पुरुष राहु केतु के योगों को देखकर फल का निश्चय कर निर्देश करें।

त्रिकोणपेन संयोगे विना श्रेयो न विद्यते।
एकेन वा कोणपेन द्वाभ्यां चैव सुखं भवेत् ॥४०॥
तद्भावपस्य दाये तु शत्रुवृद्धिर्न जायते ॥४१॥

त्रिकोणेश के संयोग के विना लाभ (यश) नहीं होता। एक त्रिकोण से या यदि वो त्रिकोणेश से भाव का मालिक युत हो, तो फल अच्छा होता है। भावपति की दशामें शत्रुकी वृद्धि नहीं होती है ॥४०-४१

यद्भावस्था रन्ध्ररिष्फारिनाथा,
यद्भावेशा रन्ध्ररिष्फारिसंस्था।
येषामीशाः संयुता वाऽथ दृष्टा
तत्तद्भावो नाशतामेति नित्यम् ॥४२॥

जिस भाव में अष्टम, द्वादश, षष्ठ का मालिक बैठा हो और जिस भाव का स्वामी ८।.२।६ भाव में बैठा हो या जिस भाव का स्वामी अष्टमेश और द्वादशेश और षष्ठेश से संयुक्त हो या देखा जाये, तो उन-उन भावों का सदा ही नाश होता हैं ॥ ४२ ॥

धनस्थानस्थितो राहुः तदीशः शत्रुभे स्थितः।
तस्मिन् दाये तु हानिः स्यात् पशुधान्यधनादिना ॥४३॥

राहु धन स्थान में स्थित हो और धनेश शत्रु के घर में हो तो धनेश की दशा में धन-धान्य-पशु से हानि होती है ॥ ४३ ॥

यस्मिन् भावाधितेऽप्युच्चे तद्भावो वृद्धिमाप्नुयात्।
यस्मिन् भावाधिपे नीचे तद्भावो नाशमाप्नुयात् ॥४४॥

जिस भाव का स्वामी उच्च स्थान में हो उस भाव की उन्नति करता है और जिस भाव का स्वामी नीच स्थान में हो, तो उस भाव की हानि करता है ॥ ४४ ॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः

स्यात्तद्भावनाथस्य च दाय काले ।

तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः

पापेक्षितः पापसमन्वितो वा ॥४५॥

जन्म काल में नीच स्थान में जो ग्रह बैठे हों या पापग्रह से देखे जाये या पापग्रह के साथ हो जो ग्रह जिस भाव में हो उस भावेश की दशा समय में उस भावोक्त फल का विनाश होता है। ऐसा विद्वान लोग कहते हैं ॥ ४५ ॥

शिव उवाच—

भावयोगश्च कथितः मया देवि सुनिश्चितम् ।

अतः परं पृच्छसि किं तद् वदस्व शुभानने ॥४६॥

शिवजी पार्वती से कहते हैं कि हे देवि ! मैंने इस तरह निश्चित भाव योग को सुनाया, हे शुभानने ! इसके बाद तुम क्या जानना चाहती हो सो कहो ॥ ४६ ॥

पार्वत्युवाच—

नमस्ते देव ! देवेश ! सर्वलोकैकपूजितः ।

एतेषां भावयोगानां का दशा या फलप्रदा ॥४७॥

पार्वती जी बोली—हे देव ! देवेश ! सब लोकों में पूज्य आपको नमस्कार है। इन भावों के योगों का फल किस दशा में होता है। इसे कृपया बतायें ॥ ४७ ॥

शिव उवाच—

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि सर्वलोकोपकारिणि !
दशा च बहवः सन्ति केन्द्रकोणक्षयादयः ॥४८॥
तेषां मध्ये ऋक्षदशा शुभदा फलदा स्मृता ।
यः खगे योगकर्ता स्याद् दशा तस्य फलप्रदा ॥४६॥
तस्माद् ग्रहाणां च बलं सम्यक् संशोध्य बुद्धिमान् ।
कृत्तिकादीनि ऋक्षाणि सूर्यादीनां दशाः स्मृताः ॥५०॥

हे सर्वलोकोपकारिणी दशा को देवी ! आप सुनें । केन्द्र, कोण, अष्टमेश, द्वादशेश एवं रोगेश इत्यादि बहुत दशायें हैं, किन्तु उनके बीच में नक्षत्र की जो दशायें हैं वह शुभ फलदायक हैं। जो ग्रह योग करने वाला है इसकी दशा शुभकारी फल देनेवाली है । इससे विद्वान लोग ग्रहों के बल को भली-भांति संशोधन कर कार्य से परिणत करें । कृतिका नक्षत्रों में सूर्यादि ग्रहों की दशा होती है ॥ ४८-५० ॥

तेषां योगविशेषेण फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ।
राहुकेत्वोश्च संयोगे दृष्टियोगे च जायते ॥५१॥

उन ग्रहों के विशेष योग से फल होता है, इसमें संशय नहीं है, राहु केतु के संयोग से और दृष्टि योग से भी विशेष फल होता है ॥५१॥

ग्रहों के स्थान

स्थानाधिपबलेनापि फलं प्राप्नोत्य न संशयम् ।
राजग्रहौ चन्द्रसूर्यावामात्यो भौम एव च ॥५२॥
लिपिलेखादिभिः सौख्यो गुरुर्मन्त्री विचारतः ।
भार्गवोऽत्यन्तभोगी स्याच्छनिः सेव्याधिको भवेत् ॥५३॥

विना संशय के स्थान स्वामी के बल से फल मिलता है। चन्द्रमा

एवं सूर्य राजा ग्रह है, मंगल मन्त्री ग्रह है, बुध लेखक है और विचार से गुरु मन्त्री हैं, शुक्र विशेष भोगी है, शनि अधिक सेवक है ॥५२-५३॥

यच्च राज्ञा त्वमात्येन देवि ! योगेन जायते ।
तद्योगः पूर्णफलदो ह्यन्येषां स्वल्पमादिशेत् ॥५४॥

हे देवि ! जो योग राजा एवं मंत्री ग्रह से होता है, वह योग पूर्ण फल को देने वाला है, दूसरे ग्रह थोड़ा फल देने वाले हैं ॥ ५४ ॥

ग्रह दशा फल

राश्यादौ योगपतिः नरेन्द्रो दण्डपतिस्तथा ।
मध्ये मण्डलनाथं च ग्रामपतिं च भवनान्ते ॥५५॥
राश्यादौ योगपतिस्तद्दशायामादित एव फलं स्यात् । तथा मध्ये मध्यकाले राशितृतीये भागे तत्काले एवं स्यात् ॥५६

योगाधीश ग्रह दशा के प्रारम्भ में तथा सूर्य भौम दशादि में फल देते हैं, शुक्र-गुरु मध्य में और शनि-चन्द्रमा दशा के अन्त में फल देते हैं, बुध सभी दशाओं में सदा फल देता है ॥ ५५-५६ ॥

अस्तगो यः खगो वाऽपि राहुग्रस्तो यदा भवेत् ।
तत्पाके भावनाशः स्यादिति शास्त्रार्थनिर्णयः ॥५७॥

जो ग्रह अस्त हो या राहु से ग्रस्त हो उसकी दशा में भाव का नाश होता । यह शास्त्र का निर्णय है ॥ ५७ ॥

भावेशाक्रान्तराशीश उच्चस्थशुभवीक्षितः ।
तद्भावेशस्य दाये तु राज्यं भवति निश्चितम् ॥५८॥

यदि भावेशसे वीक्षित राशीश उच्च राशिमें बैठे हों और शुभ ग्रह से देखे जायें तो उस भावेशकी दशामें अवश्य राज्य लाभ होता है ॥५८

भावेशाक्रान्तराशीशो नीचगोऽस्तङ्गतोऽपि वा ।
पापैर्निरीक्षितो वाऽपि तद्भावं नाशमाप्नुयात् ॥५९॥

यदि भावेश से वीक्षित राशि नीच राशि में बैठी या अस्तङ्गत हो या पाप ग्रह से दृष्ट हो तो उस भाव का नाश होता है ॥ ५९ ॥

भावेशाक्रान्तराशीशो राहुग्रस्तो यदा भवेत् ।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति भावनाशश्च जायते ॥६०॥

यदि भावेश से वीक्षित राशीश राहु से ग्रस्त हो, तो उसकी दशा में मरण होता है और उस भाव का नाश होता है ॥ ६० ॥

यद्भावे रन्ध्रपे दृष्टे तत्पतिर्नीचसंस्थितः ।
तत्पाके भावनाशं च भवत्येव न संशयः ॥६१॥

यदि अष्टमेश जिस भाव को देखता हो उस स्थान का स्वामी नीच स्थान में स्थित हो उसका स्वामी नीच स्थान में विराजमान हो तो उसकी दशा में निश्चय भाव का नाश होता है ॥ ६१ ॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्
तद्राशिनाशो यदि स्वोच्चसंस्थः ।
तन्नीचपाके सुखमेति नित्यं तेनेक्षितो
वाऽपि शुभेक्षितो वा ॥६२॥

यदि जन्म काल नीच स्थान में स्थित हो जो ग्रह हो उस राशि का स्वामी उच्च स्थान में स्थित हो या उससे दृष्ट हो या शुभ ग्रह से दृष्ट तो नीच को दशा में सुख होता है ॥ ६२ ॥

उच्चस्थितो जन्मनियो ग्रहः स्यात्,
तद्राशिनाथो यदि नोचसंस्थः ।
तदुच्चपाकेऽशुभं प्रयान्ति भावेक्षितो
वाऽपि विशेतश्च ॥६३॥

यदि जन्म कालिक ग्रह उसके उच्च राशि का स्वामी स्थित हो

वा नीच में स्थित हो तो उस उच्च की दशा में अशुभ फल मिलता है यदि भाव से देखा जाये तो विशेष अशुभ फल मिलता है ॥ ६३ ॥

सप्तमाधिपतौ नीचे रन्ध्रपेण च वीक्षिते ।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति भवत्येव न संशयः ॥६४॥

यदि सप्तमेश नीच का हो और उसे अष्टमेश देखे, तो उसकी (सप्तमेश) की दशा में मृत्यु होती है इसमें कोई संशय नहीं है ॥६४॥

यः खगो दुष्टभावेशो योगपश्च समाश्रितः ।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति सर्वाभीष्टविनाशनम् ॥६५॥

यदि ग्रह का दुष्ट भाव का मालिक और योगाधीश से युक हो तो उसकी दुष्ट भावेश की दशा में मृत्यु होती है और सब अभीष्ट का नाश होता है ॥ ६५ ॥

यः खगः शुभभावेशः पापयुक्तेक्षितोऽपि वा ।
तत्पाके राज्यनाशः स्याद्देहनाशश्च जायते ॥६६॥

यदि जो ग्रह शुभ भाव का स्वामी होकर वह पाप ग्रह के साथ देखा जाये, तो उसकी दशा में राज्य का नाश होता है एवं शरीर का भी नाश होता है ॥ ६६ ॥

बालारिष्ट विचार

संयोगो द्विविधः प्रोक्त ईक्षितः संयुतोऽपि वा ।
तयोर्मध्ये च फलदः पापानामेक्षणं परम् ॥६७॥
शुभानां संयुतः श्रेष्ठमिति शास्त्रविदो विदुः ।
बालारिष्टा च बहवः सन्ति लोके मनीषिणाम् ॥६८॥
तेषां योगाः प्रवक्ष्येऽहं सावधानेन तच्छृणु ॥६९॥

संयोग दो तरह का होता है। एक युत (संधि) दूसरा दृष्टि, इन दोनों में पाप ग्रहों का देखना श्रेष्ठ फल देने वाला होता है और शुभ ग्रहों से संयुक्त होने से श्रेष्ठ फल होता है। ऐसा बुद्धिमान शास्त्र विदों द्वारा कहा गया। संसार में बालारिष्ट बहुत है। ऐसा मनीषी लोग बतलाते हैं, सावधान होकर सुनो, उन योगों को बतलाता हूँ ॥ ६७-६९ ॥

लग्नाधिपो रन्ध्रपसंयुतश्चेत् तृतीयरन्ध्राधिपभावपानाम् ।
द्विसप्तमैकादशभावपानां पाके मृतिं सिद्धिमुपैति जन्तोः ॥७०

यदि लग्नेश अष्टमेश से युत हो, तो लग्नेश की दशा में या तृतीय अष्टम भाव के स्वामी की दशा में या द्वितीय सप्तम ग्यारहवें भाव के मालिक की दशा में मृत्यु होती है ॥ ७० ॥

टिप्पणी—प्राचीन काल में ज्योतिष के धुरन्धर विद्वान मनुष्यों के सम्पूर्ण आयु गणना बिल्कुल ठीक निकाल कर दिन, माह, वर्ष, घटी तक का ब्योरा पहले ही से प्रस्तुत कर विश्व में ख्याति प्राप्त करते रहे यह एक आश्चर्य आज जादू का विषय बना है।

तत्तत्स्थानगतानां च पाके च मरणं भवेत् ।
तेषां च शुभसंयोगे ह्यायुर्वृद्धिः प्रजायते ॥७१॥

उस स्थान स्थित ग्रह (२, ३, ७, ८) की दशा में मृत्यु होती है। यदि शुभ ग्रहों का संयोग हो तो आयु की वृद्धि होती है ॥७१॥

शैशवावस्थाकाले तु स्वल्पदोषश्च हानिकृत् ।
इतरावस्थाकाले तु रोगरूपेण बाध्यते ॥७२॥

शिशु अवस्था में थोड़ा दोष भी हानिप्रद होता है परन्तु दूसरी अवस्था युवा में वही स्वल्प दोष रोग रूप से दोष पहुँचाता है ॥७२॥

इति शिव संहितायां (जातक खण्डम्) सम्पूर्णम् ।

॥ श्रीः ॥

नवनिद्धिः



विनायक-कल्प

एवं

श्री काली शतनाम स्तोत्र तथा
श्री शुक्राचार्य प्रश्नावली सहित

जिसको ज्योतिषाचार्य श्री पं० कैलाशनाथ उपाध्याय द्वारा संशोधित और बाबू सीताराम एडवोकेट प्रवर्तक

सूर्यप्रसाद एण्ड कम्पनी

बड़ा गणेश वाराणसी ने भावार्थ सहित प्रकाशित किया।

पुस्तक मिलने का पता —

(१) श्री बड़ा गणेश पुस्तकालय, बड़ा गणेश, वाराणसी।

(२) श्री सीताराम भवन, के. ५७/१११ नवापुरा, वाराणसी।

प्रथम बार]

[मूल्य २० पैसे

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ श्री विनायककल्पः प्रारम्भः

ओं एकदन्ताय नाथाय मन्त्रसिद्धिकराय च ।
नमोऽस्तुगणराजाय उच्छिष्टाय महात्मने ॥ १ ॥

"अथ श्रीविनायकमन्त्रः ओं क्षां क्षीं ह्रीं ह्रूं क्रौं क्रैं फट् स्वाहा" इति । उच्छिष्टो भूत्वा कृष्णाष्टम्यां कृष्ण चतुर्दश्यां वा अष्टोत्तरशतजपेनसिद्धिर्भवति ।

कृष्ण पक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी को उच्छिष्ट होकर "ओं क्षां क्षीं ह्रीं ह्रूं क्रौं क्रैं फट् स्वाहा" इस मन्त्र को १०८ बार एकाग्र मन से जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। ध्यान रखो। जिस मन्त्र का नित्य जप किया जाय उसका कीलक दूर हो जाता है।

अथाङ्गन्यासः । ओं क्षां हृदयायनमः । ओं क्षीं शिरसे स्वाहा । ओं ह्रीं शिखायैवषट् । ओं ह्रूं कवचाय हुम । ओं क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ओं क्रैं अस्त्रायफट् ।

इस प्रकार पाठ करते समय मूल में जिस जिस अङ्ग का नाम आवे, उसका स्पर्श करना चाहिये ।

नतिथिर्नचनक्षत्रंनोपवासंविधीयते । हन्तिकाय।णिशत्रूणां साधनं तत्र कारणं ॥ २ ॥

शत्रुओं का कार्य नाश करने के लिए तिथि और नक्षत्र आदि शुभ मुहूर्त्त देख के प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं और व्रत भी नहीं करना चाहिये। केवल मन्त्र का साधन ही अच्छी तरह करने से उनके सर्व कार्य नष्ट हो जाते हैं।

निम्बवृक्षोद्भवकाष्टस्य अङ्गुष्टप्रमाणं गणपतिः कार्यः। एकान्ते स्थापयित्वा ईप्सितस्त्रियो नाम लिखेत् अष्टोत्तरशतजापेन सद्य आकर्षणं भवति ।

एक अंगुल के बराबर नीम की लकड़ी लेकर गणेश जी की मूर्त्ति बनावे, उसे एकान्त में स्थापना करके इच्छित स्त्री का नाम लिख २ कर १०८ बार मन्त्र को जपे, तो शीघ्र आकर्षण होता है।

अष्टाविंशति राजवश्यो भवति। गणपतिंस्थापयित्वा राजा-नाम लिखेत्। अष्टोत्तरशतजपेनसद्यो ह्याकर्षणं भवति। गणपति कुक्षिस्थितो जपेदिष्ट सिद्धिर्भवति।

उक्त सिद्ध मन्त्र को २८ बार जप करने से राजा वश में होता है। निम्ब की लकड़ी से बनी हुई गणेश जी की मूर्ति को स्थापित करके राजा का नाम लिखे। १०८ बार जप करने से आकर्षण होता है और गणेश जी की मूर्ति के एक ओर स्थित होकर जप करने से मनोरथ की सिद्धि होती है।

मस्तके कृत्वा अष्टोत्तरशतं जपेत स्वकार्यसिद्धिः। अष्टोत्तरशत कनकपुष्पाणि मन्त्रेण सह विनायकोपरिनिक्षिपेत् स्वकार्यसिद्धिः। राज्ञां चाकर्षणं करोति।

गणेश जी की मूर्त्ति का मस्तक के ऊपर धारण कर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। और धतूरे के १०८ पुष्पों को मन्त्र पढ़कर गणेश जी के ऊपर चढ़ाने से इष्ट सिद्धि होतीं है और राजा का आकर्षण होता है।

स्त्रीणां वामपादपांशु गृहीत्वा स्त्रीप्रतिमां कृत्वा वामहस्ते च गणपतिं गृहीत्वा तस्योपरि पांशुप्रतिमां निक्षिपेदष्टोत्तर शताभि मन्त्रितेन स्त्रीणामाकर्षणं भवति।

स्त्रियों के वायें पैर के नीचे की धूल (मिट्टी) लेकर स्त्री की मूर्त्ति बनावे और वायें हाथ में गणेशजी की मूर्त्ति को धारण करे। इस प्रकार १०८ वार मन्त्र पढ़कर गणेश जी के ऊपर मिट्टी की मूर्त्ति को चढ़ा देने से स्त्रियों का आकर्षण होता है।

वामहस्ते गणपतिं गृहीत्वा अष्टोत्तरशतमन्त्र जपेन पुष्पपत्र-

फलानि यस्मै दीयन्ते सवश्यो भवति गणपतिं स्थाप्य अष्टोत्तर-शत जपेन श्रीखण्डं होमयेत् राजवश्यो भवति। तेन भस्मना तिलतैलेन सह आत्ममुखं लेपयेत् सर्वजनवश्योऽयं प्रयोगः।

वायें हाथ में गणेश जी को लेकर १०८ वार मंत्र से अभिमंत्रित करके पुष्प, फल और पत्र जिसे दिये जायें वह वश में हो जावेगा। और गणपति की मूर्त्ति को स्थापन करके मन्त्र को १०८ वार जपकर चन्दन से होम करे, तो राजा वश में हो। तथा उस होम की भस्म को तिल के तैल में मिलाकर मुख के ऊपर लेप करने से सब वश में हो जाते हैं।

मन्त्रेण सह कनक समिधा होमयेत् सर्वेवश्या भवन्ति।

मंत्र पढ़ पढ़कर धतूरे की समिधाओं से होम करे, तो सब संसार वश में हो जाता है।

अङ्गुष्ठप्रमाणेन तिलकाष्ठसमिधाः कृत्वा होमयेत्। तद्भस्म स्त्रिया वामपादे पुरुषस्य दक्षिणे पादे निक्षिपेत् द्वेष्यो भवति।

तिल के काष्ठ की एक एक अंगुल भर समिधा लेकर मन्त्र पढ़ पढ़कर होम करे और उसकी भस्म को स्त्री के वायें एवं पुरुष के दायें पैर के ऊपर छोड़ दे, तो परस्पर द्वेष हो जाता है।

हवनभस्म तिलतैलेन गौरोचनमिश्रितमञ्जनं करोति यावद-वशिष्टं स्थितं तावद्वश्यो भवति श्वेत विष्णुक्रान्तापुष्पाणि विनायकोपरिनिक्षिपेज्जगद्वश्यो भवति॥

हवन की भस्म में तिल का तैल और गोरोचन मिलाकर नेत्रों में लगाने से सब वश में हो जाते हैं। श्वेत विष्णु कान्ता के फूलों को मन्त्र पढ़ पढ़कर गणेश जी के ऊपर चढ़ाने से सम्पूर्ण संसार वश में हो जाता है।

इति श्री विनायककल्प।

अथ श्री काली शतनाम स्तोत्रम् प्रारम्भः

(ककार वर्णमालाम्)

शतं नाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया वरानने ।
यस्य प्रपठनाद्वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१॥
काली कपालिनी कान्ता कामदा काम सुन्दरी ।
कालरात्रिः कालिका च कालभैरव पूजिता ॥२॥
कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीय स्वभाविनी ।
कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्म प्रकाशिनी ॥३॥
कस्तूरीरस नीला च काम्या काम स्वरूपिणी ।
ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका ॥४॥
कुलकान्ता करालास्या कामार्त्ता च कलावती ।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी ॥५॥
कुलजा कुलकन्या च कलहा कुल पूजिता ।
कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥६॥
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी ।
कुमुदा कृष्ण देहा च कालिन्दी कुलपूजिता ॥७॥
काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कला तथा ।
कृष्ण रूपा कुलगम्या कमला कृष्ण पूजिता ॥८॥
कृष्णाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी ।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा काम जीविनी ॥९॥
कुलस्त्री कार्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका ।
कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी ॥१०॥
कुन्ता च कुमद प्रीता कदम्ब कुसुमोत्सुका ।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्द प्रदायिनी ॥११॥
कुमारीपूजनरता कुमारी गणशोभिता ।
कुमारी रञ्जनरता कुमारी व्रतधारिणी ॥१२॥
कङ्काली कमनीया च कामशास्त्र विशारदा ।
कपालखट्वाङ्गधरा कालभैरवरूपिणी ॥१३॥

कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलासवासिनी।
कात्यायनी कार्यकरी कामशास्त्र प्रमोदिनी ॥१४॥
कामाकर्षण रूपा च कामपीठ निवासिनी।
कङ्किनी काकिनी क्रीड़ाकुत्सिका कलहप्रिया ॥१५॥
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्त्तिवर्द्धिनी।
कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया ॥१६॥
कान्तारवासिनी कान्तिः कठिनाकृष्णवल्लभा।
इति ते कथितन्देवि गुह्याद्गुह्य तरम्परम् ॥१७॥
प्रपठेद्य इदन्नित्यङ्काली नामशताष्टकम्।
त्रिषुलोकेषु देवेशि तस्या साध्यन्न विद्यते ॥१८॥
प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदानिशि।
यः पठेत्परया भक्त्या कालीनाम शताष्टकम् ॥१९॥
कालिका तस्य गेहे च संस्थानङ्कुरुते सदा।
शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जल मध्यतः ॥२०॥
वह्निमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये।
शताष्टकं जपेन्मन्त्रं लभते क्षेम मुत्तमम् ॥२१॥
कालीं संस्थाप्य विधिवत्स्तुत्वा नाम शताष्टकम्।
साधकः सिद्धि प्राप्नोति कालिकायाः प्रसादतः ॥२२॥
इत्युत्तर श्रीमुण्डमालातन्त्रेऽष्टकम् पटले कालीशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्रीकाली ध्यानम्

सिन्दूर कान्तिमसिता भरणां त्रिनेत्रां विद्याक्ष सूत्र मृग पोत वरान् दधानाम्। पार्श्वस्थितां भगवतींमपिकाञ्चनाङ्गीं ध्यायेत्कराब्ज धृत पुस्तक वर्णमालाम् ॥ १ ॥

अक्षस्रजं हरिण पोत मुदग्रटङ्कं विद्यां करै रविरतं दधतीं त्रिनेत्राम्। अर्द्धेन्दुमौलि भरणामरविन्दवासां वार्णेश्वरीं प्रणमतं स्तन भारामखिन्नाम् ॥ २ ॥

श्री शुक्राचार्य प्रश्नावली फलित चक्र

(रमल रहस्य तथा भण्डारभेद प्रकाश से संग्रह)

मं	हि	भ	ग	रु	ज	त	ड	स	ल	सा	अ	स	ल:	लि
म	ह	ई	रू	क	ई	रू	था	न	र	च	शो	कु	गु	स
ल	हो	न्द	ल	श	न	ब	का	अ	प	धा	ल	य	का	ई
लो	ड़े	ई	च	है	म	ऊ	र	श	जी	हो	ठ	वे	भ	दि
नि	त	रो	ह	हा	य	व	आ	प	क	रा	ई	प	श	है
भ	न	ई	प्र	सा	द	री	अ	क	र	म	थे	ल	प	हु
भु	वी	ण	ही	भा	वि	च	जा	अ	कि	रु	ई	प्र	ह	है
रा	य	प	तो	शि	त	भं	घ	जा	वि	स	व	भ	हु	न
स	ता	दि	अ	ला	लि	क	हो	ई	ब	र	ई	से	र	य
मं	श	ष	दी	ह	सु	स	ग	ति	हु	प	अ	ख	वा	ल
रि	जा	क	ग	दा	ई	अ	या	ई	दा	स	ई	गू	छि	वि
मं	न	स	अं	द	क	स	ग	क	म	ड	र	न	रा	ल
र	भा	लि	प्र	सं	ई	प	हु	ई	श	सा	स	छु	र	म
च	गु	द	य	है	त	न	हो	न	त	भा	शो	र	ला	कु
शो	वं	ई	क	वी	ई	स	ध	ग	ये	शु	ढ़ि	गू	ल	व

श्री शुक्राचार्य प्रश्नावली की प्रयोग विधि

पहले प्रश्नकर्त्ता भगवती श्रीकाली की या अपने इष्टदेव की आराधना करें। इसके बाद अपने प्रश्न को स्मरण करते हुए अपनी अंगुली को ध्यानावस्था में चक्र पर रखे। जिस अक्षर पर अंगुली पड़े उसका आठवाँ अक्षर पहले अक्षर के बाद लिखे। इसी प्रकार प्रत्येक आठवें अक्षर को जोड़कर बारह-बारह अक्षर के दो चरण चौपाई का निकाल कर अपने प्रश्न का उत्तर समझ लेवें।

उदाहरण – मान लीजिए, कि आपने प्रश्नावली चक्र के चौथे पंक्ति के पाँचवें खाने के (है) अक्षर पर अंगुली रखा है, तो देखिये इस (है) अक्षर का आठवाँ अक्षर (ठ) पुनः (ठ) का आठवाँ अक्षर (ह) है। फिर (रा) (ई) है। इसी प्रकार देखने से यह चौपाई प्रगट हुआ। "है ठहराई ॥" रवि आराधन कर सुखदाई ॥ अब विचार करने से मालूम हुआ, कि इस चौपाई का पहिला चरण पूरा नहीं है। इसलिये पुनः उसी पहिले के (है) अक्षर से उल्टे क्रम से गिनिये, जिससे चौपाई के दोनों चरण पूर्ण हो जावें। अस्तु गिनने से ज्ञात हुआ, कि उल्टे क्रम से (है) अक्षर का आठवाँ अक्षर (य) है। पुनः (य) का आठवाँ (न-गु-श-ली-ड-भं) आदि है, जिसको उल्टे (विपरीत) क्रम से पढ़ने से "भंडली शगुन यहै ठहराई। रवि अराधन कर सुखदाई ॥"

अतः इसी चौपाई को अपने प्रश्न का उत्तर समझना चाहिये।

इति श्री शुक्राचार्य प्रश्नावली सम्पूर्णम्।

---

* श्री *

अष्टसिद्धिः

हनुमतसाधन तन्त्र

कल्पयुक्त



अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।

अस बर दीन जानकी माता॥

श्रीमहावीर जी के प्रत्यक्ष दर्शन जिसको

बाबू सीताराम एडवोकेट प्रवर्तक

सूर्यप्रसाद एण्ड कम्पनी

बड़ा गणेश वाराणसी ने सम्पादित तथा संशोधित

कर जन साधारण के लाभार्थ सरल हिन्दी

टीका सहित प्रकाशित किया।

पुस्तक मिलने का पता—

श्री सीताराम भवन, के. ५७/१९१, नवापुरा, वाराणसी

मूल्य २० पैसा

श्री गणेशाय नमः । श्री हनुमते नमः ॥

हनुमत्साधन तन्त्रकल्पयुक्त प्रारम्भः

देव्युवाच

शैवानि गाणपत्यानि शाक्तानि वैष्णवानि च ।
साधनानि च सौराणि चान्यानि यानि तानि च ॥
श्रुतानि तानि देवेश त्वद् वक्त्रान्निःसृतानि च ।
किञ्चिदन्यत्तु देवानां साधनं यदि कथ्यताम् ॥१॥

भावार्थ—जगत जननी पार्वतीजी बोलीं हे ईश ! शिवसाधन, गणेश साधन, शक्तिसाधन, विष्णुसाधन, सूर्यसाधन आदि अनेक साधनों की विधि मैंने तुम्हारे पास सुनी है। अब मैं अन्यान्य देवताओं का साधन सुनने की इच्छा करती हूँ, सो आप कहें।

शंकर उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ।
हनुमत्साधनं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥
एतत् गुह्यतमं लोके शीघ्रसिद्धिकरंपरम् ।
जयो यस्य प्रसादेन लोकत्रयजितोभवेत् ॥२॥

शंकर जी बोले—हे देवी इस समय हनुमत्साधन कहता हूँ, सो तुम सावधान होकर सुनो। यह पुण्य देनेवाला तथा घोर पातक का नाश करनेवाला है। इसकी साधनविधि अति गुप्त है तथा तुरन्त सिद्धि को देनेवाली है। इस साधन के बल से साधक तीनों लोकों को विजय करने में समर्थ हो सकता है।

तत्साधनविधिंवक्ष्ये नृणां सिद्धिकरं द्रुतम् ।
बियत् स नरकं हनुमते तदनन्तरं ॥
रुद्रात्मकाय कवचं फड़िति द्वादशाक्षरः ।
एतन्मत्रं मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥
तव स्नेहेन भक्त्या च दासोऽस्मि तव सुन्दरि ।
एतन्मन्त्रमर्ज्जुनाय प्रदत्तं हरिणा पुरा ।
जपेन साधनं कृत्वा जितं सर्वं चराचरम् ॥३॥

उस साधन को जो मनुष्य करे शीघ्र सिद्धि देनेवाला है मैं बतलाता हूँ—नरक से वंचित कर अनन्त श्री हनुमत में विलीन कर देता है। "हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुँ फट" यह बारह अक्षर का मन्त्र जो मैंने कहा इसको विधिपूर्वक गुप्त रखना चाहिये। हे सुन्दरि ! मैं तुम्हारे स्नेह तथा भक्ति से वशीभूत दास हूँ। इस मन्त्र को प्रथम भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है। अर्जुन ने इसी मन्त्र को सिद्ध कर चर और अचर संसार को जीता है।

नदीकूले विष्णुगेहे निर्ज्जने पर्व्वतेवने।
एकाग्रचित्तमाधाय साधयेत् साधनं महत् ॥४॥

नदी के तट पर विष्णु भगवान के मन्दिर में निर्जन स्थान में या पर्वत पर एकाग्र चित्त होकर इस साधन को करें।

ध्यानमाह—महाशैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट घोररावं समुत्सृजन् ॥
लाक्षारसारुणं रौद्रं कालान्तकयमोपमम्।
ज्वलदग्निसन्नेत्रं सूर्य्यकोटिसमप्रभम् ॥
अंगदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम् ॥
एवंरूपं हनुमन्तं ध्यात्वा यः प्रजपेदमनुम।
लक्षजपात्प्रसन्नःस्यात् सत्यं ते कथितं मया ॥५॥

श्री हनुमान जी का ध्यान करने को कहा जाता है। हनुमान जी विशाल पर्वत को उखाड़ कर रावण की ओर धावमान हो रहे हैं और रावण से घोर शब्द करके कहते हैं, कि रे दुष्टात्मन् ठहर ठहर भाग मत, हनुमान जी का वर्ण लाख के रंग के समान लाल है। हनुमान जी का भयानक रूप कालान्तक यम के समान है। इनके दोनों नेत्र अग्नि की तरह प्रकाशमान हैं और देह करोड़ों सूर्य के समान कान्तिवाला है। रुद्ररूपी हनुमान जी अंगद इत्यादि बड़े-बड़े वीरों के साथ हैं। इस प्रकार के हनुमानजी का ध्यान कर उपर्युक्त मन्त्र का जप करे। लक्ष जप

पूर्ण हो जाने पर हनुमानजी उस साधक से प्रसन्न हो जाते हैं। हे देवि! यह हनुमानजी का मन्त्र मैंने सत्य कहा है।

ध्यानैकमात्रतः पुंसां सिद्धिरेवन संशयः। प्रातःस्नात्वा नदीतीरे उपविश्य कुशासने। प्राणायामंषडङ्गञ्च मूलेनसकलञ्चरेत्। पुष्पाञ्जल्यष्टकंदत्वा ध्यात्वारामंससीतकम्। ताम्रपात्रेततः पद्ममष्टपत्रंसकेशरं। रक्तचन्दनघृष्टेन लिखेत्तस्य शलाकया। कर्णिकायांलिखेन्मन्त्रं तत्रावाह्यकपिप्रभुं॥ कर्णिकायां हनुमन्तं ध्यात्वापाद्यादिकंततः गन्धपुष्पादिकंचैव निवेद्यमूलमन्त्रतः। सुग्रीवंलक्ष्मणं चैव अङ्गदंनलनीलकम्। जाम्बुवंतञ्च कुमुदंकेशरिणं दले दले। पूर्वादि क्रमतोदेविपूजयेद् गन्धचंदनैः। पवनञ्चांजनाञ्चैवपूजयेदक्षवामतः। दलाग्रेपु कपिभ्योऽपिपुष्पाञ्जल्यष्टकं ततः। ध्यात्वातुमंत्रराजं वै लक्षंयावत्तुसाधकः। लक्षान्त दिवसं प्राप्य कुर्य्याच्चपूजनंमहत्। एकाग्रचित्तमनसा तस्मिन्पवननन्दने। दिवारात्रौजपं कुर्य्याद्यावत् संदर्शनं भवेत् ॥६॥

भावार्थ—पुरुषों को ध्यानमात्र करने से ही बिना सन्देह सिद्धि होती है किन्तु ध्यान भक्ति सहित होना चाहिये। प्रातःकाल स्नान कर नदी के तट पर कुशा के आसन पर बैठ प्राणायाम और षड्ङ्गन्यास करे। फिर मूल मन्त्र द्वारा आठ अंजली पुष्प प्रदान कर सीता सहित श्री रामचन्द्रजी का ध्यान करे। इसके बाद ताम्रपात्र में हनुमानजी का यन्त्र अंकित करे। पहिले केशर सहित अष्टदल कमल अंकित करना चाहिये। लाल चन्दन की लेखनी (कलम) और घिसे हुए लाल चन्दन के द्वारा यह यन्त्र लिखना चाहिये। कमल की कर्णिकाओं में हनुमानजी को आवाहनपूर्वक पाद्यादि देवे, फिर मूलमन्त्र से गन्ध पुष्पादि निवेदन कर सुग्रीव लक्ष्मण, अंगद, नल, नील, जाम्बुवन्त, कुमुद और केशरी कमल के आठों दलों में इन आठों का पूजन करना चाहिये। हनुमान जी का दक्षिण भाग में और अंजनी जी का बाम भाग में पूजन करना चाहिये।

दल के अग्र भाग में "ओं कपिभ्यो नमः" इस मन्त्र से आठ अंजुली पुष्प चढ़ाना चाहिये। फिर कपिराज का ध्यान करके मन्त्र का जप करे जिस दिन लक्ष जप पूरा हो जावे, उस दिन महापूजा करनी चाहिये। एकाग्रचित्त से रात दिन, हनुमान जी के मन्त्र का जप करने पर हनुमानजी का दर्शन होता है ॥६॥

सुदृढं साधकं मत्वा निशीथे पवनात्मजः।
सुप्रसन्नस्ततो भूत्वा प्रयाति साधकाग्रतः ॥७॥

हनुमानजी साधक को अटलप्रतिज्ञ जानकर रात्रि के समय प्रसन्न हो साधक के निकट आते हैं ॥७॥

यथेप्सितं वरं दत्वा साधकाय कपिप्रभुः।
वरं लब्ध्वा साधकेन्द्रो विहरेदात्मनः सुखम् ॥८॥

हनुमान जी साधक को अभीष्ट वर देते हैं। फिर साधक वर को प्राप्त हो सुखपूर्वक विहार करता है ॥८॥

एतद्धिसाधनं पुण्यं देवानामपि दुर्लभम्।
तव स्नेहान्मयाख्यातं भक्तासिमयि पार्वति ॥९॥

यह परम पुण्य को देनेवाला साधन देवताओं को भी दुर्लभ है। हे देवि! तुम मेरी भक्त हो इसलिये तुम्हारे स्नेह के वशीभूत हो प्रकाश कर रहा हूँ ॥९॥

गारुडतन्त्रेदेवीश्वरसम्वादेहनुमत्साधनम् सम्पूर्णम्।

हनुमतोऽतिगुह्यंन्तु लिख्यते वीरसाधनम्।

ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थाय कृतनित्यक्रियो द्विजः।
गत्वा नदीं ततः स्नात्वा तीर्थमावाह्य चाष्टधा।
मूलमन्त्रं ततोजप्त्वा सिञ्चेदादित्यसंख्यया ॥१॥

भाषार्थ—अब हनुमान्‌जी का अत्यन्त गुप्त वीरसाधन कहा जाता है साधक ब्राह्ममुहूर्त्त में उठ सन्ध्या बन्दनादि नित्य क्रिया करने के उपरान्त

नदी के किनारे जाय स्नान करके तीर्थावाहन पूर्वक आठ बार मूलमन्त्र का जप करे फिर उस जल के द्वारा बारह बार अपने मस्तक पर अभिषेक करे ॥१॥

ततो वाससीपरिधाय, गङ्गातीरे पर्वते वा उपविश्य, ह्रां अंगुष्ठाभ्यांनमः, ह्रां हृदयायनमः इत्यादिना च कराङ्गन्यासौ कुर्य्यात् ॥२॥

भाषार्थ—फिर वस्त्रयुगल धारण कर गंगा के तीर वा पर्वत पर बैठ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ह्रां हृदयाय नमः इस प्रकार से करांगन्यास करे ॥२॥

ततः प्राणायामः अकारादिवर्णानुच्चार्य वामनासा पुटेनवायुं पूरयेत्। पञ्चवर्गानुच्चार्य वायुं कुम्भयेत्। यकारादिवर्णानुच्चार्य दक्षिणनासापुटेनवायुं रेचयेत्। एवंवारत्रयंकृत्वा मंत्रवर्णैरङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥३॥

भाषार्थ—इसके बाद प्राणायाम करे। अकारादि १६ स्वर वर्णों को उच्चारण करके वाम (बायां) नासापुट में वायु को पूर्ण करे। तथा ककारादि मकार पर्यन्त २५ अक्षरों को उच्चारण करके दोनों नासापुटों में वायुको कुम्भक करे अर्थात् रोके। और यकारादि वर्णों को उच्चारण करके दक्षिण नासापुट से वायु को रेचन करे अर्थात् छोड़े। इस प्रकार दक्षिण नासापुट से वायु को खींचकर दोनों नासापुटों से कुम्भक और वाम नासापुट से रेचन करे। फिर वाम नासापुट से पूर्ण दोनों नासापुटों से धारण और दक्षिण से रेचन करे। इस प्रकार तीन वार प्राणायाम कर मन्त्र के अक्षरों से अंगन्यास पूर्वक ध्यान करे ॥ ३ ॥

ध्यायेद्रणेहनुमंतं कोटिकपि समन्वितम्। धावन्तं रावणं जेतुं दृष्ट्वासत्वरमुत्थितम्। लक्ष्मणञ्च महावीरं पतितं रणभूतले। गुरुञ्च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरुपर्वतम्। महाकारैः सदर्पैश्च कम्पयंतं जगत्त्रयम्। आब्रह्माण्डं समावाप्य कृत्वाभीमं कलेवरम्। इति ध्यात्वा षट्सहस्रं जपेत् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—हनुमान्‌जी संग्राम के बीच में कोटि अर्थात् असंख्य बानरों से युक्त हैं। महावीरजी रावण को पराजय करने के निमित्त धावित हो रहे हैं महावीरजी को देखकर रावण कम्पायमान हो रहा है। महावीर लक्ष्मण रणभूमि में गिरे हुए पड़े हैं, लक्ष्मणजी को इस प्रकार देख हनुमान्‌जी क्रोध के साथ महापर्वत को उखाड़ घमंड के साथ हाहाकार ध्वनि से तीनों लोकों को कम्पित कर रहे हैं। हनुमान्‌जी ब्रह्माण्ड व्यापी भीम कलेवर को धारण किये हुए स्थित हैं। इस प्रकार ध्यान करके ६००० हजार जप करना चाहिये ॥ ४ ॥

अस्यमन्त्रः। स्वबीजं पूर्वमुच्चार्य पवनञ्चततो वदेत्। नन्दनञ्च ततोदेयंकेऽवसानेऽनलप्रिया। दशाक्षरोऽयमनुप्रोक्तो नराणां सुरपादपः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—हंपवननन्दनाय स्वाहा यह दश अक्षरों का मंत्र मनुष्यों के पक्ष में कल्प वृक्ष के स्वरूप है ॥ ५ ॥

सप्तमदिवसेदिबारात्रिं व्याप्मजपेत्, ततो महाभयंदत्वात्रिभागशेषेषु नियतमागच्छति। साधको यदिमायांतरति, तदेप्सितं वरं प्राप्नोति ॥ ६ ॥

छः दिन इस प्रकार जप करके सातवें दिन दिनरात जप करना चाहिये। इस प्रकार जप करनेपर रात्रि के चौथे पहर में महाभय प्रदर्शन पूर्वक निश्चय हनुमानदेव साधक के समीप आगमन करते हैं। यदि साधक माया को परित्याग करने में समर्थ हो तो अभिलषित वर प्राप्त कर सकता है ॥६॥

विद्यांवापिधनंवापि राज्यंवाशत्रुनिग्रहम्।
तत्क्षणादेवचाप्नोति सत्यंसत्यं सुनिश्चित्तम् ॥७॥

अर्थ—विद्या को, धन को, राज्य को तथा शत्रु निग्रह को उसी समय प्राप्त होता है सत्य है सत्य है भले प्रकार निश्चय किया हुआ है ॥७॥

इति हनुमत्कल्पस्यभाषाटीका समाप्त।

———

ओंकार प्रेस, काशी।

श्री अन्नपूर्णा तन्त्र

अर्थात्

धन प्राप्ति के सफल उपाय



जिसको श्री पं० कैलाशनाथ ज्योतिषाचार्य ने संशोधित तथा
बाबू सीताराम एडवोकेट प्रवर्तक

सूर्य प्रसाद एण्ड कम्पनी

बड़ा गणेश वाराणसी ने सम्पादित कर जन साधारण
के लाभार्थ सरल हिन्दी टीका सहित प्रकाशित किया।

पुस्तक मिलने का पता—
श्री सीताराम भवन के. ५७।१६१, नवापुरा, वाराणसी।

॥ श्री सिद्धि विनायक प्रसन्नोऽस्तु ॥

॥ श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ॥

श्री अन्नपूर्णा-तन्त्र प्रारम्भः

अन्नपूर्णेश्वरीमन्त्रं वक्ष्येऽभीष्टप्रदायकम् ।
कुबेरो यमुपास्याशु लब्धवान्निधिनाथताम् ॥ १ ॥

भावार्थ– तन्त्र शास्त्रामृत इच्छुक पाठक गण को सम्बोधन देकर भगवान् श्री शंकर जो कहते हैं, कि अब हम सम्पूर्ण मनोरथों का परिपूर्ण करने वाले अन्नपूर्णा भगवती का मन्त्र कहते हैं। यह वह मन्त्र है, जिस मन्त्र से अन्नपूर्णा की आराधना करके कुबेर बहुत ही शीघ्र सम्पूर्ण खजाने का मालिक हो गये थे।

शम्भोस्सख्यं दिगीशत्वं कैलाशाधीशतामपि
वेदादिर्गिरिजा पद्मा मन्मथो हृदयं भग—॥२॥
वतिमाहेश्वरी प्रान्तेन्नपूर्णे दहदाङ्गना ।
प्रोक्ता विंशतिवर्णोऽयं विद्यास्याद्द्रुहिणो मुनि ॥ ३ ॥

भावार्थ—इसी मन्त्र के प्रभाव से कुबेर महादेव जी के मित्र हुए दिग्पाल और कैलाश के नाथ भी इसी मन्त्र के उपासना करने से हुए थे ॥२–३॥

अथ मन्त्रोद्धार—"ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा"।

भावार्थ - यह बीस वर्णात्मक भगवती अन्नपूर्णा का मन्त्र है इसका भेद जानने से मनुष्यों के सब मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं।

कृतिछन्दोऽन्नपूर्णेशी देवता परिकीर्त्तिता। अस्य अन्नपूर्णेश्वरीमन्त्रस्य द्रुहिण ऋषिः, कृतिछन्दः, अन्नपूर्णेश्वरी देवता, ममाखिलसिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः ॥ ४ ॥

भावार्थ—इस अन्नपूर्णा मन्त्र के ब्रह्माजी, ऋषि, कृतिछन्द, अन्नपूर्णेश्वरी देवता और अपने सम्पूर्ण मनोरथ की सिद्धि के लिये जप करने में विनियोग है ॥ ४ ॥

अथांगन्यासः—ओं अस्य श्री अन्नपूर्णेश्वरी मन्त्रस्य द्रुहिण-ऋषि इति शिरसि। कृतिश्छन्द इति मुखे। अन्नपूर्णेशी देवता इति हृदये। हुँ बीजं फःशक्तिः इति गुह्ये। स्वाहा कीलकामिति पादयो ममाखिलसिद्धयर्थे जपे विनियोगः इति सर्वाङ्गे ॥५॥

भावार्थ—इस प्रकार मूल में लिखी विधि के अनुसार अङ्गन्यास करे अंगन्यास करने की विधि है कि मूलोक्त-विधि पढ़ के जिस-जिस अङ्ग का नाम आता हो उसका स्पर्श करे ॥ ५ ॥

अथ ध्यानम्

तप्तस्वर्णनिभा शशांकमुकुटा रत्नस्वराभासुरा। नानारत्नविराजिता त्रिनयना भूमीरमाभ्यां युता। दर्वी हाटकभाजनञ्च दधतीं रम्योच्चपीनस्तनी नृत्यन्तं शिवमाकलय्य मुदिता ध्येयान्नपूर्णेश्वरीं ६

भावार्थ—अग्नि में तपाये हुए लाल सुवर्ण के तुल्य कान्ति वाली चन्द्रमा के समान स्वच्छ मुकुट धारण करे, रत्नों की निर्मल कान्ति के समान शुक्ल वर्ण, अनेक प्रकार के रत्न एवं रत्नजटित आभूषणों से सुशोभित, तीन नेत्रों को धारण करने वाली, अपने अनन्य भक्तों के लिए भूमि और लक्ष्मी देने के लिए तत्पर, दाहिने हाथ में दर्वी (पली) और वाम हाथ में स्वर्ण का पात्र धारण करने वाली, ऊँचे-ऊँचे स्तनों से युक्त और मंगल मूर्त्ति महादेव जी को नृत्य करते देख अत्यन्त प्रसन्न हुई। ऐसी भगवती अन्नपूर्णा का ध्यान करना चाहिए ॥ ६ ॥

लक्षं जपोऽयुतं होमश्चरुणा घृतसंयुता।
जपादिनवशक्त्याढ्ये पीठे पूजासमीरिता ॥ ७ ॥

भावार्थ—इस मन्त्र का एक लाख जप और दश हजार होम करने से सिद्धि होती है, यह हवन हविष्यान्न में घृत मिलाकर करना चाहिए।

बाद जपादि नवशक्ति सम्पन्न सिंहासनके ऊपर पूजन करना चाहिए ॥७॥

अथ यन्त्रकथनम्

त्रिकोणवेदपत्राष्टपत्रषोडशपत्रके।
भूपुरेणयुते यन्त्रे प्रदद्यान्माययासनम् ॥ ८ ॥

भावार्थ—बीच में त्रिकोण आकार बनाकर उसके चारों ओर चार कमल दल बनावे, फिर उसके ऊपर अष्टदल फिर षोडश दल का कमल लिखकर उसे भूपुर से युक्त करे, ऐसा यन्त्र बनाकर उसके ऊपर अन्नपूर्णा को आसन दे ॥ ८ ॥

अग्न्यादिकोणत्रितये शिववाराहमाधवान् ।
अर्चयेत्स्वस्वमन्त्रैस्तु प्रोच्यन्ते मनवस्तुते ॥ ९ ॥

भावार्थ—अन्नपूर्णा यन्त्र में अग्नि इत्यादि जो तीन कोण हैं उनमें यथाक्रम से शिव, वाराह तथा माधव का इन्हीं मन्त्रों द्वारा अलग-अलग पूजन करे, क्योंकि यह मनु कहलाते हैं ॥ ९ ॥

प्रणवो मनुचन्द्राढ्यं गगनं हृदयं शिवा ।
मारुतः शिवमन्त्रोऽयं सप्तार्णः शिव पूजने ॥ १० ॥

भावार्थ—यह सप्तार्ण शिव मन्त्रोद्धार हैं अर्थात् 'ओं ह्रीं नमः शिवायेति सप्तार्णः' इस मन्त्र से अन्नपूर्णा यन्त्र में मंगलमूर्त्ति शिव जी का पूजन करे ॥ १० ॥

अथ वाराह मन्त्रोद्धारः

तारं नमोभगवते वाराहार्घीशयुग्वसुः ।
पाप भूर्भुवंर्जलं सर्गि स्वःशूरः कामिकाचये ॥ ११ ॥
भूपतिस्त्वंच मे देहि ददायय शुचिप्रिया ।
त्रयस्त्रिंशद्वर्णमन्त्रः प्रोक्तो वाराह पूजने ॥ १२ ॥

अर्थात्—ओं नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवः स्वपतय भूपतित्वं मेदेहि ददायय स्वाहेति ।

भावार्थ—इस तेंतीस वर्णात्मक मन्त्र से अन्नपूर्णा यन्त्र के दूसरे कोण में भगवान वाराह का पूजन करे ॥ ११–१२ ॥

अथ माधव मन्त्रोद्धार

प्रणवो हृदयं नारायणाय वसुवर्णकः ।
नारायणार्चने मन्त्रः षडंगानिततोऽर्चयेत् ॥ १३ ॥

भावार्थ—इसके बाद अन्नपूर्णा यन्त्र के तीसरे कोण में "ओं नमो नारायणाय" इस अष्टाक्षर मन्त्र से साक्षात् श्री विष्णु भगवान् की अर्चना करे। बाद उपरोक्त तीनों मन्त्रों को क्रम से पढ़कर पूर्वोक्त विधि से अंग न्यास करे ॥ १३ ॥

धरां वामे त्वनुना दक्षभागेश्रियं तथा ।
अन्नं मह्यन्तमित्युक्त्वा मे देह्यन्नाधिपार्णका ॥१४॥
तयेममान्नं प्राणान्ते दापयानलसुन्दरी ।
द्वाविंश त्यक्षरोमन्त्रो भूमीष्टौ भूमिसंपुटः ॥१५॥
लक्ष्मी पुटस्तत्पूजायां स्मृतिर्लमनुचन्द्रयुक् ।
भुवो वीजं वाह्निशांति विन्दुयुक्तो वकः श्रियः ॥१६॥

"ग्लौं अन्नं मह्यन्नं मेदेह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा ग्लौम्" ॥ १७ ॥

भावार्थ—इस मंत्र को भूवीज (ग्लौम्) और लक्ष्मी वीज (श्रीम्) से संपुटकर दाहिनी ओर लक्ष्मी और बायीं ओर भूमिका पूजन करे ॥१४ १७

मन्त्रादिस्थचतुर्वीजपूर्विकापरिपूजयेत् ।
शक्तीश्चतस्रो वेदास्रेपरा च भुवनेश्वरी ॥ १८ ॥
कमला शुभगा चेति ब्राह्मयाद्या अष्टपत्रगाः ।

भावार्थ—फिर वीज अक्षर समन्वित नीचे लिखे चार शक्तियों को चार दलों स्थापना करे। यथा "ओं परायै नमः १", "ह्रीं भुवनेश्वर्यै

नमः २', "श्रीं कमलायैनमः ३", 'क्लीं शुभगायैनमः ४ ॥१८॥ फिर ब्राह्मी १ माहेश्वरी २ कौमारी ३ वैष्णवी ४ वाराही ५ इन्द्राणी ६ चामुण्डा ७ भुवनेश्वरी ८ इनको अष्टदल स्थापन कर पूजन करना चाहिये।

षोडशारेऽमृताचैवमानदातुष्टिपुष्टयः ॥ १९ ॥
प्रीतीरतिर्ह्रीः श्रीश्चापि स्वधा स्वाहादशम्यथ।
ज्योत्सना हैमवतीछाया पूर्णिमासहनित्यया ॥२०॥
अमावास्येति संपूज्या मन्त्रशेषार्ण पूर्विकाः।
भूपुरे लोकपालाः स्युस्तदस्त्राणि तदग्रतः ॥२१॥

भावार्थ—षोडशदल में श्रं अमृतायै नमः १ मां मानदायै नमः २ तुं तुष्ट्यै नमः ३ पुं पुष्ट्यै नमः ४ प्रीं प्रीत्यै नमः ५ रं रत्यै नमः ६ ह्रीं ह्रियै नमः ७ श्रीं श्रियै नमः ८ स्वं स्वधायै नमः ९ स्वां स्वहायै नमः १० ज्यों ज्योत्स्नायै नमः ११ हैं हैमवत्यै नमः १२ छां छायायै नमः १३ पूं पूर्णिमायै नमः १४ नि नित्यायै नमः १५ श्रं अमावास्यायै नमः १६ इस प्रकार इनका न्यास कर पूजन करे भूपुर में लोकपालों का पूजन कर उनके अग्र भाग में अस्त्रों का पूजन करना चाहिये ॥ १९–२१ ॥

इत्थं जपादिभिः सिद्धे मन्त्रेऽस्मिन् धनसञ्चयै।
कुवेरसदृशोमन्त्री जायते जनवन्दितः ॥२२॥

भावार्थ—इस तरह जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है तब उस साधक के पास कुबेर के समान धन इकट्ठा हो जाता है और लोग उसे वन्दना करने एवं अपना अधिष्ठाता मानने लगते हैं ॥२२॥

श्री अन्नपूर्णा के अन्य मन्त्र

"ओं ह्रीं नमः भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा" इत्यष्टादशवर्णः ॥ २३ ॥ "ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः भगवति माहेश्वरि-ममाभिमतमन्नं देहि देहि अन्नपूर्णे स्वाहा" इत्येकत्रिंशद्वर्णः ॥२४

"ओं श्रीं ह्रीं नमो भगवति प्रसन्नपारिजातेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहेति चतुर्विंशति वर्णाः" ॥ २५ ॥ "ओं श्रीं ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि प्रसन्न वरदे अन्नपूर्णे स्वाहा" इति पञ्चविंशति-वर्णः ॥ २६ ॥

भावार्थ—इन मन्त्रों में से सिर्फ एक मन्त्र के द्वारा पूजन करने से भी धन एवं सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि होती है ॥ २३–२६ ॥

इति भाषानुवाद सहित श्री अन्नपूर्णा तन्त्र समाप्तः ।

आपके लिये नवीन भेंट

'श्री अन्नपूर्णा-तन्त्र'—धनी बनने की सफल कुञ्जी मूल्य २० पैसे

'श्री विनायक कल्प'—शत्रुओं का सर्व कार्य नाश करने के लिए एवं आकर्षण तथा वशीकरण की सर्वसिद्धि प्रत्यक्ष फलदायक अपूर्व प्रयोग मूल्य २० पैसे।

'श्री हनुमत्साधन तन्त्र (कल्प युक्त' - श्री हनुमान जी के भक्तों के लिये अवश्य संग्रहणीय है। मूल्य २० पैसे।

'श्री शिवशतक'—शीघ्र ही शिवजी को प्रसन्न करने वाली अपूर्व पुस्तक मूल्य २५ पैसे।

'दो सौ वर्षों का अद्भुत स्थाई कैलेण्डर' —इसकी मदद से सन् १८०१ ई० से सन् २००० ई० तक के किसी भी तारीख का दिन इत्यादि बड़ी सरलता से जाना जा सकता है। मूल्य २५ पैसे

'जादूगर'—प्रत्यक्ष चमत्कार दिखलाने वाली अद्भुत पुस्तक मू० १)५०

'प्रश्नावली शतक'—सौ प्रश्नाङ्कों के सटीक उत्तर। मू० ५० पैसे।

'भाग्य फल-प्रकाशिका'— प्रश्नावली पुस्तिका। मू० ३० पैसे।

'श्री शुक्राचार्य प्रश्नावली'—प्रश्न ग्रन्थ। मू० २० पैसे।

'रमल-सार-प्रश्नावली' मू० २५ ,,

'रमल दिवाकर' मू० रु० ४)५०

'रमल दिवाकर की कुञ्जी' मू० रु० ४)

'श्री काली शतनाम स्तोत्र' (ककार वर्णमाला) मू० २० पैसे

'नवग्रह-वार-व्रत-विधि'—नवग्रह शान्ति के लिए आवश्यक वार-व्रत-विधियाँ सम्पूर्ण विधान और व्यवस्था के साथ मू० २५ पैसे।

सब प्रकार के पुस्तकों के मिलने का पता

१—श्री बड़ा गणेश पुस्तकालय, बड़ा गणेश वाराणसी

२—उपन्यास बहार आफिस, राजघाट, काशी।

३—लक्ष्मी पुस्तकालय, २६।२ पीली कोठी, कानपुर।

हर प्रकार के मकान सम्बन्धी पदार्थों के विक्रेता—

सूर्य प्रसाद एण्ड कंपनी बड़ा गणेश, वाराणसी।

उपाध्यायजी-कृत

आश्चर्यजनक प्रश्नावली

卐 [४० प्रश्नों के ६४० उत्तर] 卐

© ज्योतिर्विद्-आचार्य

श्री कैलाशनाथ उपाध्याय

[जनप्रिय-लेखक]

मूल्य दो रुपये



प्रथम संस्करण १९७१

© प्रकाशक

श्रीमती कलावती विशारद

के. २१/८ नारायणदीक्षित लेन

वाराणसी-१-उ० प्र०

* तस्मै श्रीगुरवे नमः *

"जब मैं १२ वर्ष का था, उस समय चिन्ताहरण जन्त्री के प्रवर्त्तक रमलसम्राट् श्रीमान् पं० बचानप्रसादजी त्रिपाठी अपने कसमण्डा स्टेट स्थित आश्रम में शिक्षार्जन हेतु लिवा गये। वहाँ उनकी देख-रेख में ज्योतिष-रमल एवं तन्त्र-शास्त्र की विधिवत्-प्रयोगात्मक शिक्षा मुझे प्राप्त हुई। पूज्य गुरुदेव के चरणारविन्द में अतीव आनन्द की उपलब्धि हुई। जो कुछ विद्यार्जन कर सका—वह सब पूज्य गुरुदेव की ही देन है। खगोल-विद्या एवं गणित-ज्योतिष के क्षेत्र में चिन्ताहरण-जन्त्री के सम्पादक श्रीबाबू जगजीवनदासजी गुप्त से भी बहुत कुछ सीखना पड़ा। यह कहना अत्युक्ति न होगा कि फलित कहने की अपेक्षा गणित-ज्योतिष के ठोस ज्ञानार्जन में श्रीगुप्ताजी को अपना आत्मीय गुरु मानकर मैंने एकलव्यवत् आचरण किया है। मेरी सभी पुस्तकें और यह प्रश्नावली गुरु-द्वय की प्रेरणा का प्रतिफल है—अतः प्रस्तुत प्रश्नावली गुरु-द्वय के पादाम्बुजों में सादर समर्पित है।"

श्रद्धावनत—

कैलाश

क्रम-संख्या	प्रश्नों की नामावली
१	मेरी मनोकामना पूर्ण होगी या नहीं ?
२	इस वर्ष मेरी उन्नति होगी या नहीं ?
३	मेरे लिए यह वर्ष कैसा रहेगा ?
४	मेरा तबादिला (ट्रान्सफर) होगा या नहीं ?
५	खोई हुई (नष्ट) वस्तु मिलेगी या नहीं ?
६	मेरी यात्रा सफल होगी या नहीं ?
७	यह विवाह हितकर होगा या नहीं ?
८	वर्तमान कष्ट से छुटकारा कब मिलेगा ?
९	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं ?
१०	कर्ज की पूर्त्ति कब तक हो जायेगी ?
११	अमुक कार्य में हानि होगी या लाभ ?
१२	भागा हुआ प्राणी किस हालत में है ?
१३	परीक्षा में पास हो जाऊँगा या फेल ?
१४	मेरे लिए नौकरी ठीक रहेगी या व्यापार ?
१५	भूमि में गड़ा धन मिलेगा या नहीं ?
१६	जो स्वप्न देखा है, उसका फल क्या है ?

१७ परदेश गया व्यक्ति कब तक आवेगा ?
१८ अमुक व्यक्ति विश्वसनीय है या नहीं ?
१९ अमुक रोगी अच्छा होगा या नहीं ?
२० अमुक वस्तु में तेजी आयेगी या मन्दी ?
२१ मेरा सोचा हुआ काम सफल होगा या नहीं ?
२२ मेरे भाग्य में विद्या है या नहीं ?
२३ मुझे नौकरी मिल जायेगी या नहीं ?
२४ साझेदारी के रोजगार में लाभ होगा या हानि ?
२५ यह खबर झूठी है या सच्ची ?
२६ इस गर्भ से पुत्र होगा या पुत्री ?
२७ मुकदमा में जीत होगी या हार ?
२८ क्या मेरे मकान में कोई दोष है ?
२९ गिरफ्तार प्राणीं छूटेगा या सजा पायेगा ?
३० अमुक व्यक्ति से मेरा काम बनेगा या नहीं ?
३१ इस रोगी को रोग है या कोई बाधा ?
३२ यह जायदाद मेरे लिए कैसा रहेगा ?
३३ मेरा आज का दिन कैसा बितेगा ?

३४ अमुक व्यक्ति को सन्तान होगा या नहीं ?
३५ अमुक प्राणी का विवाह होगा या नहीं ?
३६ मेरी लाटरी निकलेगी या नहीं ?
३७ मेरा भाग्योदय कब होगा ?
३८ जो काम बिगड़ गया है—क्या वह बनेगा ?
३९ मेरे पूरे परिवार के लिए यह वर्ष कैसा है ?
४० अमुक स्थान से पत्रोत्तर आवेगा या नहीं ?

❀ अँगुली रखने का सिद्ध यन्त्र ❀

मंगल	सूर्य	वरुण	यम
शनि	अग्नि	वायु	बुध
राहु	जल	पृथ्वी	गुरु
केतु	चन्द्र	इन्द्र	शुक्र

❀ प्रश्नावली की प्रयोग-विधि ❀

जो प्रश्न करना हो, उसे पहले प्रश्नों की नामावली में तलाश करें। जब उसमें आप का प्रश्न मिल जाय—तो उस प्रश्न की क्रम-संख्या आप याद रख लें। फिर अपने पूज्य देवता का स्मरण करके उपरोक्त सिद्ध-यन्त्र के किसी कोष्ठक में अँगुली रखें। जिस कोष्ठक में आपकी अँगुली पड़े—वही आपके प्रश्न-स्वामी हैं। अब आप अगले पृष्ठों में अपने प्रश्न वाले क्रम-संख्या के पृष्ठ में [illegible] स्वामी की लाईन में प्रश्न [illegible] पढ़ें।

❀ उदाहरण ❀

जैसे—किसी ने प्रश्न किया कि 'मेरी यात्रा सफल होगी या नहीं ?' प्रश्नों की नामावली में यह ६ क्रम-संख्या का प्रश्न है। अब उसने सिद्ध यन्त्र के 'शुक्र' कोष्ठक में अँगुली रक्खा तो प्रश्न का स्वामी शुक्र हुआ, अतः क्रम-संख्या ६ के प्रश्नोंत्तर वाले पृष्ठ में शुक्र के सामने देखा तो जबाव मिला कि "कुछ सफल होंगे और कुछ असफल।" इसी प्रकार प्रत्येक प्रश्न का उत्तर सभी लोग निकाल सकते हैं। कृपया एक व्यक्ति एक दिन में एक प्रश्न का एक ही बार उत्तर निकालें। कौतुहल या मनोविनोद की दृष्टि से प्रश्नावली का दुरुपयोग करने पर विद्या तथा विधान दोनों ही क्षेत्र में दण्ड के भागी होंगे।

प्रश्न क्रम-संख्या १ के उत्तर

सूर्य–आपकी मनोकामना अवश्य पूरी होगी।
चन्द्र–मनोकामना पूर्ण होने में सन्देह है।
मंगल–शत्रु-बाधा से मनोकामना पूरा नहीं होगा।
बुध–कामना की पूर्ति देर से होगी।
गुरु-किसी की मदद से कामना पूरी होगी।
शुक्र–कामना की सिद्धि में रुकावट है।
शनि–मनोकामना पूरी नहीं हो सकती।
राहु–मनोकामना सिद्धि में कोई स्त्री बाधक हैं।
केतु–अधिक देर से कामना पूर्ण होगी।
इन्द्र–कामना पूरी होगी, चिन्ता मत करो।
वरुण–कामना की पूर्ति में ग्रह-बाधा है।
यम–कुछ पूरी होगी—कुछ अधूरी रहेगी।
अग्नि–कामना की सिद्धि में विलम्ब है।
वायु–मनोकामना पूर्ण होना मुश्किल है।
जल–कामना-पूर्ति में घर के लोग बाधक हैं।
पृथ्वी–मनोकामना पूरी हो जायेगी।

प्रश्न क्रम-संख्या २ के उत्तर

सूर्य—इस वर्ष उन्नति की आशा नहीं है।
चन्द्र—राहु खराब होने से उन्नति नहीं होगी।
मंगल—उन्नति की कोई आशा नहीं है।
बुध—रोजगार में उन्नति होगी, नौकरी में नहीं।
गुरु—उन्नति का पूर्ण आशा रख सकते हैं।
शुक्र—कुछ उन्नति होगी, कुछ अवनति।
शनि—उन्नति में अनेक प्रकार की बाधायें आयेंगी।
राहु—इस वर्ष उन्नति की आशा मत करो।
केतु—उन्नति में ग्रह-बाधा पड़ेगी।
इन्द्र—इस वर्ष अवश्य ही उन्नति होगी।
वरुण—आशातीत उन्नति होगी।
यम—उन्नति की कोई आशा नहीं है।
अग्नि—तरक्की की आशा छोड़ दो।
वायु—उन्नति में दुश्मन बाधक होंगे।
जल—कुछ उन्नति की आशा रख सकते हो।
पृथ्वी—साधारण तरक्की के योग पाये जाते हैं।

प्रश्न क्रम-संख्या ३ के उत्तर

सूर्य—यह वर्ष आपके लिए ठीक नहीं है।

चन्द्र—इस साल सुख-शान्ति मिलेगी।

मंगल—कष्ट, चिन्ता और अपव्यय बढ़ता जायेगा।

बुध—पारिवारिक कष्ट, मनोव्यथा बनी रहेगी।

गुरु—बुद्धि में गड़बड़ी, पैसे की कमी पड़ेगी।

शुक्र—यात्रा से इस वर्ष ज्यादा हानि होगी।

शनि—रोजगार-नौकरी के लिए वर्ष उत्तम है।

राहु—इस वर्ष स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा।

केतु—यह साल आमदनी के लिए विशेष खराब है।

इन्द्र—इस साल वाहन-दुर्घटना का भय है।

वरुण—मानसिक परेशानी इस साल बढ़ेगी।

यम—रुपये-पैसे का लाभ कम, खर्च ज्यादा होगा।

अग्नि—इस वर्ष चिन्ता, कष्ट एवं रोग बढ़ेगा।

वायु—ग्रहशान्ति करावें—यह वर्ष विशेष खराब है।

जल—इस साल दुःख-सुख बराबर बना रहेगा।

पृथ्वी—वर्ष उत्तम है, किन्तु धन की चिन्ता रहेगी।

प्रश्न क्रम-संख्या ४ के उत्तर

सूर्य—तबादिला का पूर्ण योग है।

चन्द्र—पूर्वोत्तर में तबादिला का योग है।

मंगल—तबादिला होते-होते रुक जायेगा।

बुध—वर्षान्त में तबादिला का चान्स मिलेगा।

गुरु—तबादिला की कोई उम्मीद नहीं है।

शुक्र—पदोन्नति के साथ तबादिला होगा।

शनि—तबादिला की आशा छोड़ दो।

राहु—इस वर्ष तबादिला नहीं होगा।

केतु—तबादिला का आदेश होकर रुक जायेगा।

इन्द्र—पश्चिमोत्तर दिशा में तबादिला होगा।

वरुण—दक्षिण दिशा में तबादिला का योग है।

यम—पूर्व दिशा में तबादिला का योग है।

अग्नि—तबादिला नहीं होगा।

वायु—तबादिला की आशा नहीं है।

जल—उत्तर दिशा में आशा रख सकते हैं।

पृथ्वी—पश्चिम दिशा की ओर तबादिला होगा।

तजै दुष्ट नहिं दुष्टता, करौ कितौ उपकार।
हवन करत कर दहत ज्यों, दहन भूमि करतार

मिथुन और कन्या राशि वालों को ग्रहशान्ति एवं भाग्योदय के लिए सिद्ध यन्त्र का मूल्य १७) रुपये।

प्रश्न क्रम-संख्या ५ के उत्तर

सूर्य—नष्ट-वस्तु शीघ्र ही मिल जायेगी।
चन्द्र—खोई वस्तु सुरक्षित है, मिलेगी।
मंगल—नष्ट-वस्तु मिलने की कोई आशा नहीं है।
बुध—नष्ट-वस्तु चोरी हुआ है, नहीं मिलेगा।
गुरु—काफी दिन बाद नष्ट-वस्तु का पता चलेगा।
शुक्र—छ दिनों में पता चल जायेगा।
शनि—नष्ट-वस्तु मिलने की आशा छोड़ दो।
राहु—कई चोरों के हाथ में हैं, नहीं मिलेगा।
केतु—निश्चित मिलेगा—धीरज रखो।
इन्द्र—आशा है कुछ दिन बाद अवश्य मिल जायेगा।
बरुण—मिल जायेगा, पता लगाओ।
यम—एक सप्ताह तक न मिला तो आशा छोड़ दो।
अग्नि—मिलने की उम्मीद छोड़ दो।
वायु—गहरे चोर ने हाथ मारा है, नहीं मिलेगा।
जल—खोई वस्तु का मिलना मुश्किल है।
पृथ्वी—१५ दिन बाद मिलने की आशा है।

कर्क राशि वालों को ग्रह शान्ति एवं भाग्योदय के लिए सिद्ध यन्त्र का मूल्य १०) रुपये

प्रश्न क्रम-संख्या ६ के उत्तर

सूर्य—यात्रा सफल होना मुश्किल है।
चन्द्र—यात्रा सफल होने में सन्देह है।
मंगल—यात्रा में सफलता मिलना सन्देहास्पद है।
बुध—यात्रा सम्बन्धी कार्य सफल होगा।
गुरु—यात्रा में सफलता मिलना असम्भव है।
शुक्र—कुछ सफल होंगे और कुछ असफल।
शनि—यात्रा में पूर्ण सफलता मिलेगी।
राहु—यात्रा में सफलता की कुछ आशा है।
केतु—यात्रा मत करो, हानि का भय है।
इन्द्र—यात्रा में झगड़ा-झंझट एवं हानि संभव है।
वरुण—इस यात्रा से कार्य-सिद्धि की आशा छोड़ दो।
यम—सफलता में दुविधा है।
अग्नि—यात्रा में नुकसान होगा।
वायु—किसी सहायक से सफलता का योग है।
जल—यात्रा में सफलता देर से मिलेगी।
पृथ्वी—यात्रा की सफलता में शत्रु-बाधा है।

अजवाइन, काला नमक एवं सौरीमछली दान करने से प्रेतबाधा का निवारण होता है।

प्रश्न क्रम-संख्या ७ के उत्तर

सूर्य—यह विवाह हितकर नहीं है।

चन्द्र—विवाह कल्याणकारी होगा।

मंगल—वैवाहिक सुख-आनन्द नहीं मिलेगा।

बुध—विवाह सुखदायक होगा।

गुरु—पति-पत्नी की प्रीति बनी रहेगी।

शुक्र—पति-पत्नी से खटपट बना रहेगा।

शनि—इस विवाह में रिश्तेदार बाधक होंगे।

राहु—यह विवाह कल्याणकारी है, कर डालो।

केतु—विवाह के बाद सम्बन्ध-विच्छेद का भय है।

इन्द्र—विवाह दुखदायक है, स्त्री रोगी रहेगी।

वरुण—यह वैवाहिक सम्बन्ध उत्तम है।

यम—इस विवाह का परिणाम भयकारी है।

अग्नि—विवाह होने का योग ही नहीं मिलता।

वायु—इस विवाह से सन्तान सुख नहीं मिलेगा।

जल—शादी नहीं—बरबादी होगी।

पृथ्वी—इस विवाह से आर्थिक सुख नहीं मिलेगा।

प्रश्न क्रम-संख्या ८ के उत्तर

सूर्य—एक वर्ष में वर्तमान कष्ट दूर होगा।

चन्द्र—कष्ट से छुटकारा मिलना कठिन है।

मंगल—तीन महीने बाद कष्ट से मुक्त होंगे।

बुध—शीघ्र ही कष्ट से छुटकारा मिलेगा।

गुरु—१॥ वर्ष तक साधारण कष्ट बना रहेगा।

शुक्र—सात महीने बाद कष्ट दूर होगा।

शनि—प्रेत-बाधा है, शान्ति कराओ तो दूर होगा।

राहु—पितरों से कष्ट मिल रहा है—उपाय कराओ।

केतु—कष्ट दूर होना मुश्किल है।

इन्द्र—किसी सहायक से कष्ट दूर होगा।

वरुण—पाँच महिने बाद कष्ट दूर होगा।

यम—कुलदेवता का पूजन करो—कष्ट दूर होगा।

अग्नि—चार मास तक कष्ट बना रहेगा।

वायु—कष्ठ कठिन है, देर से छुटकारा मिलेगा।

जल—शीघ्र ही तुम्हारा कष्ट दूर होगा।

पृथ्वी—बन्दरों को चना खिलाने से कष्ट दूर होगा।

प्रश्न क्रम-संख्या ९ के उत्तर

सूर्य—कर्ज मिलने की पूरी आशा है।

चन्द्र—कर्ज मिलना मुश्किल है।

मंगल—धरोहर रखने पर कर्ज मिलेगा।

बुध—कर्ज प्राप्ति में विलम्ब है।

गुरु—कर्ज दाता टाल-मटोल करेगा।

शुक्र—कर्ज की आशा छोड़ दो, दिन खोटे हैं।

शनि—किसी स्त्री द्वारा कर्ज मिलेगा।

राहु—दौड़-धूप ज्यादा करो तो कर्ज मिलेगा।

केतु—परेशान हो जाओगे, फिर भी न मिलेगा।

इन्द्र—चिड़िया को दाना खिलावो—कर्ज मिलेगा।

वरुण—कर्ज मिलने की पूरी आशा है।

यम—जहाँ से आशा है—वहाँ से नहीं मिलेगा।

अग्नि—समय खोटा है—कर्ज मत लो।

वायु—मिल सकता है...कुत्ते को दूध पिलाओ।

जल—कर्ज मिल सकता है अदा नहीं कर पाओगे।

पृथ्वी—किसी मित्र के द्वारा कर्ज मिलेगा।

दो वर्ष तक के बच्चों की आँख में गुलाब जल नियमित डालने से जीवन भर नेत्र रोग नहीं होता।

प्रश्न क्रम-संख्या १० के उत्तर

सूर्य—कर्ज की पूर्ति दो वर्ष में हो जायेगी।

चन्द्र—किसी मित्र की सहायता से कर्ज चुकाओगे।

मंगल—स्वयं कभी कर्ज नहीं चुका सकोगे।

बुध—कर्ज की पूर्ति १७ मास बाद कर सकोगे।

गुरु—उद्योग करने पर शीघ्र कर्ज चुक्ता होगा।

शुक्र—५ मास बाद कर्ज अदा कर सकोगे।

शनि—कर्ज कभी न चुका सकोगे।

राहु—जीवन भर कर्ज में डूबे रहोगे।

केतु—१ साल बाद कर्ज अदा होगा।

इन्द्र—कर्ज चुकता होने की कोई आशा नहीं है।

वरुण—किसी रिश्तेदार की मदद से कर्ज अदा होगा।

यम—कर्ज चुकाना तुम्हारे लिए कठिन है।

अग्नि—विलम्ब से कर्ज चुकता होगा।

वायु—कर्ज दाता अथवा लेने वाला मृत हो जायेगा।

जल—तुम्हारे लिए कर्ज चुकाना आसान है।

पृथ्वी—कर्ज चुकाने भर कभी आमदनी न होगी।

सर दर्द होने पर आँख में ठंढे व ताजे पानी का १०८ छींटा डालने से तत्काल फायदा होता है।

प्रश्न क्रम-संख्या ११ के उत्तर

सूर्य--इस कार्य में लाभ की आशा नहीं है।

चन्द्र--इस कार्य में सन्तोषप्रद लाभ होगा।

मंगल--लाभ की आशा रखकर कार्य करो।

बुध--इस कार्य में हानि होगी।

गुरु--इस कार्य में हानि-लाभ मध्यम रहेगा।

शुक्र--इस कार्य में साधारण लाभ होगा।

शनि--लाभ की आशा छोड़ो, हानि होगी।

राहु--इस कार्य में गहरी हानि उठानी पड़ेगी

केतु--काम होना कठिन है।

इन्द्र--हाँ, इसमें सन्तोषजनक लाभ होगा।

वरुण--नुकसानी और परेशानी होगी।

यम--इस कार्य में हानि और पछतावा होगा।

अग्नि--लाभ की कोई आशा मत करो।

वायु--पहले कुछ लाभ, बाद में हानि होगी।

जल--साधारण लाभ की आशा रखो।

पृथ्वी--इस कार्य का अन्तिम परिणाम लाभकारी है।

बच्चों को सूखा रोग पर तत्काल फायदा पहुँचाने वाला सिद्ध यन्त्र मूल्य ११ रुपये।

प्रश्न क्रम-संख्या १२ के उत्तर

सूर्य--भागा हुआ प्राणी पूर्व दिशा में जीवित है।

चन्द्र--आगे बढ़ा जा रहा है, वापसी की आशा कम है।

मंगल--वह प्राणी शीघ्र वापस नहीं आवेगा।

बुध--उत्तर दिशा में बीमार है--देर से आयेगा।

गुरु--उसके वापस आने का इन्तजार करो।

शुक्र--पश्चिम में किसी स्त्री के संग है, आने में देर है।

शनि--भागा हुआ प्राणी गलत कार्य कर रहा है।

राहु- दक्षिण में भूखा-प्यासा है, आगे बढ़ेगा।

केतु--वापसी में बिलम्ब है--पूरब दिशा में गया है।

इन्द्र--नजदीक में ही है, जल्दी आ जायेगा।

वरुण--उसके मृत्यु हो जाने की आशंका है।

यम--बीमारी हालत में है--देर से आवेगा।

अग्नि--पश्चिम देश चला गया, पैसे की कमी है।

वायु--आगे पूरब की ओर बढ़ रहा है, आने में देर है।

जल--वह दूर बढ़ेगा, वापसी में देर है।

पृथ्वी--वह घर के लिए चल चुका है, आ जायेगा।

गर्भावस्था में आठ मास तक एक दिन का बासी भोजन करने से स्वस्थ बालक का जन्म होता है।

प्रश्न क्रम-संख्या १३ के उत्तर

सूर्य—परीक्षा में पास हो जाओगे।

चन्द्र—हाँ, परीक्षा में सफलता मिलेगी।

मंगल—पास होना कठिन समझो।

बुध—सफलता संदिग्ध है, यन्त्र धारण करो।

गुरु—सफल हो जाओगे, गरीबों को दान दो।

शुक्र—परीक्षा में पास हो जाओगे।

शनि—फेल हो जाने का भय है ध्यान से पढ़ो।

राहु—ईश्वर की कृपा से ही पास हो सकते हो।

केतु—पास हो पाना बड़ा कठिन है।

इन्द्र—कक्षोन्नति से पास हो सकोगे।

वरुण—परीक्षा में असफल रहोगे।

यम—यन्त्र धारण करने पर पास हो जाओगे।

अग्नि—तुम्हारा पास होना मुश्किल है।

वायु—अच्छे नम्बर से पास हो जाओगे।

जल—पास होने की अल्प सम्भावना है।

पृथ्वी—अत्यन्त परिश्रम से पास हो सकते हो।

बच्चों की पसली (श्वाँस) चलने पर सरसों का गर्म तेल व देशी कपूर मालिश करना चाहिये।

प्रश्न क्रम-संख्या १४ के उत्तर

सूर्य—स्वतन्त्र रोजगार करें—नौकरी नहीं।

चन्द्र—नौकरी से ही जीवन-यापन होगा।

मंगल—नौकरी-व्यापार किसी में स्थिर न रहोगे।

बुध—रोजगार करना ही ज्यादा अच्छा है।

गुरु—नौकरी में सफल नहीं हो सकते।

शुक्र—अधिक परिश्रम से रोजगार करो, लाभ होगा।

शनि—मनपसन्द नौकरी-व्यापार कभी न हो सकेगा।

राहु—ईमानदारी से रोजगार चलाओ।

केतु—नौकरी में ही साधारण जीवन बीतेगा।

इन्द्र—रोजगार में घाटा ही हाथ लगेगा।

वरुण—नौकरी-व्यापार दोनों ही करोगे।

यम—नौकरी में एक जगह स्थिर न रह सकोगे।

अग्नि—नौकरी से ज्यादा अच्छा रोजगार है।

वायु—व्यापार करो, नौकरी को गोली मारो।

जल—नौकरी-व्यापार दोनों ही ठीक है।

पृथ्वी—सितारा चमकेगा, रोजगार करो।

प्रश्न क्रम-संख्या १५ के उत्तर

सूर्य—गड़ा धन मिलने की पूर्ण आशा समझो ।
चन्द्र—तुम्हारे मकान में गड़ा धन नहीं है ।
मंगल—तुम्हारे भाग्य में गड़ा धन नहीं है ।
बुध—मकान के पूर्वोत्तर में गड़ा है, ५ वर्ष बाद मिलेगा ।
गुरु—गड़ा धन तुम्हारे भाई के भाग्य में है ।
शुक्र—गड़े धन पाने की आशा छोड़ दो ।
शनि—अभी काफी विलम्ब है, शनि पूज्य हैं ।
राहु—तुम्हारे वृद्धावस्था में प्राप्ति का योग है ।
केतु—गड़े धन पर प्रेत का वास है, शान्ति कराओ ।
इन्द्र—उद्योग करने पर मिल सकता है ।
वरुण—गड़ा धन पाकर निर्धन बन जाओगे ।
यम—गड़ा धन प्रेताधीन है, यज्ञ कराओ ।
अग्नि—मिलना बड़ा कठिन है ।
वायु—गड़ा धन नहीं मिलेगा ।
जल—गड़ा धन जल के अन्दर है, आशा छोड़ो ।
पृथ्वी—गड़ा धन पाने का स्वप्न मत करो ।

निर्धन होना बड़े भाग्य की बात है, क्योंकि धनी पुरुष केवल धन को ही देखते हैं, कर्म को नहीं ।

प्रश्न क्रम-संख्या १६ के उत्तर

सूर्य—स्वप्न का फल द्रव्य-लाभ है ।
चन्द्र—शुभ समाचार-प्राप्ति की आशा है ।
मंगल—किसी अनिष्ट की सम्भावना है ।
बुध—किसी अतिथि का आगमन होगा ।
गुरु—घर में खुशी एवं द्रव्यलाभ होगा ।
शुक्र—स्वप्न का फल अत्यन्त सुखदायक है ।
शनि—स्त्री-परिवार और बीमारी की चिन्ता होगी ।
राहु—अनायास खर्च बढ़ना ही स्वप्न का फल है ।
केतु—इस स्वप्न का कोई फल न होगा ।
इन्द्र—उत्तम समाचार उपलब्ध होगा ।
वरुण—स्वप्न-फल अशुभ है, शान्ति कराओ ।
यम—दुर्घटना-सूचक स्वप्न का फल है ।
अग्नि—स्वप्न-फल रोग-भय का सूचक है ।
वायु—दुश्मनों से पीड़ा का डर है ।
जल—कार्य का बनना ही स्वप्न का फल है ।
पृथ्वी—इस स्वप्न का कुछ भी प्रभाव नहीं होगा ।

प्रश्न क्रम-संख्या १७ के उत्तर

सूर्य—परदेश गया व्यक्ति एक सप्ताह में आवेगा।
चन्द्र—वह आगे बढ़ रहा है, देर से लौटेगा।
मंगल—शीघ्र ही वापस लौट आयेगा।
बुध—आर्थिक कष्ट के कारण देर से लौटेगा।
गुरु—उसके वापस लौटने में विलम्ब है।
शुक्र—वह अभी वापस नहीं आयेगा।
शनि—उसके आने का लक्षण है, इन्तजार करो।
राहु—रोग से पीड़ित हैं, आने म देर है।
केतु—१५ दिन में वापसी की आशा है।
इन्द्र—शीघ्र ही लौट आयेगा इन्तजार करो।
वरुण—आने में अब कोई देर नहीं है।
यम—विपत्ति में पड़ गया है, अतः देर है।
अग्नि—इन्तजार करो, वापस आ रहा है।
वायु—शीघ्र ही लौटने की उम्मीद है।
जल—दो सप्ताह में लौटने की आशा है।
पृथ्वी—आज-कल में आने ही वाला है।

परीक्षा-मुकदमा म विजय पाने के लिए तथा परदेश गये व्यक्ति को, बुलाने वाला यन्त्र मू० १०)

प्रश्न क्रम-संख्या १८ के उत्तर

सूर्य—वह व्यक्ति विश्वसनीय नहीं है।
चन्द्र—हाँ, वह विश्वास-पात्र है।
मंगल—यह प्राणी विश्वास-पात्र है।
बुध—विश्वास मत करो, धोखा देने वाला है।
गुरु—शत-प्रतिशत विश्वसनीय है।
शुक्र—वह व्यक्ति ईमानदार और विश्वसनीय है।
शनि—इस व्यक्ति पर भरोसा मत करो।
राहु—इस प्राणीं का इतबार मत करो।
केतु—उसके ईमान का ठिकाना नहीं है।
इन्द्र—हाँ, यह प्राणीं विश्वास पात्र है।
बरुण—होशियारी से विश्वास करो।
यम—यह प्राणीं संदिग्ध है, विश्वास न करो!
अग्नि—उसके विश्वास पर भरोसा मत करो।
वायु—विश्वास-पात्र है।
जल—ईमानदार और सत्यवादी है।
पृथ्वी—अवश्यमेव विश्वास के योग्य है।

प्रश्न क्रम-संख्या १९ के उत्तर

सूर्य—रोगी काफी देर से अच्छा होगा।

चन्द्र—मरेगा नहीं, बच जायेगा।

मंगल—हाँ, रोग से मुक्ति पायेगा, ग्रह खराब हैं।

बुध—परहेज न किया तो फिर बीमार होगा।

गुरु—हाँ, रोगी अच्छा हो जायेगा।

शुक्र—रोगी को ब्रह्मदोष है; तन्त्र करावें।

शनि—दवा जारी रखिये, अच्छा हो जायेगा।

राहु—मृत्यु-पर्यन्त रोग युक्त रहेगा।

केतु—रोगी असाध्य है, ग्रहशान्ति करावें।

इन्द्र—हाँ, वह रोग से मुक्ति पायेगा।

वरुण—रोगी को टोना-टोटका किया गया है।

यम—रोगी को नजर (दीठ) लगा है, उपाय करो।

अग्नि—रोगी देर से अच्छा होगा।

वायु—बदपरहेजी से रोग बढ़ेगा।

जल—यन्त्र धारण करने से रोग-मुक्त होगा।

पृथ्वी—शीघ्र ही स्वस्थ होने का योग है।

प्रश्न क्रम-संख्या २० के उत्तर

सूर्य—उस पदार्थ में तेजी की आशा है।

चन्द्र—पदार्थ मन्दा होगा।

मंगल—तेजी का रुख होकर मन्दा होने की आशा है।

बुध—तेजी-मन्दी का रुख बदलता रहेगा।

गुरु—साधारण मन्दी की उम्मीद है।

शुक्र—कुछ तेजी का रुख पकड़ेगा।

शनि—गहरी तेजी की आशंका है।

राहु—पहले मन्दा होकर फिर तेज होगा।

केतु—तेजी की आशा रक्खो।

इन्द्र—मन्दा पर बाजार खुलकर तेजी पर बन्द होगा।

वरुण—तेजी होने का योग है।

यम—मन्दी की आशा है।

अग्नि—घट-बढ़ चलती रहेगी, सचेत रहो।

वायु—भारी तेजी आयेगी।

जल—अचानक मन्दी की आशंका है।

पृथ्वी—तेजी पर बाजार खुलकर मन्दी पर बन्द होगा।

प्रश्न क्रम-संख्या २१ के उत्तर

सूर्य—आपका काम सफल होना मुश्किल है ।
चन्द्र—हाँ, पूर्ण सफलता मिलेगी ।
मंगल—सफलता में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा ।
बुध—असफलता के लक्षण हैं ।
गुरु—आपका काम पूर्ण सफल होगा ।
शुक्र—सफलता की आशा रख सकते हो ।
शनि—काम सफल होना कठिन है ।
राहु—सफल होने में बाधा है ।
केतु—दुश्मन लोग बाधा डालेंगे ।
इन्द्र—ईश्वर पर भरोसा रक्खो, काम सफल होगा ।
वरुण—अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा ।
यम—काम बनकर बिगड़ जायेगा ।
अग्नि—काम सफल न होगा, शनि बाधक हैं ।
वायु—कुछ बनेगा और कुछ बिगड़ जायेगा ।
जल—काम में सफलता देर से मिलेगी ।
पृथ्वी—अवश्यमेव काम सफल होगा ।

प्रश्न क्रम-संख्या २२ के उत्तर

सूर्य—ध्यान से पढ़ें, विद्या का पूर्ण योग है ।
चन्द्र—विद्यार्जन का पूर्ण योग है ।
मंगल—अध्ययन में अनेक बाधायें आयेंगी ।
बुध—विद्या-योग बलवान है, पढ़ो ।
गुरु—विद्यार्जन का योग पूर्ण बलवान है ।
शुक्र—अध्ययन में दिमाग काम नहीं करेगा ।
शनि—विद्यार्जन में शनिदेव बाधक हैं ।
राहु—पढ़ाई-लिखाई में सफलता नहीं मिलेगी ।
केतु—तुम्हारे भाग्य में विद्या का योग नहीं है ।
इन्द्र—जरूरत भर विद्या हासिल होगी ।
वरुण—विद्या में असफल रहोगे ।
यम—पढ़ाई-लिखाई में सफलता संदिग्ध है ।
अग्नि—पढ़ाई अधूरी रह जायेगी ।
वायु—पढ़ाई में कुछ भी सफलता नहीं मिलेगी ।
जल—पढ़ाई-लिखाई में पूरी सफलता मिलेगी ।
पृथ्वी—पढ़ाई करो—सफलता मिलेगी ।

प्रश्न क्रम-संख्या २३ के उत्तर

सूर्य—नौकरी मिलने की आशा नहीं है।

चन्द्र—नौकरी शीघ्र ही मिलेगी।

मंगल—दिन खोटे हैं—आशा नहीं है।

बुध—चिन्ता न करो—भली नौकरी मिलेगी।

गुरु—नौकरी मिलने में काफी विलम्ब है।

शुक्र—देर से नौकरी मिलेगी।

शनि—किसी की सहायता से नौकरी मिलेगी।

राहू—सन्तोषजनक नौकरी नहीं मिलेगी।

केतु—नौकरी में तुम स्थिर न रह सकोगे।

इन्द्र—अवश्य मिलेगी, कोशिश करो।

वरुण—किसी स्त्री की मदद से नौकरी मिलेगी।

यम—दौड़-धूप ज्यादा करने पर मिल सकती है।

अग्नि—योग बलवान है, अवश्य मिलेगी।

वायु—नौकरी मिलने का योग नहीं है।

जल—दिन खोटे हैं, मिलना मुश्किल है।

पृथ्वी—पहुंच अधिक हो तो मिल सकती है।

प्रश्न क्रम-संख्या २४ के उत्तर

सूर्य—साझेदारी का रोजगार कष्टदायक है।

चन्द्र—साझा से बचकर रहो, यही चेतावनी है।

मंगल—आपके लिए साझेदारी विपत्तिकारी होगा।

बुध—तुमसे साझा चल नहीं पावेगा।

गुरु—साझा का मार्ग छोड़ो, घाटा लगेगा।

शुक्र—सफलता मिलेगी, साझा शुरू करो।

शनि—साझेदारी लाभदायक है।

राहु—साझेदारी महान् हानिकारक है।

केतु—निजी व्यापार करो, साझा से दूर रहो।

इन्द्र—साझेदारी चला नहीं सकोगे।

वरुण—साझे की चाल खतरनाक साबित होगा।

यम—दूसरा साझेदार हमेशा धोखा देगा।

अग्नि—साझेदारी तुमसे निभना मुश्किल है।

वायु—साझे की परछाईं से भी दूर रहो।

जल—कुछ लाभ होगा और कुछ घाटा होगा।

पृथ्वी—हाँ, परम लाभदायक है।

प्रश्न क्रम-संख्या २५ के उत्तर

सूर्य--यह खबर सच्ची है, विश्वास करो।
चन्द्र--विश्वास के योग्य समाचार नहीं है।
मंगल--यह खबर बिलकुल झूठी है।
बुध--कुछ सच्चा और कुछ झूठा है।
गुरु--इस खबर पर यकीन कर सकते हो।
शुक्र--अविश्वसनीय समाचार मिला है।
शनि--यह खबर काबिल-ए-यकीन नहीं है।
राहु--विश्वास कर सकते हो।
केतु--उड़ती खबर है, विश्वास न करो।
इन्द्र--शत-प्रतिशत सत्य समाचार है।
वरुण--हाँ, यह खबर सच्ची है।
यम--किसी ने झूठी खबर भेजी है।
अग्नि--कुछ अंश तक खबर सत्य है।
वायु--ठीक समाचार मिला है, यकीन करो।
जल--इस खबर में पूरी सचाई है।
पृथ्वी--यकीन करो, सत्य समाचार है।

किसी बात पर अविश्वास करने के पहले अपने आप पर विश्वास करने की आदत डालो--कैलाश

प्रश्न क्रम-संख्या २६ के उत्तर

सूर्य--इस गर्भ से पुत्र होने की आशा है।
चन्द्र--कन्या होने की आशा समझो।
मंगल--गर्भ नष्ट होने की आशंका है।
बुध--अल्पायु पुत्र होगा, शान्ति कराओ।
गुरु--भाग्यशाली पुत्र का जन्म होगा।
शुक्र--कन्या होने की आशा है।
शनि--लक्ष्मी-रूप में पुत्री होगी।
राहु--पुत्र का जन्म सम्भावित है।
केतु--गर्भपात का लक्षण दिखाई देगा।
इन्द्र--पुत्र का जन्म होगा।
वरुण--जिद्दी व शरारती पुत्र होगा।
यम--अल्पायु कन्या पैदा होगी।
अग्नि--यशस्वी पुत्र होगा।
वायु--पुत्र होगा, जीवित रहने में सन्देह है।
जल--बलवान पुत्र का जन्म होगा।
पृथ्वी--पुत्री होगी, जीवित रहने में सन्देह है।

प्रश्न क्रम-संख्या २७ के उत्तर

सूर्य—मुकदमा में जीत नहीं होगी।
चन्द्र—जब नया हाकिम आवेगा तो जीत होगी।
मंगल—अभी आगे चलते रहने की आशा है, जीत होगी।
बुध—मुकदमा जीतने की कोई आशा नहीं है।
गुरु—शत्रु प्रबल हैं, जीतना मुश्किल है।
शुक्र—सुलह कर लो तो ज्यादा अच्छा हो।
शनि—मुकदमा खारिज होने की आशंका है।
राहु—यन्त्र धारण करो—जीतोगे।
केतु—कोशिश करने पर जीत होगा।
इन्द्र—मुकदमा जीतने का कोई लक्षण नहीं है।
वरुण—मुकदमा जीतने की आशा छोड़ दो।
यम—मुकदमा में पराजय संभावित है।
अग्नि—कोशीश करने पर जीत जाओगे।
वायु—जय-पराजय दैवाधीन ही समझो।
जल—ग्रह ज्यादा खराब हैं—हार होगी।
पृथ्वी—तुम्हारा पक्ष कमजोर है, अतः हार होगी।

मुकदमा में परेशान क्यों? सिद्ध यन्त्र बनवा कर जीत हासिल करें। मूल्य २१) रुपये।

प्रश्न क्रम-संख्या २८ के उत्तर

सूर्य—मकान में शल्य-दोष हैं, शान्ति कराओ।
चन्द्र—मकान दोष-रहित है।
मंगल—मकान में कोई दोष नहीं है।
बुध—इस मकान में प्रेत-बाधा है, शान्ति करावें।
गुरु—मकान निर्दोष है।
शुक्र—इस मकान में गड़ी हड्डी का दोष है।
शनि—इसमें कोई दोष नहीं, ग्रह खराब हैं।
राहु—मकान में ब्रह्म-दोष पाया जाता है।
केतु—मकान वेधित है, शान्ति कराओ।
इन्द्र—इस मकान पर दृष्टि-दोष है।
वरुण—सन्तान-सुख के लिए मकान बाधक है।
यम—इस मकान में अकाल मृत्यु का दोष है।
अग्नि—टोना-टोटका से दोष युक्त है।
वायु—परम कल्याणकारी एवं निर्दोष है।
जल—मकान शुभ है—शंका न करो।
पृथ्वी—मकान में कोई बाधा नहीं है।

मकान व भूमि सम्बन्धी दोषों के निवारणार्थ 'भू-रक्षा यन्त्र' मूल्य ७) रुपये।

प्रश्न क्रम-संख्या २९ के उत्तर

सूर्य—गिरफ्तार प्राणीं छूट जायेगा।
चन्द्र—छूटने में सन्देह है।
मंगल—मामला आगे बढ़ेगा तो परेशानी होगी।
बुध—निश्चित ही छूट जायेगा।
गुरु—दैव-कृपा से ही छूटना संभव है।
शुक्र—अवश्य छूटेगा–देर है।
शनि—सजा का हकदार होगा।
राहु—सजा से बच जायेगा।
केतु—मामूली दण्ड से दण्डित होंगे।
इन्द्र—जमानत पर छूट सकता है।
वरुण—छूटने की आशा कम है।
यम—दण्ड प्राप्त होकर ही रहेगा।
अग्नि—सजा मिलना संभव है।
वायु—छूटने में सन्देह है।
जल—छूटना बड़ा मुश्किल है।
पृथ्वी—सजा का हकदार होकर ही रहेगा।

प्रश्न क्रम-संख्या ३० के उत्तर

सूर्य—उस व्यक्ति से काम बनना मुश्किल है।
चन्द्र—उस व्यक्ति से कार्य बन जायेगा।
मंगल—वह व्यक्ति दुष्ट है—काम नहीं करेगा।
बुध—उस व्यक्ति से काम बन जायेगा।
गुरु—भरसक वह पूरी मदद करेगा।
शुक्र—हाँ, वह तुम्हारी सहायता करेगा।
शनि—सावधान! वह व्यक्ति धोखेबाज है।
राहु—काम बनने की आशा छोड़ दो।
केतु—वह व्यक्ति कुछ भी मदद नहीं करेगा।
इन्द्र—सिफारिस से काम बनेगा।
वरुण—उस व्यक्ति से सचेत रहो।
यम—काम पूरा न होगा, उल्टे हानि होगी।
अग्नि—आशा और विश्वास बनाये रखो।
वायु—बनेगा नहीं, उल्टे नुकसान होगा।
जल—नीयत ठीक रखकर आशा कर सकते हो।
पृथ्वी—अवश्य ही वह मदद करेगा।

दूसरों पर आश्रित रहना मूर्खों का काम है, स्वयं बाहु-बल पर भरोसा करना श्रेष्ठ होता है।

प्रश्न क्रम-संख्या २१ के उत्तर

सूर्य—इस रोगी के ग्रह खराब हैं।
चन्द्र—प्रेत बाधा है—शान्ति कराओ।
मंगल—शारीरिक व्याधि है—इलाज करो।
बुध—गुप्त रोग है—अच्छा न होगा।
गुरु—प्रेत-बाधा है—तन्त्र से अच्छा होगा।
शुक्र—जादू टोना, दीठ लगी है, यत्न करो।
शनि—ग्रह-बाधा है, शनि का जाप करावें।
राहु—किसी ने टोना-टोटका करा दिया है।
केतु—भयंकर रोग है, फौरन इलाज करो।
इन्द्र—ब्रह्म-दोष है—तन्त्र से अच्छा होगा।
वरुण—रोग है, इलाज से अच्छा होगा।
यम—प्रेतजन्य दोष है, तन्त्र से निवारण होगा।
अग्नि—भूत-बाधा है—अति कष्ट-साध्य है।
वायु—शारीरिक व्याधि है, उपचार करें।
जल—अति कष्ट-साध्य रोग है।
पृथ्वी—ग्रह-दोष है, सिद्ध यन्त्र धारण करावें।

क्या आप किसी रोग से परेशान हैं? रोगनाशक यन्त्र' धारण करें मूल्य १५) रुपये।

प्रश्न क्रम-संख्या २२ के उत्तर

सूर्य—यह जायदाद आपके लिए ठीक रहेगा।
चन्द्र—इसमें प्रेत-बाधा है, शान्ति कराओ।
मंगल—यह जायदाद आपके लिए ठीक है।
बुध—इसमें कोई दोष नहीं प्रतीत होता।
गुरु—जायदाद फ़ःदायी नहीं है।
शुक्र—शुभ है, इसी से आपका भाग्योदय होगा।
शनि—इसमें ब्रह्मबाधा है, हितकर न होगा।
राहु—हाँ, लाभदायी है।
केतु—भूत-बाधा का लक्षण है—उपाय करावें।
इन्द्र—कष्टकर रहेगा, जायदाद से दूर रहो।
वरुण—आपके लिए फलीभूत न होगा।
यम—उसमें हड्डी है—शान्ति कराना होगा।
अग्नि—यह जायदाद हानिकारक है।
वायु—यह जायदाद दोष-युक्त है।
जल—ब्रह्म-दोष पाया जाता है।
पृथ्वी—जायदाद निर्दोष है।

सम्पत्ति अर्जित करने से दान देना उत्तम है और पाप बटोरने की अपेक्षा पुण्यकरना अति उत्तम है।

प्रश्न क्रम-संख्या ३३ के उत्तर

सूर्य—आज का दिन सुखदायक है ।

चन्द्र—अच्छे व्यक्तियों से मुलाकात होगी ।

मंगल—चिन्ता, परेशानी एवं थकावट रहेगी ।

बुध—पैसे की कमी, खर्च ज्यादा होगा ।

गुरु—मनोबल गिरा रहे, द्रव्य हानि होगी ।

शुक्र—आज का दिन शुभ हैं । प्रसन्न चित्त रहेंगे ।

शनि--शरीर में कष्ट, अर्थाभाव रहेगा ।

राहु--चिन्ता-व्यथा से गुजरेगा ।

केतु—रुपये-पैसे का खर्च अधिक होगा ।

इन्द्र--शान्तिपूर्वक आपके कार्य बनेंगे ।

वरुण--धन-लाभ, शुभ-समाचार मिलेगा ।

यम—चिन्तनीय है, दुखी रहेंगे ।

अग्नि—पारिवारिक उलझनों में व्यस्त रहेंगे ।

वायु--दौड़-धूप ज्यादा, सफलता कम मिलेगी ।

जल--आज का दिन लाभदायक है ।

पृथ्वी—आमदनी-खर्च, सुख-दुःख बराबर समझिए ।

विद्या हासिल करना आसान है, बुद्धि अर्जित करना कठिन, उससे कठिन विद्या-बुद्धि का उपयोग ।

प्रश्न क्रम-संख्या ३४ के उत्तर

सूर्य--उसके भाग्य में सन्तान का सुख नहीं है ।

चन्द्र--कन्याओं के सुख की आशा है ।

मंगल--सन्तान-लाभ में विलम्ब है ।

बुध--सन्तान-सुख में रोग-बाधा है ।

गुरु--शीघ्र ही सन्तान-सुख होने वाला है ।

शुक्र--पुरुष में वीर्य-दोष है, औषधि करें ।

शनि--स्त्री को रक्त-दोष है—इलाज कराओ ।

राहु--प्रेत-बाधा है—उपाय कराओ, सुख होगा ।

केतु--गर्भपात का दोष है, यन्त्र धारण करो ।

इन्द्र--ग्रह-बाधा है—उसकी शान्ति करावें ।

वरुण—मंगलवार का व्रत रखें, अवश्य होगा ।

यम--कुलदेवता के पूजन से सन्तान-सुख होगा ।

अग्नि--जिद्दी एवं शरारती सन्तान होगा ।

वायु--सन्तान प्रतिबन्धक योग है, अनुष्ठान कराओ ।

जल--पराये सन्तान से सुख की आशा है ।

पृथ्वी—तुम्हारे भाग्य में सन्तान-सुख नहीं है ।

प्रश्न क्रम-संख्या ३५ के उत्तर

सूर्य—उसका विवाह देर से होगा।
चन्द्र—विवाह में अभी विलम्ब है।
मंगल—दो वर्ष बाद विवाह होगा।
बुध—शीघ्र ही विवाह की सम्भावना है।
गुरु—विवाह-योग चल रहा है, प्रयत्न करो।
शुक्र—अगले वर्ष विवाह हो जाना चाहिये।
शनि—विवाह में शनिदेव बाधक हैं।
राहु—अभी विवाह का योग नहीं है।
केतु—विवाह में ग्रह-बाधा है, शान्ति करावें।
इन्द्र—चटपट विवाह होगा, चिन्ता न करो।
वरुण—विवाह में सफलता सन्देहास्पद है।
यम—इस वर्ष विवाह की आशा नहीं है।
अग्नि—विवाह में बाधायें आती जायेंगी।
बायु—किसी की सहायता से विवाह होगा।
जल—विवाह अगले वर्ष सम्भव है।
पृथ्वी - विवाह में सफलता संदिग्ध है।

यदि विवाह में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित हो तो 'स्पेशल विवाह यन्त्र' मंगावें मूल्य १५) रुपये।

प्रश्न क्रम-संख्या ३६ के उत्तर

सूर्य--लॉटरी की आशा छोड़ दो।
चन्द्र—लॉटरी नहीं निकलेगी।
मंगल--किसी ज्योतिषी से पूछकर टिकट खरीदो।
बुध—हनुमानजी को लड्डू चढ़ाकर टिकट खरीदो।
गुरु—लॉटरी का टिकट खरीदना बेकार है।
शुक्र--तुम्हारे भाग्य में हराम का रकम नहीं है।
शनि—तुम्हें लॉटरी से धन लाभ न होगा।
राहु--टिकट लेते रहो, कभी चान्स बैठ जायेगा।
केतु--मेहनत पर भरोसा करो, लॉटरी को छोड़ दो।
इन्द्र--कुछ लाभ की आशा दिखाई पड़ रही है।
बरुण—किसी ईमानदार से टिकट खरीदो।
यम--ग्रह खोटे हैं—टिकट लेना बेकार है।
अग्नि--अपनी नीयत ठीक रक्खो—लाभ होगा।
बायु--चार वर्ष बाद लॉटरी से लाभ होगा।
जल--भाग्यशाली हो—लॉटरी मिलने का योग है।
पृथ्वी—लॉटरी से ३ वर्ष बाद कुछ लाभ होगा।

गणित एवं खगोल विद्या से अनभिज्ञ भविष्यवक्ता (नक्षत्रसूची) ज्योतिषी का दर्शन करना भी पाप है।

प्रश्न क्रम-संख्या ३७ के उत्तर

सूर्य—तीन मास बाद भाग्योदय होगा।
चन्द्र—१॥ वर्ष बाद भाग्योदय की आशा है।
मंगल—इस वर्ष भाग्योदय के योग हैं।
बुध—हाँ, आगामी मास भाग्य चमकेगा।
गुरु—भाग्योदय में ३ वर्ष देर है। शनि पूज्य हैं।
शुक्र—भाग्योदय में २॥ वर्ष का बिलम्ब है।
शनि—निकट भविष्य में भाग्योदय की आशा नहीं है।
राहु—दुर्गा पाठ करावें तो भाग्योदय होगा।
केतु—पुरुषार्थ से बस—खाना कमाना लगा रहेगा।
इन्द्र—आठ मास में भाग्योदय निश्चित है।
वरुण—चौदह मास में भाग्योदय की आशा है।
यम—भाग्योदय का समय गुजर गया है।
अग्नि—दो वर्ष तक संकट है—बाद में भाग्य चमकेगा।
वायु—३॥ वर्ष बाद भाग्योदय की आशा है।
जल—पाँच मास बाद भाग्य चमक उठेगा।
पृथ्वी—भाग्योदय की आशा अब छोड़ दो।

'भाग्योदय सिद्ध कवच' आपकी प्रत्येक बाधा का शमन करने में सक्षम है। मूल्य १२) रुपये।

प्रश्न क्रम-संख्या ३८ के उत्तर

सूर्य—बिगड़ा काम अवश्य बनेगा।
चन्द्र—अवश्य बनेगा, परन्तु देर है।
मंगल—काम बनेगा, काले कुत्ते को दूध पिलाओ।
बुध—काम बनना बड़ा मुश्किल है।
गुरु—सन्तोषजनक ढंग से बन जायेगा।
शुक्र—कार्य अधिक बिगड़ गया है, अब मुश्किल है।
शनि—बन्दरों को चने खिलाओ—काम बनेगा।
राहु—बिगड़ा काम बन पाना कठिन है।
केतु—शीघ्र ही तुम्हारा काम बनेगा।
इन्द्र—काम बनने की आशा मत करो।
वरुण—दिन खोटे हैं, काम नहीं बनेगा।
यम—बिगड़ा काम और भी चौपट हो जायेगा।
अग्नि—काम बनेगा, रामायण का पाठ करो।
वायु—काम बन जाने की पूरी आशा है।
जल—बिगड़ा काम बनना मुश्किल है।
पृथ्वी—दैव-कृपा से ही काम बन सकता है।

हर प्रकार के बिगड़े काम बनाने के लिए दुर्गा-सप्तशती का पाठ कराना उचित और कल्याणकारी है।

प्रश्न क्रम-संख्या ३९ के उत्तर

सूर्य—यह वर्ष आपके लिए खराब है।
चन्द्र—पूरे वर्ष भर सुखी व प्रसन्न रहेंगे।
मंगल—कुछ खराब और कुछ अच्छा रहेगा।
बुध—रोजगार में सन्तोषजनक लाभ होगा।
गुरु—विद्या-बुद्धि एवं द्रव्य लाभ का विकास होगा।
शुक्र—लाभ, हर्ष, उन्नति एवं सुख बढ़ेगा।
शनि—अनायास दुश्मन बढ़ते जायेंगे।
राहु—वर्ष खराब है, राहु की शान्ति करावें।
केतु—अनेक बाधाओं का सामना करोगे।
इन्द्र—किसी तरह भी मन को शान्ति नहीं मिलेगी।
वरुण—पारिवारिक उलझनें बढ़ेंगी।
यम—मानसिक चिन्ताओं से पीड़ित रहेंगे।
अग्नि—लाभ कम, खर्च ज्यादा, चिन्ता बढ़ेगी।
वायु—वृहस्पति खराब होने से द्रव्य हानि होगी।
जल—मंगल राहु बने कामों को बिगाड़ते रहेंगे।
पृथ्वी—शनि के प्रभाव से पूरा वर्ष खराब रहेगा।

यदि आप के ग्रह खोटे हैं तो 'श्रीनवग्रह शान्ति सिद्ध यन्त्र' धारण करें। मूल्य ४) ८७ पैसे।

प्रश्न क्रम-संख्या ४० के उत्तर

सूर्य—तीन दिन में पत्रोत्तर आवेगा।
चन्द्र—पत्र आनेवाला है, इन्तजार करो।
मंगल—पत्र नहीं आवेगा, आशा छोड़ो।
बुध—पत्र चल चुका है, मिलने में देर होगी।
गुरु—पत्रोत्तर विलम्ब से मिलेगा।
शुक्र—पत्र देर से आवेगा।
शनि—रास्ते में पत्र गड़बड़ हो गया है।
राहु—दुबारा पत्र लिखो—जबाब मिलेगा।
केतु—पत्र आया—दूसरे ने हड़प लिया है।
इन्द्र—पत्र आने में दुविधा है।
वरुण—पत्र भेजने वाला आलसी लगता है।
यम—दूसरे सप्ताह में पत्र आयेगा।
अग्नि—ठीक तरह से जबाब शुदा पत्र न मिलेगा।
वायु—पत्र मिलेगा; किन्तु सन्तोषजनक नहीं।
जल—पत्र मिलना बड़ा कठिन है।
पृथ्वी—काफी देर से पत्रोत्तर की आशा रक्खो।

पुण्य बँटाने वाला सब कोई है, किन्तु पाप को स्वयं ही भोगना पड़ता है—कैलाश

जन्म की अंग्रेजी तारीख के अनुसार आप के लिए सन् १९७१ से सन् १९८४ तक का समय कैसा रहेगा ?

ॐ [जन्म तारीख २१ मार्च से ता० २० अप्रैल तक]

सन् ७१ के अप्रैल से सन् ७३ के नवम्बर तक साढ़ेसाती शनि की अन्तिम ढैया रहेगी, अत: अनेक प्रकार के कष्ट, विना वात के झगड़े-झंझट से परेशानी, स्वजनों से दुश्मनी, परिवारिक मनमुटाव, रोग-बीमारी से कष्ट तथा ऋण-भारसे तकलीफ होगी। सन् ७३ के दिसम्बर से जून ७६ तक रोग-बीमारियों-परेशानियों से छुटकारा, कर्ज से मुक्ति, सुख-सम्पत्ति एवं सम्मान की प्राप्ति, मनोकामना की सिद्धि तथा मुकदमेवाजी में जीत होगी। जुलाई ७६ से जनवरी ७९ तक ढैयाशनि का प्रकोप तथा अगस्त ८१ तक शनि पूज्य रहेगा, अत: आपके मानसिक दुखों की वृद्धि, निवास-स्थान में परिवर्तन, शत्रु एवं रोगों की भरमार पारिवारिक किसी सदस्य की मृत्यु तथा वहुत ज्यादा धन की हानि होगी। सितम्बर ८१ से मार्च ८४ तक समस्त विपत्तियों से छुटकारा मिल जायेगा, पुन: धनवान् और कारोवारी बन जायेंगे। सरकारी मदद से काम बनेगा।

ॐ [जन्म तारीख २१ अप्रैल से ता० २१ मई तक]

अप्रैल सन् ७१ से जून ७६ तक साढ़ेसाती शनि की दूसरी व तीसरी ढैया में बुद्धि मन्द, आलस्य, निद्रा, बेचैनी, घबराहट, घोर पारिवारिक कष्ट, शरीर अस्वस्थ, कर्ज का वोझ तथा पैसे-पैसे का मुहताज रहना पड़ेगा। जुलाई ७६ से जनवरी ७९ तक कर्ज का बोझ हल्का हो जायेगा। कारोबार और नौकरी में लगातार तरक्की होगी। घर-मकान का निर्माण या खरीद होगा। फरवरी ७९ से अगस्त ८१ तक ढैया शनि का प्रकोप तथा मार्च ८४ तक शनि पूज्य रहेगा, अत: हर तरह से सावधान रहने की आवश्यकता है। इन समयों में आप घोर विपत्तियों का सामना करेंगे। दुश्मनों के द्वारा प्राणघातिक कष्ट भी हो सकता है।

❀ [जन्म तारीख २२ मई से ता० २१ जून तक]

सन् ७१ ई० के अप्रैल से जनवरी ७६ ई० तक साढ़ेसाती शनि का कुचक्र रहेगा। खर्च, परेशानी, बीमारी, दुश्मनी, कर्ज, झगड़ा-झंझट और बेकार के कानूनी उलझनों का सामना करना होगा। कारोबार का सर्वनाश अथवा नौकरी से छुटकारा भी हो सकता है। बना-बनाया काम बिगड़ता रहेगा। फरवरी ७६ से अगस्त ८१ तक का समय भाग्योन्नति करायेगा, सभी चिन्ताएँ दूर होंगी। लाभ और धनसंचय भी होगा;कार्य की सिद्धि होगी।व्यापार,नौकरी पारिवारिक एवं जायजाद-मकान के काम पूर्ण होंगे; किन्तु सितम्बर ८१ से मार्च ८४ तक पुन: ढैया शनि महाराज की कृपा रहेगी, इसमें बड़ी जबर्दस्त दुर्घटनाओं का शिकार होना पड़ेगा। विघ्न-बाधाएँ, अशान्ति, कचहरी-कोर्ट-पुलिस अथवा अन्य दुश्मनी तरीकों से बेइज्जत या सजायाफ्ता भी हो सकते हैं।

❀ [जन्म तारीख २२ जून से ता० २३ जुलाई तक]

अप्रैल ७१ ई० से नवम्बर ७३ तक समय अच्छा बितेगा। आपके हर काम सफल होंगें, किन्तु दिसम्बर ७३ से अगस्त ८१ तक साढ़ेसाती शनि महाराज की तीक्ष्ण दृष्टि से बरबादी के लक्षण दिखाई देंगे। बना-बनाया काम बिगड़ जायेगा। बेइज्जति, बीमारी और कर्ज के बोझ से परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। सितम्बर ८१ से मार्च ८४ तक पुन: आपकी स्थिति सुन्दर रहेगी। प्रत्येक कार्यों की सिद्धि होगी। व्यापार, नौकरी, परिवार एवं जायजाद-मकान के सभी काम पूर्ण होंगे।

❀ [जन्म तारीख २४ जुलाई से ता० २३ अगस्त तक]

अप्रैल ७१ ई० से नवम्बर ७३ तक दुख, मानसिक-पारिवारिक-आर्थिक और व्यावसायिक चिन्ता, विघ्न-बाधायें, निर्धनता और हृदय-रोग से पीड़ा होगी। दिसम्बर ७३ से जून ७६ तक धन-मकान-व्यापार-नौकरी-सम्मान एवं राज्य पुरस्कारों की प्राप्ति होगी। पारिवारिक सुख, मित्रों का भरमार तथा रोगों से मुक्ति मिलेगी। जुलाई ७६ से मार्च ८४ तक साढ़ेसाती शनि के प्रभाव से चोरी, डकैती, झगड़ा-झंझट, दरिद्रता, परदेश यात्रा, खर्च की अधिकता, बुद्धि-विद्या-बल और धन का नाश तथा कोर्ट-कचहरीं या पुलिस विभाग से परेशानी होगी।

❀ [जन्म तारीख २४ अगस्त से ता० २३ सितम्बर तक]

अप्रैल ७१ ई० से जनवरी ७९ तक दुख, रोग, बीमारी, दुश्मनी, मानसिक व पारिवारिक परेशानियों के साथ-साथ बिना विघ्न-धन, मान-प्रतिष्ठा, मकान-जायजाद और अनेक प्रकार के सुखों का लाभ होता रहेगा। फरवरी ७९ से अक्टूबर ८६ तक साढ़ेसाती शनि प्रारम्भ होने से विशेष कष्ट व परेशानियों का सामना करना होगा। बेइज्जति, धन व पारिवारिक हानि तथा दुश्मनों की ओर से प्राणघातिक कष्ट और कर्ज बढ़ेगा। सतर्क रहो, वरना पछताओगे।

❀ [जन्म तारीख २४ सितम्बर से ता० २३ अक्टूबर तक]

अप्रैल ७१ से नवम्बर ७३ तक ढैया शनि (अष्टम) होने से दिन-रात चिन्ताओं में डूबे रहेंगे। चारों तरफ अशान्ति, बेकारी, बेइज्जति एवं कर्ज के बोझ के कारण आपके मन में आत्म-हत्या की भावना उठेगी, अतः हिम्मत से काम करें तो रोजी रोटी का प्रश्न हल होता रहेगा। दिसम्बर ७३में भाग्योन्नति होकर अगस्त ८१ तक बड़े आनन्द से समय गुजरेगा। प्रसन्नता, इज्जत, धन का गहरा लाभ तथा चारो ओर से तरक्की होती रहेगी। सितम्बर ८१ से अप्रैल ८९ तक साढ़ेसाती शनि के कुचक्र से बरबादी होगी। बड़ी विकट परिस्थिति तथा घोर परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

❀ [जन्म तारीख २४ अक्टूबर से ता० २२ नवम्बर तक]

अप्रैल ७१ से नवम्बर ७३ तक दुख-सुख, लाभ-खर्च और दुश्मनी व मित्रता का लेखा-जोखा बराबर रहेगा। रोजी-रोटी चलती रहेगी, मगर दिसम्बर ७३ में ढैया शनि पधारेगें और जून ७६ तक रहेंगे तथा उसके बाद भी जनवरी ७९ तक शनिदेव पूज्य रहेंगे, अतः परिवार में कलह, मित्रों से धोखा, कारोबार-नौकरी-पढ़ाई-यात्रा घर-मकान आदि के लिए बहुत चिन्तित रहना पड़ेगा। मृत्यु के समान कष्ट प्राप्त होगा। फरवरी ७९ से मार्च ८४ तक बड़े आनन्द, राजी-खुशी से समय गुजरेगा और लाभ कारक यात्रायें भी संभव होंगी।

❀ [जन्म तारीख २३ नवम्बर से ता० २२ दिसम्बर तक]

अप्रैल ७१ ई० से जून ७६ तक साधारण भाग्योन्नति का समय है। घर परिवार, मकान, मित्र, कारोबार और अन्य सभी क्षेत्रों में धीरे-धीरे पूरी सफ-

लता मिलेगी। जुलाई ७६ से जनवरी ७९ तक ढैया शनि का प्रकोप रहेगा तथा अगस्त ८१ तक शनिदेव पूज्य रहेंगे, अतः पीड़ा, धन-हानि, कार्यों में बाधा, रोग-बीमारी-खर्च व कर्ज की अधिकता तथा स्त्री-सन्तान-परिवार से कलह और मनमुटाव रहेगा। सितम्बर ८१ से मार्च ८४ तक भाग्योदय, तरक्की, लाभ और इज्जत बढ़ेगी। बुद्धि से काम करोगे तो धनी बन जाओगे।

❀ [जन्म तारीख २३ दिसम्बर से ता० २० जनवरी तक]

अप्रैल ७१ से नवम्बर ७३ तक अशान्ति, विघ्न-बाधा, लोगों से झगड़ा, मनमुटाव, कदाचित् धन का लाभ एवं यश-मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होगी। दिसम्बर ७३ से जून ७६ तक धन-अन्न-परिवार की वृद्धि, शत्रु एवं रोगों पर विजय, जमीन-जायदाद का सुख तथा राज-सम्मान प्राप्त होगा। जुलाई ७६ से जनवरी ७९ तक सप्तम (कण्टक) शनि, बाद में अगस्त ८१ तक ढैया (अष्टम) शनि तथा मार्च ८४ तक शनि महाराज पूज्य रहेंगे, अतः इन ७-८वर्षों तक भाग्योन्नति के लिए दिन-रात संघर्ष करना पड़ेगा। निजी-जायदाद की बिक्री, मानसिक क्लेश, मुकदमेबाजी, स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट तथा खर्च की वृद्धि होगी।

❀ [जन्म तारीख २१ जनवरी से ता० १९ फरवरी तक]

अप्रैल ७१ से नवम्बर ७३ तक (चतुर्थ) ढैया शनि तथा बाद में जून ७६ तक शनिदेव पूज्य रहेंगे और अगस्त ८१ से मार्च ८४ तक पुनः दुबारा ढैया शनिदेव (अष्टम) रहेंगे, अतः इन समयों में मन व्याकुल रहेगा! कर्ज बढ़ेगा स्थान-परिवर्तन, स्त्री और कुटुम्बियों से वियोग, धन-अन्न की कमी, दुश्मनों से कष्ट होगा। जुलाई ७६ से जुलाई ८१ तक पाँच वर्ष का समय आनन्द पूर्वक सुख और मस्ती से बीतेगा। रोगों-बीमारियों और कर्ज से मुक्ति, हर प्रकार की सिद्धी तथा काफी दौलत प्राप्त होगा, मगर पारिवारिक सुख नहीं मिल पायेगा।

❀ [जन्म तारीख २० फरवरी से ता० २० मार्च तक]

अप्रैल ७१ से नवम्बर ७३ तक शरीर कुछ अस्वस्थ, दुश्मनों से कष्ट, पारिवारिक कलह, परन्तु धन-अन्न-मकान-मित्र-सम्मान और संतान का लाभ होगा। दिसम्बर ७३ से जून ७६ तक ढैया शनि तथा जनवरी ७९ तक शनिदेव पूज्य रहेंगे, अतः शरीर में निर्बलता धन-हानि, मित्रों से धोखा, स्थान-परिवर्तन,

परिवार से कलह, मुकदमे बाजी और व्यापार-नौकरी के लिए हिम्मत से अधिक संघर्ष करना पड़ेगा। फरवरी ७९ से मार्च ८४ तक राज-सम्मान, अभीष्ट कार्यों की सिद्धि, दुश्मनों पर विजय, भाग्योन्नति एवं बुद्धि में अनेक चमत्कार उत्पन्न होंगे।

उपरोक्त जन्म की तारीखों के अनुसार जो फलादेश लिखे गये हैं, वे भगवान भानु के राशि सञ्चरण के आधार पर हैं। जन्म चाहे किसी भी वर्ष में हो— फलादेश सबके लिए समान है। यह पद्धति पौर्वात्य एवं पाश्चात्य मतेन प्रचलित एवं सर्वमान्य हैं।

नोट—उपरोक्त फलादेशों का संकेत स्थूल ग्रह संचार द्वारा किया गया है, अतः विशेष जानकारी करना चाहें तो प्रतिवर्ष अपना वर्षफल बनवा सकते हैं। आपत्ति कालीन कष्टकारी समयों में शनिदेव की शान्ति कराते रहने से बुरे फलों से छुटकारा भी मिल सकता है। Special life reading विशेष प्रकार के फलादेश, प्रश्नों के उत्तर, कुण्डली वर्षफल-जीवन फल निर्माण, ग्रहों के शान्ति के लिये जप-पाठ इत्यादि की सुन्दर व्यवस्था हमारे कार्यालय में है, जो अन्यत्र किसी भी ज्योतिष कार्यालय में उपलब्ध नहीं होगी। कार्यों की फीस एवं अवधि की जानकारी भी इस पुस्तक में दी गई है, जो यथोचित-निश्चित है। एक बार स्वयं परीक्षा कर देख लें—

पता—ज्योतिषसम्राट् पं० कैलाशनाथ उपाध्याय,
के. २१/८ हाथीगली, ब्रह्माघाट, (दादुलचौक) वाराणसी १

अंग्रेजी तारीख के अनुसार यात्रा कीजिए !

प्रायः देखा गया है कि शुद्ध शास्त्रीय रीति से यात्रा के लिए मुहूर्त्त तलाश करते रह जाइये—मिलना मुश्किल हो जाता है। भारतीय ज्योतिष मतेन दिशा-शूल, योगिनी, काल-राहु, नक्षत्र, योग, करण, वार-शूल, समय-शूल, दग्ध-हुताशनादि योग, शुभाशुभ शकुनादि का विचार घोर भ्रान्ति का कारण बन जाता है—मुहूर्त्त के अभाव में आपके आवश्यक कार्य रुक जाते हैं। ऐसी विचित्रता को देखते हुए मैंने काफी अनुसन्धान के बाद अंग्रेजी तारीख के अनुसार यात्रा करने की मुहूर्त्तावलि तैयार की है। अवश्य ही इस नवीन विषय पर पौर्वात्य एवं

पाश्चात्य ज्योतिर्विदों की ओर से अनेक खण्डन-मण्डन उपस्थित होंगे, अशास्त्रीय एवं निराधार प्रमाणित करने के लिए लोग उतावले हो जायेंगे; तथापि जनता-जनार्दन के निमित्त अपने इस अनुसन्धान कार्य को प्रस्तुत करने में मुझे गर्व है। इसकी आधार-शिला क्या है? इसका उत्तर मैं अपने किसी दूसरे लेख में देने का प्रयत्न कर रहा हूँ। अस्तु; इस मुहूर्त्त के उपयोग की विधि यह है कि निम्नांकित चक्र में दिये हुए अंग्रेजी तारीख-वार-और समय का विचार करने के पश्चात् आप यात्रा कर सकते हैं। जिस दिशा में यात्रा करना हो—बस; कैलेण्डर में तारीख देखिये—जिस तारीख को वह वार मिल जाय, फिर उसी दिन चक्र में दिये हुए समय पर आप निश्चित दिशा में यात्रा के लिए निकल जाइये। और कुछ भी आगा-पीछा विचार करने की जरूरत नहीं है। यही मुहूर्त्त आप किसी भी शुभ कार्य के लिए जैसे—व्यापार-नौकरी, यज्ञ-अनुष्ठान का शुभारम्भ, कहीं आना-जाना इत्यादि में विचार कर सकते हैं। आशा है यह नवीन विषय आपके लिए सुरुचिकर एवं सुविधाजनक सिद्ध होगा। यदि इससे आपलोगों का कुछ भी कल्याण हुआ तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूँगा। एतदर्थ आपकी सम्मति सादर आमन्त्रित है।

—कैलाशनाथ उपाध्या

किसी भी दिशा में यात्रा करने के लिए तारीख, वार, समय

तारीखें—जनवरी से दिसम्बर तक	पूर्व के लिए	दक्षिण के लिए	पश्चिम के लिए	उत्तर के लिए
१–६–७–१६–१७–२६–२७	रविवार	रविवार	सोमवार	रविवार
२–११–१२–२१–२२–३१	मंगलवार	सोमवार	मंगलवार	सोमवार
३–१०–१३–२०–२३–३०	बुधवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार
४–९–१४–१९–२४–२९	गुरुवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार
५–८–१५–१८–२५–२८	शुक्रवार	शुक्रवार	शनिवार	शनिवार
६–७–१६–१७–२६–२७	—	शनिवार	—	—
यात्रा का समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम से	दिन में १२ बजे से रात्रि १५ बजे तक	शाम ६ बजे से १२ बजे रात्रि तक	१२ बजे रात से सुबह ६ बजे तक	सुबह ६ बजे से शाम ६ बजे तक

अंग्रेजी तारीख एवं वार का संयोग सभी कार्य में त्याज्य

जनवरी में ता० १ को मंगलवार
फ़रवरी में ता० ११ को गुरुवार
मार्च में ता० १३ को रविवार
अप्रैल में ता० १९ को शनिवार
मई में ता० २५ को रविवार
जून में ता० २० को शनिवार
जुलाई में ता० ७ को बुधवार
अगस्त में ता० १६ को मंगलवार
सितम्बर में ता० २७ को गुरुवार
अक्टूबर में ता० ६ को शुक्रवार
नवम्बर में ता० १७ को बुधवार
दिसम्बर से ता० २६ को मंगलवार

ज्ञातव्य—उपरोक्त मास की तारीख़ में यदि उस 'वार' का संयोग हो जाय तो कोई भी शुभाशुभ कार्य करने पर असफल हो जाता है, अतः सर्वथा त्याज्य है।

❀ सर्वार्थ सिद्धिप्रद यात्रा मुहूर्त्त ❀

दिशा	वार	तिथि	समय	चन्द्रमा एवं लग्न	ग्राह्य नक्षत्र
पूर्व	मं० बु० र० शु०	२-६ १०-१४	मध्याह्न से रात्रि तक	मेष वृष सिंह कन्या धनु मकर	अश्विनी, रोहिणी, मृग० पू०फा०, उ०फा०, हस्त, पू०षा०, उ०षा०, मूल, श्रवण
आग्नेय	बुध शुक्र	७-८ १५-३०			
दक्षिण	सो० श० मं० बु०	१-२ ९-१०	सूर्यास्त से सूर्योदय तक	वृष मिथुन कन्या तुला मकर कुम्भ	रोहिणी,मृग० आर्द्रा, पुन० उ०फा०, हस्त, उ०षा०, श्रव०,धनि०,शत०,पू०भा०
नैॠत्य	सोम गु०	३-८ ११-३०			
पश्चिम	चं० श० गुरु	१-५ ९-१३	रात्रि से मध्यान्ह तक	मिथुन कर्क तुला वृश्चिक कुम्भ-मीन	मृग०, पुन०, पुष्य, अनुराधा, धनिष्ठा, शत० उ०भा०, रेवती
वायव्य	रवि शुक्र	३-४ ११-१२			
उत्तर	गु० शु० रवि	५-६ १३-१४	सूर्योदय से सूर्यास्त तक	मेष कर्क सिंह वृश्चिक धनु-मीन	अश्विनी पुष्य, पू० फा० उ०फा०, अनु०मूल, पू०षा० उ०षा०, उ०भा०, रेवती
ईशान्य	मंगल सोम गु०	४-७ १२-१५			

उपयोग विधि—जिस दिशा में यात्रा करना हो, उस दिशा के लिए पृष्ठांकित चक्र के अनुसार दिन-वार, तिथि, नक्षत्र, चन्द्रमा, लग्न एवं समय का मेल-जोल जिस दिन बैठ जाय–बस उसी दिन निश्चित समय पर यात्रा करनी चाहिये। प्रस्थान रखने की प्रणाली ठीक नहीं है, प्रस्थान रखकर फिर मनमाने ढंग से यात्रा करने पर मुहूर्त्त का कुछ भी शुभाशुभत्व नहीं रह जाता। सोचिये, मुहूर्त्तादि का विचार यात्रा करने के लिए किया जाता है, या कि प्रस्थान रखने के लिए? मोटी बात ध्यान में रखिये कि भोजन व खाने-पीने का पदार्थ कितने परिश्रम से केवल खाने के लिए बनाया जाता है, उसे सुरक्षित रखने के लिए नहीं—क्योंकि ताजा खाना थोड़ी ही देर बाद 'बासी' कहलाने लगता है और ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है, त्यों-त्यों रखे हुए भोज्य-पदार्थ के पौष्टिकतत्व कम होते चलते हैं—उसमें विष की मात्रा बढ़ती जाती है। ठीक उसी प्रकार यात्रा करने व यात्रा का प्रस्थान रखने का सम्बन्ध है। निश्चित मुहूर्त्त में यात्रा करते समय मन भी किसी प्रकार उदास या दुखी न होना चाहिये क्योंकि "मनोबलं सर्वबलं प्रधानम्" ऐसा कहावत भी है कि "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।" अत मानसिक उदासीनता भी कार्य को निष्फल करती है। यात्रा में भद्रा, भरणी व ज्येष्ठा तो सर्वथा त्याज्य है। इस बात का विचार कर लेना चाहिये कि सर्वार्थ सिद्धियोग एवं अमृतसिद्धियोग दोनों मिलकर 'विषयोग' बन जाता है—यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि दो पदार्थ मिलकर तीसरा पदार्थ दोनों से भिन्न बन जाता है, अतः रविवार को हस्त, सोमवार को मृगशिरा, मंगलवार को अश्विनी, बुधवार को अनुराधा, गुरुवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती तथा शनिवार को रोहिणी नक्षत्र पड़ने पर यात्रा में 'विषयोग' का परित्याग कर देना चाहिये। दूसरा विचारणीय विषय यह है कि जिस राशि में चन्द्रमा हो, उसी राशि का लग्न तथा लग्न से चतुर्थ-अष्टम-द्वादश में पापग्रह की स्थिति सर्वथा अग्राह्य है। यात्रा के १२ घंटे पूर्व से ही हजामत (क्षौर कर्म), मैथुन (स्त्री-सम्भोग) एवं दूध पीने का त्याग कर देना चाहिये। उपरोक्त निर्देशानुसार आपकी यात्रा भलीभाँति सफल होगी।

—कैलाशनाथ उपाध्याय

बेकार लोगों के लिए सुनहला अवसर !

३००) रुपये महीना कमाइये !!

आपका अपना निजी रोज़गार !!!

इस देश में बहुत से लोग पढ़-लिखकर भी बेकार अपना बहुमूल्य समय नष्ट कर रहे हैं। जिन्हें कहीं नौकरी न मिलती हो, पून्जी के अभाव में कोई रोजगार न कर सकते हों—वे लोग हमारी किताबें खरीदकर बाजार में घुम-फिर कर बेचें। यह हमारा दावा है कि कठोर परिश्रम करने पर अपने परिवार का भरण-पोषण करने भर हर महीने लगभग ३००) रुपये की आमदनो कर सकते हैं। कोई भीं रोजगार छोटा और निकम्मा नहीं होता, मेहनत का फल बड़ा मीठा होता है। केवल चालीस-पचास रुपये में आप अपना यह रोजगार अच्छी तरह चला सकते हैं। घबड़ाने और शर्म करने की कोई जरूरत नहों है। ज्यादा जानकारी के लिए आज हो मिलिए।

मुलाकात का समय—दोपहर में १ बजे से ३ बजे तक

पं० कैलाशनाथ उपाध्याय

मकान नं० के० २१।८, हाथीगली, ब्रह्माघाट
(पिन्जड़ावाला मकान), वाराणसी–१

तन्त्रालय का एक-परिचय

पिछले ७०० वर्षों से जगत्-प्रसिद्ध हमारे सिद्धमहायन्त्र अपने नौ पीढ़ी की जिम्मेदारी वखूवी निभाते चले आ रहे हैं। अनमोल हीरे-मोतियों से तौलने योग्य ईश्वर-प्रदत्त वरदान के रूप में इन सिद्ध महायन्त्रों का निर्माण शुरू-शुरू में इसी उपाध्याय वंश की आठ पीढ़ी पूर्व हमारे पूज्य पितृ-पितामह राजज्योतिषी श्री १०८ श्रीमान् पं० चिन्तामणी महामहोपाध्याय ने अपने इष्ट-वल और तन्त्र-विद्या के आधार पर किया था, उनके वनाये मार्ग पर उनकी अनमोल थाती रू-व-रू वैसे ही जनता की सेवा में तत्पर है। हमारे पूज्य पिता श्री पं० महादेव उपाध्यायजी की जप, तप, धर्म, ईश्वरोपासना और योगाभ्यास से मनुष्य की आत्मा एक उच्च आत्मा वनकर इन प्रसाद-स्वरूप सिद्ध महायन्त्रों को अत्यन्त जवर्दस्त शक्ति प्रदान किया है। अपने पूर्वजों की ऐसे ही कठिन साधना तथा घोर तपस्या की स्मृतियाँ आज भी बड़े-वूढ़ों के जुवान से सुनकर कौतुहल होता है। मन्त्र-जप, यज्ञ, इष्ट-सिद्धि, पूजन-पाठ तथा ईश्वर में उनकी दृढ़ निष्ठा-भावना के चरित्र सुनने से घोर आश्चर्य होता है। परम भागवत पूज पितामह एक आदर्श महात्मा थे, जिन्होंने मुसलमानों के जमाने में भारतीय तन्त्र चमत्कार से मुसलमानी शासकों को वशीभूत किया, अंग्रेजी शासन में सम्राट् जार्ज-पञ्चम और महारानी विक्टोरिया जैसे महान् शासकों से पुरस्कार-स्वरूप काफी जायदाद प्राप्त किया। भगवान की अटल कृपा से उनके द्वारा दीन-दुखियों की मनोकामनाएं पूरी हो जाती थीं। प्रत्येक समय उनकी कुटिया पर अपनी-अपनी कामनाओं की पूर्त्ति के लिए स्त्री-पुरुष, वच्चे-वूढ़े और अमीर-गरीव सबकी जमघट लगती थी, उनकी दुखभरी पुकार का एकमात्र सहारा केवल सिद्ध-यन्त्र ही होता था। आज उन्हीं सिद्ध-यन्त्रों के द्वारा हम अपने पूर्व महा-पुरुषों के पद-चिन्ह का अनुसरण करते हुए जनता की सेवा में तत्पर होकर उनकी आज्ञा का यथाशक्ति पालन कर रहे हैं। हम अभी नवयुवक अवस्था में अपनी २६ वर्ष की उम्र पार कर चुके हैं और सात सौ वर्ष प्राचीन उपाध्याय वंश की थाती, जवाहरातों से भी अनमोल पूर्वजों की देन अर्थात् सभी यन्त्र-मन्त्र-

तन्त्र पुराने पञ्चाङ्ग-जड़ी-बूटियाँ एवं हस्तलिखित पुस्तकों के सहारे इस कार्य-भार को सम्भाल रहे हैं। हमारे सिद्ध यंत्र-कवच-अंगूठी-चन्दन और रसायनों के लिए भारत ही नहीं; बल्कि बर्मा, श्याम, अफ्रीका, अमेरिका, नेपाल, लन्दन आदि देशों से भी मंगाने वालों का ताँता लगा रहता है। प्रतिवर्ष हजारों प्रशंसा-पत्र आते रहते हैं। दुनिया के हर कोने में हर जाति के आदमियों ने मँगाकर अपनी उजड़ी गृहस्थी बसाई है। मनुष्य के सोये हुए भाग्य देवता को जगाने वाली इस तन्त्र विद्या के अद्‌भुत चमत्कार का प्रमाण यह है कि यह सिद्ध यन्त्र-कवच-चन्दनादि विशेष यज्ञ-पूजन-हवन और मन्त्रों के द्वारा दीपावली, नवरात्र, ग्रहण, सवार्थसिद्धि-योग, अमृतसिद्धि-योग, रवि-पुष्य-गुरु-पुष्य योग आदि विशिष्ठ शुभ अवसरों पर बनाये जाते हैं, इसलिए इन यन्त्रों में दैविक शक्ति का समावेश हो जाता है। विचार कीजिए—मनुष्य के पूर्व जन्म में किए हुए कर्मों को हम लोग 'भाग्य' कहते हैं। भाग्य के सहारे मनुष्य के जीवन का सारा दारोमदार है। संसार में धन-दौलत, स्त्री-पुत्र, रोजगार-जायदाद इत्यादि अनेक सम्पत्तियाँ भरी पड़ी हैं; परन्तु भाग्यहीन के लिए सब व्यर्थ है। भाग्यहीन व्यक्तियों को सब जगह भयङ्कर संकट का सामना करना पड़ता है, हाथ में न रोजगार और न नौकरी, इष्ट-मित्र सगे-सम्बन्धी सभी मुँह फेर लेते हैं—पढ़ाई-लिखाई डिग्री-डिप्लोमा सब बेकार हो जाता है। मनुष्य का सबसे प्रबल शत्रु उसके खोटे ग्रहों का प्रभाव है। दुष्ट ग्रहों से हार मानकर भाग्यहीन व्यक्ति दाने-दाने के लिए लाचार हो जाते हैं। बड़े-बड़े राजाओं, अधिकारियों तथा सेठ-साहुकारों के भी स्वप्न छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। जिन्दगी में चारो ओर अन्धकार छाया रहता है, सोने की लंका और हँसता-खेलता परिवार जलकर राख हो जाती है, ऐसी भयङ्कर परिस्थिति में सिवाय आत्म-हत्या के और कुछ नहीं सूझता। ऐसे मनुष्यों के सोये हुए भाग्य को जगाने वाला, अपार अन्धकार के सागर में डुबते हुए को बचाने वाला अगर कोई सहारा है तो केवल हमारे तन्त्रालय का सिद्ध-यन्त्र-कवच और चन्दन ही है। इस मँहगाई के जमाने में शुद्ध और उत्तम पूजा की सामग्री अधिक कीमत देकर खरीदनी पड़ती है, इसीलिए यन्त्र-कवच व चन्दन के निर्माण में होने वाले यज्ञ-यागादि, पूजन, हवन, जप-पाठ तथा ब्राह्मणों के वस्त्र-वर्ण दक्षिणादि पर काफी अधिक खर्च पड़ जाता है। यही कारण है कि हमारे यन्त्र, कवच और चन्दन के मूल्य कुछ ज्यादा ही लगते हैं; किन्तु आप इतमीनान

रक्खें, गुण और प्रभाव की अपेक्षा में इनके मूल्य बहुत कम हैं। हम अपने कुछ C
भक्त ग्राहकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए जो लोग किसी कारणवश यन्त्र व कवच धारण नहीं कर सकते, उनके लिए उसी यन्त्र की विधि से चन्दन का निर्माण भी करते हैं, इस चन्दन को प्रतिदिन स्नान के बाद जल में घोलकर मस्तक पर लगाया जाता है। यन्त्र व कवच का जितना प्रभाव है, उतना ही चन्दन का प्रभाव है, अन्तर सिर्फ इतना ही है कि यन्त्र व कवच दो वर्ष तक अपने प्रभाव को बनाये रखता है और चन्दन लगभग तीन-चार मास में समाप्त हो जाता है, अतः फिर दुबारा मंगाना पड़ता है। अब हम यहीं पर अपने यन्त्र-कवच, और चन्दनके नाम, गुण, प्रभाव और मूल्य का उल्लेख कर रहे हैं—

यन्त्र का नाम A	गुण और प्रभाव	B	C	D
श्रीकाशी विश्वेश्वर सिद्ध यंत्र	बाधा व संकट निवारण के लिए	४)	११)	१)००
नवग्रह शान्तियंत्र (स्पेशल)	खोटे ग्रहों की शान्ति के लिए	५)	१५)	१)००
सर्वसिद्ध महादुर्गा यन्त्र	परीक्षा में पास होने के लिए	६)	२१)	१)००
धनसम्राट् कुबेर सिद्ध यन्त्र	रुपये-पैसे की प्राप्ति के लिए	१५)	५१)	५)००
सर्वरोगनाशक सिद्ध यन्त्र,	हर प्रकारके रोगोंपर कामयाब	१५)	५१)	५)००
सर्वत्रविजयी सिद्ध यन्त्र	व्यापार-नौकरी के लिए	१५)	५१)	५)००
स्पेशल प्राणरक्षाकवच	घबराहट व चिन्ता के लिए	१५)	५१)	५)००
विवाह-बाधानाशक यन्त्र	विवाह संबंधी बाधाओं में	१५)	५१)	५)००
सर्वकार्यसिद्धिप्रद यन्त्र	दुश्मनों पर और मुकदमा में	१५)	५१)	५)००
साढ़ेसाती व ढैया शनि-यन्त्र	शनि के बुरे प्रभाव के लिए	१५)	५१)	५)००
मेषराशि के लिए रक्षाकवच	[मेषादि बारह राशियों पर	७)	२१)	१)५०
वृषराशि के लिए रक्षाकवच	जो बराबर खोटे ग्रहों का	२०)	६५)	६)५०
मिथुनराशि के लिए रक्षाकवच	चक्र चला करता है, मुसीबत	१७)	६०)	५)७५
कर्कराशि के लिए रक्षाकवच	और हर प्रकार की परे-	१०)	३०)	३)२५
सिंहराशि के लिए रक्षाकवच	शानियाँ बढ़ जाती हैं, रोजी-	६)	१५)	१)५०
कन्या राशि के लिए रक्षाकवच	रोजगार में घाटा, नौकरी में	१७)	६०)	५)७५
तुला राशि के लिए रक्षाकवच	संकट, अधिकारियों व कर्म-	२०)	६५)	६)५०
वृश्चिकराशि के लिए रक्षाकवच	चारियों से झगड़े तथा	७)	२१)	१)५०

D

धनुराशि के लिए रक्षाकवच	परिवार में बीमारियों का	१६)	५५)	५)६०
मकरराशि के लिए रक्षाकवच	साम्राज्य फैल जाता है, अतः अपनी-अपनी राशि के लिए	१६)	६२)	६)२५
कुम्भराशि के लिए रक्षाकवच	यन्त्र अथवा चन्दन मँगाकर प्रयोग करें तथा दुष्ट ग्रहों के	१६)	६२)	६)२५
मीनराशि के लिए रक्षाकवच	प्रभाव से बचें।]	१६)	५५)	५)६०
सन्तानदाता सिद्धयन्त्र	सन्तान प्राप्ति के लिए	१५)	५१)	५)००
स्पेशल भाग्योदय कवच	सभी मनोरथ की सिद्धि के लिए अचूक यन्त्र	२१)	७०)	७)००
स्त्रियों के रक्षार्थ सिद्धकवच	सौभाग्यवर्धक रक्षा यन्त्र है	२५)	१०१)	८)४०

A. जो नाम यन्त्रों के हैं, वही नाम चन्दन के हैं। आर्डर भेजते समय साफ-साफ लिखें कि यन्त्र चाहिये अथवा चन्दन।

B. कोष्ठक में यन्त्रों के मूल्य दिये गये हैं, इसका प्रभाव दो वर्षों तक बना रहता है।

C. कोष्ठक में सम्पूर्ण जीवन भर के लिए यन्त्रों का मूल्य है।

D. कोष्ठक में तीन-चार मास चलने वाले चन्दन का मूल्य है।

हमारे तन्त्रालय के अन्य अनमोल एवं जनप्रिय पदार्थ--

नाम	गुण	५ तोला का मूल्य
प्राचीन अमृत रसायन चूर्ण	चर्मरोग, उदर, रक्त एवं सफेद दाग पर	१०)
चिन्ताहरण-रसायन	पेट संबंधी प्रत्येक नये-पुराने रोगों पर	१०)
जीवन-रसायन	दिमागी शक्ति बढ़ानेवाली अनमोल दवा	१५)
श्रीकाशीविश्वनाथ रसायन	नई व पुरानी ख़ूनी बादी बवासिर पर	११)
स्पेशल फुलपावर तां० अंगूठी	प्रत्येक कामना की पूर्ति में सहायक	११)
पञ्चधातु लॉकेट	८ वर्ष तकके बच्चोंकी स्वास्थ्य रक्षा पर	५)
जीवन फल दर्पण (पुस्तक)	तमाम जिन्दगी की हालात जानने के लिए	५)
अशोक भविष्यफल (वार्षिक)	प्रतिवर्ष दो माह पहले ही छप जाता है	१)

दीपावली एवं नवरात्र—आदि महान् शुभ-पर्वों पर सिद्ध किए हुए हमारे यन्त्र-कवच-चन्दन-अंगूठी और रसायन बड़े ही अचूक होते हैं। अनन्त काल से ही भारत के धुरन्धर तान्त्रिक ऐसे ही महापर्वों पर नाना प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त करते आये हैं। तन्त्र-जगत में यह पुण्यकाल बहुत ही महत्वपूर्ण मानी गयी है। हमारे तन्त्रालय की ये अनमोल निधियाँ इन्हीं महत्वपूर्ण समयों में अनेक सिद्ध वैदिक-पौराणिक मन्त्रों द्वारा विशेष पूजन सहित निर्माण किया जाता है, विशेष पूजन द्वारा सिद्ध किए जाने पर इनमें अपरमित शक्ति भर जाती है। जो सज्जन इन दैव-प्रसाद-स्वरूप अलौकिक शक्तियों से लाभ उठाना चाहें—वे उपरोक्त यन्त्र-कवच और चन्दन की सूची में से अपने-अपने कामना के मुताबिक सामान का चुनाव कर के आर्डर भेजें। आर्डर भेजते समय अपने पत्र में अपनी कामना-मनोरथ, यन्त्र-चन्दन या कवच का नाम, अपना नाम, उम्र, जाति पूरा पता और कितना रुपया मनिआर्डर भेज चुके हैं—यह सब कुछ साफ-साफ लिखें, ताकि आपका सामान भेजने में हमें कोई परेशानी न हो। अगर आप पूरा विवरण नहीं लिखेंगे तो सामान भेजने में गलती हो सकती है और आपकी यह जरा-सी भूल आपको बहुत धोखे में डाल सकती है, अतः हमारे उपरोक्त निवेदन पर ठंढे दिल से विचार करके एकाग्रचित्त हो बिल्कुल एकान्त में बैठकर पत्र लिखें, याद रक्खें—यह सब विषय पोस्टकार्ड पर लिख कर कभी नहीं भेजना चाहिये। आर्डर भेजते समय ध्यान रक्खें कि—(१) जिस सामान का आर्डर भेजे हैं—उसका पूरा मूल्य और रजिस्ट्री खर्च के लिए १) रुपये ५० पैसे, दोनों धन जोड़कर पूरा रुपया पहले ही मनिआर्डर से भेज दीजिए। अगर आपका मनिआर्डर नहीं आयेगा तो आपका पत्र फाल्तू समझ कर रद्दी की टोकरी में फेंक दिया जायेगा। (२) वी० पी० द्वारा कोई भी सामान नहीं भेजा जायेगा। (३) अगर आप अपने पत्र का जवाब चाहते हैं तो डाकघर के टिकट लगे लिफाफे पर अपना पता लिखकर अपने पत्र वाले लिफाफे में रखकर भेजा कीजिए, वर्ना पत्र का जवाब नहीं भेजा जायेगा। (४) आर्डर भेजते समय अपने जन्मपत्र की नकल अथवा दोनों हाथ का फोटो या जन्म तारीख जरूर भेजें। (५) जब आपके आर्डर का सामान कवच-यन्त्रादि हम रजिस्ट्री से भेजते हैं तो उसी के साथ धारण और प्रयोग की विधि भी अवश्य भेज देते हैं।

अगर आप माता जगदम्बा और काशी विश्वनाथ की शक्ति पर पूरा भरोसा

F

करके हमारे नियमानुसार यन्त्र-मन्त्र-कवच या चन्दन का प्रयोग करेंगे तो निश्चय ही आपका और आपके परिवार का कल्याण होगा, इसमें तनिक भी अगर सन्देह हो तो आप अपना बहुमूल्य आर्डर मत भेजें। इन सब विषयों में और कुछ ज्यादा कहना या लिखना सूर्य को दीपक दिखाना होगा। हमारा पूर्ण आशीर्वाद आपके साथ है। आप फलें-फूलें-दीर्घजीवी बनकर अपने परिवार और राष्ट्र-हित का कार्य अपने हाथों करें। इति शिवम्, शुभंभवतु-दीर्घायु भूयात् ॥

नोट—पत्र व्यवहार करते समय हमारा और अपना पता साफ-साफ लिखें।

हमारा पता—

पं० श्री कैलाशनाथ उपाध्याय, तांत्रिक

मकान नं० के० २१/८ नारायणदीक्षित लेन, बाराणसी-१ (उ० प्र०)

हमारे कार्यालय का गणित एवं फलित विभाग

मनुष्य के जीवन का सारा दारोमदार उसके निश्चित जन्म-समय पर निर्भर है। यदि जन्म-समय में जरा भी अन्तर हुआ तो कुण्डली शुद्ध रूप में नहीं बन सकती, फिर यह तो सर्वमान्य बात है कि अगर जन्म-पत्र शुद्ध न हो तो फलादेश कदापि नहीं मिल सकता। हमारे सामने अनेकों ऐसी जन्मपत्रिकाएं आयीं, जिनकी गणित बिल्कुल अशुद्ध, भ्रष्ट एवं अपने यजमान को गुमराह करने वाली पंडितों की चालबाजी के सिवाय और कुछ नहीं मिला। ज्योतिषी-वर्ग आमतौर से प्राचीन ज्योतिषी इतना भी नहीं परिश्रम करना चाहते कि कम से कम प्रत्येक जन्मपत्र में तात्कालिक ग्रहस्पष्ट, ग्रहबल, ग्रहों की अवस्थायें, शुद्ध इष्टकाल एवं स्पष्ट लग्न की गणित लगाकर कुण्डली बनावें। कितनी पत्रिकायें तो ऐसी देखने में आई हैं कि पूरा पञ्चाङ्ग का नकल ही उतार कर रख दिया है। अतः हम प्रत्येक ज्योतिष-प्रेमियों को यह सलाह देंगे कि अपना और अपने स्त्री-बाल-बच्चों एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों की जन्मपत्रिकाएं कम से कम शुद्धतम रीति से बनवाकर अवश्य रख लें। आपकी जन्मकुण्डली जब शुद्ध होगी तो जिन्दगी की प्रत्येक घटनाएं शत-प्रतिशत अवश्य ही ठीक घटेगी।

हमारे कार्यालय में—ज्योतिष-सम्बन्धी प्रत्येक कार्य बड़ी सावधानी पूर्वक निश्चित समय पर किया जाता है। जन्मकुण्डली बनवाने के लिए जन्म तिथि (अंग्रेजी तारीख, मास, सन् अथवा संवत्, मास, पक्ष, तिथि, वार), जन्म समय (दिन में या रात्रि में कितने बजकर कितने मिनट पर), जन्मस्थान (गाँव, शहर, जिला व प्रान्त), पुत्र की कुण्डली है या कन्या की, पुत्र या कन्या के पिता, माता व दादा का नाम, जाति तथा व्यवसायादि विवरण विस्तारपूर्वक लिखकर भेजना जरूरी है। यदि जन्म का समय ठीक तरह से ज्ञात न हो और अधिक से अधिक १ घंटा आगे-पीछे अन्तर हो तो भी हम अपने ज्योतिष-ज्ञान के आधार पर ठीक तरह से कुण्डली बना सकते हैं। अगर जन्म-समय में एक घण्टा से ज्यादा अन्तर होगा तो कुण्डली बनाना मुश्किल काम है। यदि आप कुण्डली न बनवाकर केवल अपने पूरी जिन्दगी का फलादेश लिखवाना चाहें तो 'जीवन-फल' बनाने के लिए अपने शुद्ध जन्मकुण्डली की नकल और यदि कुण्डली न हो तो अपने दोनों हाथ की रेखाओं का फोटो Palm-print भेजें। यदि आप वर्ष-फल बनवाना चाहें तो जन्मकुण्डली की नकल अथवा जन्मतारीख-मास-ई०-सन् और जन्म-समय लिखकर भेजें, अगर यह भी न मालूम हो तो किसी फल या फूल का नाम लिखकर भेजें। यदि किसी प्रश्न का उत्तर मालूम करना हो तो प्रश्न लिखने का ठीक समय और तारीख लिखकर भेजें। हम अपना पूरा गणित का कार्य शुद्ध भारतीय साम्पातिक काल (R. A. M. C.) तथा दृक्सिद्ध (दृश्य) मत के आधार पर करते हैं—इसमें किसी प्रकार की गलती होने की कोई गुञ्जाइश नहीं रहती। सभी कार्य बड़े साफ अक्षरों में, शुद्ध हिन्दी भाषा में विस्तार पूर्वक समझाकर लिखा जाता है—ताकि आप लोग खुद पढ़कर समझ सकें। ज्योतिष का काम एक दृढ़ निष्ठा व घोर तपस्या का काम है। मामूली नक्षत्र व राशियों का ज्ञान करके भुलावा में डालने वाले बहुतेरे ज्योतिषी घूमते-फिरते रहते हैं, मगर परिश्रम पूर्वक कार्य करने वाले ज्योतिषी आपको बहुत कम मिलेंगे। सन् १९६० से विश्वविख्यात चिन्ता-हरण जंत्री तथा अनेकों पञ्चाङ्गों की गणित हम करते आ रहे हैं—इससे तो आप परिचित ही हैं। अतः आप से आग्रह है कि अपना बहुमूल्य आदेश भेजकर एकबार हमारे ज्योतिष कार्य से अवश्य ही विश्वस्त होने का प्रयत्न कीजिए। हमारे ज्योतिष सम्बन्धी कार्यों का पारिश्रमिक (दक्षिणा) Fee इस प्रकार है—

H

कार्य का नाम	इतने दिनों में तैयार करके भेजा जायगा	दक्षिणा	डाकखर्च अलग
जन्मपत्री Horoscope	मामूली टीपन	३)००	१)२०
साधारण तौर पर, बिना फलादेश का	चार दिन में	५)००	१)३५
साधारण तौर पर, फलादेश सहित	एक सप्ताह में	११)००	१)५०
मध्यम श्रेणी का, फलादेश सहित	दस दिन में	२१)००	१)६५
बड़ी कुण्डली, फलादेश सहित	पन्द्रह दिन में	२५)००	१)६५
विस्तारपूर्वक जीवन फल सहित	बीस दिन में	५१)००	१)८०
प्रत्येक वर्ष के फल सहित बड़ी कुण्डली	एक मास में	१०१)००	२)१०
सर्वश्रेष्ठ विस्तृत जन्मपत्रिका	तीन मास में	२५०)-५०१)००	५)००
वर्ष फल Annual Reading	मामूली वर्षफल	३)००	१)२०
एक साल का साधारण फल	तीन दिन में	५)००	१)२०
,, ,, १२ महीने का अलग-अलग	पाँच दिन में	११)००	१)३५
,, ,, साप्ताहिक वर्षफल	दस दिन में	२१)००	१)५०
,, ,, दिन प्रतिदिन का फल	एक मास में	५१)००	२)१०
जीवन फल Life Reading साधारण	एक सप्ताह में	२५)००	१)८५
विस्तारपूर्वक पूरी जिन्दगी का फल	एक मास में	१०१)-५१)००	३)००
प्रश्नोत्तर—एक प्रश्न का उत्तर	तीन दिन में	५)००	१)२०
,, दो प्रश्न का उत्तर	,,	८)००	१)२०
,, तीन प्रश्न का उत्तर	,,	१०)००	१)२०
,, पाँच प्रश्न का उत्तर	,,	१५)००	१)३५

नोट—आर्डर भेजते समय पूरी दक्षिणा और डाक खर्च दोनों ही रकम पहले मनिआर्डर से भेजें। वी० पी० द्वारा कोई सामान नहीं भेजा जायेगा। बिना दक्षिणा प्राप्त हुए आपके किसी भी कार्य पर कोई विचार नहीं किया जायेगा। पत्रोत्तर प्राप्त करने के लिए जवाबी पत्र व्यवहार करें।

हमारा पता—**ज्योतिषाचार्य पं० कैलाशनाथ उपाध्याय**

के० २१/८, नारायण दीक्षित लेन, बाराणसी–१

मुद्रक—श्री महेन्द्रप्रसाद गुप्त, श्रीशंकर मुद्रणालय, हाथीगली, वाराणसी १

काशी की परम्परा में सात सौ वर्ष प्राचीन सिद्ध यन्त्र

फायदा न पहुँचने पर मूल्य वापस की गारण्टी – एक बार परीक्षा अवश्य करें।

दीपावली पर निर्मित यन्त्रों का कार्य एवं नाम == मूल्य

१- विघ्न-बाधाओं से बचने हेतु काशी विश्वेश्वर यन्त्र = ३.६२
२- दुष्ट ग्रहों से रक्षा के लिए नवग्रह शान्ति यन्त्र = ४.८७
३- परीक्षा मुकदमा में विजय दिलाने वाला दुर्गा यन्त्र = ६.६२
४- धन प्राप्ति के लिए धन सम्राट कुबेर यन्त्र = १५ रु.
५- नये-पुराने सभी रोगों के लिए रोगनाशक यन्त्र = १५ रु.
६- व्यापार नौकरी में सर्वत्र विजयी महायन्त्र = १५ रु.
७- विपत्तियों से रक्षा हेतु प्राण रक्षा कवच = १५ रु.
८- अविवाहितों के लिए विवाह बाधानाशक यंत्र = १५ रु.
९- मनोकामना पूर्ति के लिए कार्य सिद्धी यन्त्र = १५ रु.
१०- मेषराशि का ग्रह शान्ति रक्षा कवच = ७ रु.
११- वृषराशि का ग्रह शान्ति रक्षा कवच = २० रु.
१२- मिथुनराशि का ग्रहशान्ति रक्षा कवच = १७ रु.
१३- कर्क राशि का ग्रह शान्ति रक्षा कवच = १० रु.
१४- सिंह राशि का ग्रह शान्ति रक्षा कवच = ६ रु.
१५- कन्याराशि का ग्रहशान्ति रक्षा कवच = १७ रु.
१६- तुलाराशि का ग्रह शान्ति रक्षा कवच = २० रु.
१७- वृश्चिक राशि का ग्रहशान्ति रक्षा कवच = ७ रु.
१८- धनराशि का ग्रहशान्ति रक्षा कवच = १६ रु.
१९- मकरराशि का ग्रहशान्ति रक्षा कवच = १९ रु.
२०- कुम्भ राशि का ग्रहशान्ति रक्षा कवच = १९ रु.
२१- मीनराशि का ग्रह शान्ति रक्षा कवच = १६ रु.

हमारे कार्यालय में

कापी साइज की जन्मपत्री ५१) व १०१) रु. में तथा लम्बे साइज की २५) व ३५) रु. में, वर्षफल ११) व २१) रुपये में और हस्तरेखा अथवा जन्म तारीख द्वारा सम्पूर्ण जीवन का फलादेश ५१), १०५) व २५०) में लिखकर दिया जाता है। प्रश्नोत्तर की फीस प्रति प्रश्न पाँच रुपये तथा व्यापारियों के लिए वार्षिक तेजी-मन्दी लिखकर देने की फीस १००) रुपये है! पूरी दक्षिणा अग्रिम भेजना अनिवार्य है। पचास पैसे का डाक-टिकट आने पर पत्रोत्तर दिया जायेगा!

ज्योतिष द्वारा जीवन का सच्चा हाल | लिखित
एक साल का दैनिक भविष्य | मंगावें

पता:- श्री कैलाशनाथ उपाध्याय

मकान नं. के. $\frac{२१}{८}$ नारायणदीक्षित लेन **वाराणसी-१**

आपके भाग्य में क्या लिखा है? **परीक्षा प्रार्थनीय है।**



* श्री हरिः *

रमलसार प्रश्नावली

(अर्थात् गुप्त रमल प्रदीपिका)



सम्पादक एवं संशोधक

रमल-सम्राट् पं० बचानप्रसाद त्रिपाठी के शिष्य

काशीनिवासी पं० कैलाशनाथ उपाध्याय 'बालयोगी'

जिसको बाबू सीताराम एडवोकेट प्रवर्तक

सूर्यप्रसाद एण्ड कम्पनी

बड़ा गणेश वाराणसी ने प्रकाशित किया।

पुस्तक मिलने का पता—

श्री सीताराम भवन, के. २९७१, नवापुरा, वाराणसी

प्रथम बार] [मूल्य २५ पैसा

रमलसार प्रश्नावली की प्रयोग-विधि

पहली विधि—प्रश्न करने के पूर्व अपने हृदय को बिल्कुल स्थिर कर लें और ज्योतिषी जी के सम्मुख कोई फल दक्षिणा सहित रखकर अपने इष्टदेव का स्मरण करते हुए अपने हृदय का प्रश्न निवेदन करें। फिर उनके सामने सादे कागज या स्लेट पर श्वाँस रोककर कलम या पेंसिल से बिना गिने बिन्दुओं की चार पंक्तियाँ बनावें। हर पंक्ति के दो-दो बिन्दु को एक-एक पाई से मिलाते जावें। यदि आखीर में एक बिन्दु बच जाय, तो पंक्ति के सामने बिन्दु (०) रखें और अन्त में कोई बिन्दु न बचे, तो पाई रखें। इस प्रकार चारो पंक्तियों के आखीर वाली पाई (—) या बिन्दु (०) से रमल की एक शक्ल बन जायेगी।

उदाहरण—इस प्रकार बिन्दु रखा ०—० ०—० ०—० ०

और हर दो बिन्दुओं को पाई से मिलाये गये, ०-००-००-० (॒॒॑)

तो अन्त में जो बिन्दु (०) या पाई (–) मिली। ०-००-००-००-०

उन्हें क्रमशः इस प्रकार रखने से, ०-००-००-०

यह शक्ल ॒॒॑ बनी जिसे लहियान कहते हैं। यही शक्ल प्रश्नकर्त्ता का उत्तर देगी।

दूसरी विधि—चन्दन की लकड़ी का चौकोर पाँसा बनवावें। इस पाँसे के हर पहलू पर क्रमशः पाई (—) और बिन्दु (०) खुदवा दें। प्रश्नकर्त्ता स्थिर हृदय से प्रश्न को याद कर और अपने इष्टदेव का स्मरण कर चार बार पाँसा फेकें और हर बार जो पाइ (—) या बिन्दु (०) आवे उसे एक के नीचे एक लिख लेवें। इस तरह भी रमल की एक शक्ल बन जायेगी। इस पुस्तक में उस शक्ल के सामने जो फल लिखा है, वही प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न का उत्तर होगा।

॥ ओ३म् ॥

रमलसार प्रश्नावली

ॐ श्रीगणेशायनमः अथ रमलप्रश्न ॥ परंब्रह्मस्वयंभूतं अलख अल्लाः वासुदेव ॥ तस्य स्मरणमात्रेण सर्वकामप्रवर्धनम् ॥१॥

दोहा—श्रीगणपति गुरु पद सुमिरि, कृपासिन्धु भगवान। उलटी ते सूधी करैं, प्रश्न सबै परमान ॥ २ ॥ सोरठा—दानि आल की फाल, प्रथम हती यह फारसी। भाषा करी रसाल, समुझि परै कारज सबै ॥३॥ अन्न ब्रह्म स्तुति करैं फिरि मनसा मन चीति। तीनि बेर सुमिरै हिये ताकी बरनो रीति ॥४॥ अन्न ब्रह्म स्वयं देव जगदाधार सुरप्रियः। सर्वदा विश्व रूपंच देव देव नमोस्तुते ॥७॥ दोहा—अनगिन्तिन बुन्दा धरै चारि पंक्ति करि सोय। एक वै व नुकता धरै सम रेखा धरि लेय ॥ ६ ॥ कारज जेते जगत में सिद्धि होय सब सोय। द्वै को तामें भाग दे एक दोय गिनि लेय ॥७॥ जो मनसा करि कामना सब विधि उठें प्रमान। खोलि देखि आगे कहै शुभ अरु अशुभ बखान ॥७॥ मन चीते सोई लखै समुझि परै गति सोय। कारज जेते जगत में जो कछु होय न होय ॥६॥

(⚬̲̲) शकल पहली नाम लहियान स्वामी गुरु तस्य फलं।

दोहा—कारज तुम्हरो सिद्ध है संशय करो न कोय। जो मन चीतो कामना सोई शुभ सब होय। गेह बाम नर जातिकै बैर परे मन जानि। चाहत हैं नुकसान व अदुख दायक पहिचान ॥ तेल शिखा कर गहि करो दर्पन दोइज देख। गई वस्तु मिलिहैं सही। दुर्जन मिलै विशेष। गेह मुखालिफ सकल शुभ दया भक्ति सुन काम। कृपासिन्धु प्रभुको भजो सुमिरो आठौ याम ॥ बीस दिवस में सिद्धि है जो कारज मन अर्थ। कृपासिंधु हरिकी कृपा सब विधि प्रभु समर्थ ॥ रहो जौन स्थान पर ठौ

तजिय जनि सोय । सकल भांति होइहैं भलो यहजानै नर लोय ॥

(⁘) शकल दूसरी नाम कब्जुल दाखिल स्वामी रवि तस्य फलम् ॥

शगुन सकल पृच्छक सुनो जो मन चीता होय । अजगैबी सुख सम्पदा मिलहि द्रव्य धन तोहि ॥ तात मात की अति कृपा जग यश होय अनूप । दिव्य वस्त्र अरु मधुरता मिलिहैं शुभ जन भूप ॥ भक्ति इमारति बन्दगी दया धर्म को मूल । जामें सब ही सिद्धि है मेरु करै लघु तूल ॥ बिछुरे पीतम फिरि मिलैं कर्म मित्र धन धाम । सुमिरन करि परब्रह्म को सब विधि पूरन काम ॥

(⁘) शकल तीसरी नाम कब्जुल खारिज स्वामी राहु तस्य फलम् ।

दोहा—जो मनमें चिन्ता भरी पृच्छक सुनो सुजान । दूरि होय संशय सबै यह निश्चय मन आन । दया बन्दगी राम की रहै सुखी सौं देख । बीस दोय दिन धीर धरु कारज होय विशेष ॥ साधी सगुनौती यहै मिटै कर्म की रेख । साज सात नाजको दान करि कारो कपरा भेष ॥ जय जय मङ्गल शुभ घड़ी जिहि दिन जाहु विदेश । धर्म करो हरि भक्ति मन सबही बात सु देश ॥ यही साल में सुख घनों प्राप्ति होइ विदेश । जासों करि हौ प्रीति मन फूलै फलै सुरेश ॥

(☰) शकल चौथी नाम जमात स्वामी बुध तस्य फलम् ॥

दोहा—अशुभ अफल शुभ दिन नहीं, जो कारज मन वांछि । तात मातके पुन्य ते तब प्रताप अवलंछि । कर्म्म भ्रम स्वप्न लखि हानि होय कछु जानि । पूजै देवी देवता होय उभै लों ग्लानि ॥ उभै मास दिन तीन लौं होइहै काम विशेषि । धीरज धरि भगवन्त भजु उमरि गई मत देखि ॥ कछू धर्म्म खैरात करि विसरा जनि हरि नाम । राम कृपाते सुलभ सब पूजै सब मन काम ॥

(ः) शकल पांचवीं नाम फरह स्वामी शुक्र तस्य फलम् ।।

दोहा—सगुन एक सुन्दर अहै सुखद मिलै सब ऐन। होय अमित सुख वर्ष में नई भूमि सुख सैन ।। आगे जे पीतम करे ि नते स्वारथ लाभ। सुख सम्पति वहु भांति की निश्चय करि मन लाभ। वहुत मुखालिफ जाति में राम दाहिनी तोहि। सब्ज रंग नर नारि जे दुखदायक हैं दोय। तिनको तरस न डर कछू कृपा रामकी तोहि। मन चीतो कारज मिलै सकल भांति सुख होय। गेह कुटुम्ब ते सहज सुख शादी खुशी मनाय। करु साहिव की वन्दगी निर्भय जग यश पाय ।। भेद दिलको दीजिये काहू सों पहिचानि। दिन दिन खुशी विलास है संशय तजै सुजान ।।

(ः) शकल षष्ठो नाम उकला स्वामी शनि तस्य फलम् ।।

दोहा जे दिन तोको नहस है ग्रह कपूत तू जानि। जो कारज मन अर्थ हैं होय न विधि पहिचानि ।। धीरज धरि मन हरि सुमिरि कछुक दिनन यह वात। राम कृपा ते फिरि सुलभ जे दिन विषम सुजान ।। मास एक दिन तीनि लों आखिर काम विशेष। राम भजन खैराति कर तव सुख आखिन देखि ।। नारि एक तेरो भलो चाहत है सुन वीर। ताके हित उपदेश ते पलटै सुखद समीर। दुशमन तेरे वहुत हैं तिनको तेश न मानि। आगे साहिव की कृपा होय निरन्तर जानि।

(=) शकल सातवीं नाम अकीस स्वामी शनि तस्य फलम्।

दोहा—जो साहिव नीको सगुन सुख अनेक धन लाभ। जो मन में चिन्ता करी सो पावो करि भाव ।। करो दोस्ती राम दिल नीक होय सव वात। दिन सूधे ताले वड़े कृपा सवै विधि तात। गमन करौ जा देश को उद्यम खुशी विशाल। गेह रहौ तो अति खुशी तुम पर कृपा गोपाल। कोतह कद प्रालंब नर तिनते डरु परहेज। है तुमरो कुल कौम में तिनको चलै न तेज। लाख

चदी कोई करै व्यापै कछू न लेश। जौ बिछूरो सो फिर मिले कृपा राम शुभ वेश। राम दया शुभ कर्म्म ते गई वस्तु निय-राय। मंगलता सुख सर्वदा राम विसर जनि जाय।

(०) शकल आठवीं नाम हुमरा स्वामी मंगल तस्य फलम्।

दोहा–सगुन सुबानी कहत हैं कछुक दिनन धरु धीर। आगे जे दिन दुख सहे गहे वाम सुनु वीर॥ बीस पांच दिन धीर धरु फिर कारज अनुसार। ग्रह जबून दिन शुद्धता दान करै यह पार। स्याम स्वेत लय वसन कछु दीजै मन करि प्रीति। यों सब सुख आसान हैं बचे रहौं विपरीत॥ सुत उत्सव सुख अति घनो होइ-हैं उदित विशाल। कुल दीपक सुन्दर सखद सदा रहै सुख हाल। कछू सोच मन मति करै षोडश दिन के बाद। सिद्धि होय कारज सबै राम भजे करि यादि। मेहरबान सरदार एक तासौ सुख धन लाभ। तन मन सों करि बन्दगी और न दूजो भाव॥

(०) शकल नवमी नाम व्याज स्वामी चन्द्र तस्य फलम्।

दोहा—राम कृपा सुन्दर सगुन भाग बड़े सुख चैन। धीर धरे कारज सुफल विधि हरि शिव कहि दीन॥ जो मनमें मनसा करी सुफल काज करि ढील। दिन चारिक की देर है फिरि पीछे सुख सील॥ दुशमन तेरे बहुत हैं चाहत हैं उत्पात। दया भक्ति प्रभु की करो उनकी चलै न बात॥ फिरि सकल तुम साहिबी राम भजन भजि सोय। काम ढील धीरज धरो गत षट दिन के होय॥ नारि एक परपंचिनी तासों करि परहेजु। दिन सूधे साहिब कृपा रहौ सदा सुख सेजु॥ राम कृपा सुख सहज ही उद्यम खुशी विशाल। तासु सोच सब दूरि करु भज श्री राम दयाल॥ तोसों पलिहै बहुत नर तन होई आधीन। सुख संपति बहु पाइहौ ज्यों अगाध जल मीन॥

(०) शकल दशमी नसरतुल खारिज स्वामी रवि तस्य फलम्।

दोहा—सगुन ब्रह्म पृच्छक सुनौ भलो सुफल नहिं तोहि।

देखत सबरो काज तब सब विधि बिगरो सोहि ॥ रात दिवस मन सोच अति गृह जबून की चाल। गमन करो परदेश को उद्यम नहीं खुशाल ॥ दुख अनेक देखे इतै से दिन गुजरे सात। धीरज धरि मन राम भज सत्य कहौ निज बात ॥ खुशी फरागति सों रहौ तो यह विध करूँ मीत। तेल शिषा कर गहि करो दर्पन देखि विनीत ॥ द्वैज को पेखै चन्द्रमा गृह बाधा मिटि जाय। दुश्मन तेरे बहुत हैं तिनको नहीं बसाय ॥ राम भजन ते कुशल सब बढ़ि हैं राम प्रताप। अब थोरो नुकसान गनि फिरि नीको परताप ॥ गये अदिन आये सुदिन सुख सम्पति बहु भांति। मन दृढ़ करि हरिवर सुमिर दूषण सबै नसाति ॥

(ॖ) शकल ग्यारहवीं नाम नसरततुल दाखिल स्वामी गुरु तस्य फलम्।

दोहा—सुख अनेक सम्पति विभो सगुन कहै धरि धीर। मनसा पूरन होयगी सब प्रकार मति धीर ॥ सब्ज रंग एक आदमी सबै बिगारै काम। ताको डरपतु रहु सदा हरि सुमिरौ सुख धाम ॥ अंदेशा कछु मति करो ताले बडे नसीब। तोपर साहिब की कृपा उर आनौ सुख सीब ॥ खुशी मुबारिक है सदा गेह कहा परदेश। राम भजन परताप ते सबही बात सुदेश ॥

(⁝) शकल बारहवीं नाम अतबेखारिज स्वामी केतु तस्य फलम्।

दोहा—सगुन नेक सुख सम्पदा सिफ्त लिखौं किहि भांति। जो कारज मन अर्थ है सुफल होय सब भाँति ॥ पाछे जो दुःख चितवत सो गुजरै शुभ एन। मन माने कारज करौ राम कृपा सुख देन ॥ जो दुसरो जियमें लगै बादी परो छुटन्त। अजगैबी सम्पति मिलै सुत शादी दरसन्त ॥ करो इमारति सिद्धि है सब विधि भोग विलास। जासों जो नेकी करो सो खोवे अति आस। द्वैनर तोहि न चाहहीं चाहतहैं तुम हानि। वे सब कुछ नहिं करि

सकैं राम कृपा बलवान ।। तुम प्रभुको बिसरो नहीं भजो सदा चित लाय । आतम की यह दया सुख समूह अधिकाय ।।

(ꣳ) शकल तेरहवीं नाम नकी स्वामी भौम तस्य फलम् ।।

दोहा—सगुन वे शक मति करो फते होय सुख चैन । रोजी खुश बख्ता मिलै धीर धरौ लखि नैन ।। काज जोन तुम अर्थ है सिद्ध होय शुभ ऐन । जस जाको करिहो निफल करैन तुमको चैन । अह दिन तुमको नहि सुहै जो गुजरै दिन सोय । अब चिन्ता जिन तुम करो तुम प्रताप बड़ होय ।। सुख सम्पति धन लक्ष्मी बढ़ै बहुत परिवार । करि साहिब की बन्दगी सत्य वचन अनुसार ।।

(ꣳ) शकल चौदहवीं अतबे दाखिल नाम शुक्र स्वामी तस्य फलम् ।।

दोहा—सगुन नेक सबतें सिरे सुदिन खुशी करि लेय । संशय सब दुख परिहरो मनसा पूरन होय ।। बीस एक दिन धीर धर आगे कारज नीक । सकल वर्ष सुख सगुन है जो मन दीन्हों ठीक ।। दिल कुशाद करि सोच तजि जो कछु इच्छा होय । राम कृपाते सुलभ है ऐसा जानो सोय । तेरह महीना अह जो है नाम बृहस्पति जान । तौलौं असमंजस दिवस फिर सब ही सुख मान ।। दुशमन करिहैं दोस्ती रोश करै नर नारि । तोपै साहिब की कृपा सहज भरै भंडार ।। बिसरौ जनि हरि नाम को निश दिन आठौ याम । घर बैठे रिधि पाइहौ सब विधि पूरन काम ।।

(ꣳ) शकल पन्द्रहवीं नाम इजतमा स्वामी बुध तस्य फलम् ।

दोहा—सगुन सकल पृच्छक सुनो सब विधि सुखकी खानि । अब तोको सब सिद्धि है मनमें भय मति मानि ।। अह जबून तोकों हते ताते भई सुपार । राम कृपा बलवान है अब मन महँ धरु धीर ।। बैरी तुम पैरों परे तिनकी कछु न बिसाइ । तुम

नसीब अब उदित है वे सबरे खिसि आंय। गये अदिन आये सुदिन सब विधि सुख नियराय। मन दृढ़ करि हरि वर सुमिरिये दिन विप समजाय॥ दश दिन बीते सिद्ध हो जो कारज मन अर्थ। अन्न ब्रह्म उपदेश यह सब विधि प्रभु सामर्थ। असण स्वेतले वसन कछु दीजै मन करि प्रीति। श्रीहरि जी की कृपाते मिटहै यह विपरीत॥

(⁘) शकल सोलवीं नाम तरीक़ स्वामी चन्द्र तस्य फलम्॥

दोहा—यह साहिब कहि शुभ शगुन जो विचार मन कीन्ह। पन्द्रह चौदह रोजमें कारज सिद्धि नवीन॥ दुशमन तव पैरों पड़े दुःखदायक नुकसान। तिनसौं रहु डरपतु सदा रक्षक श्री भगवान॥ अंदेशा कछु मति करौ खातिर ख़ुद की राखि। साल मुबारिक सुख घनो सत्य वचन मुख भाखि॥ जो चाहो सोई करौ मन भाये शुभ काज। एक सहायक मित्र ते पदवी मिले सुराज। गई वस्तु मिलिहै सही ताको तजिये देश। रूचक खजानो गैबको पावै माल सुदेश॥ मित्र शत्रु पै तरस करि सफल भलाई तोय। कर साहिब की बन्दगी सकल रिद्धि भी होय। चंदन के पांसे करै जौज फर्द लिखि लेय। चारि वेर फेंके परै सकल भाव कहि देय॥ इति रमलसार प्रश्नावली १६ शकल की सम्पूर्ण हुई। शुभमस्तु; इत्योम्!

आपके लिए नवीन भेंट !

१—"श्री हनुमत्साधन तन्त्र कल्पयुक्त"—प्रभू हनुमान के भक्त जिसके लिये अब तक चातक को भाँति तरस रहे थे, यह वही अमूल्य रत्न है। इसके पाठ करने मात्र से ही हर प्रकार की कामनायें सांसारिक तथा परमार्थिक दोनों ही सिद्ध होती हैं। इस स्तोत्र को भगवान शंकर ने जगत जननी पार्वती से स्वयं कहा एवं प्रकाश डाला, जिसकी शक्ति स्वयं माँ जानकी जी ने श्री हनुमान जी को दिया था कि:—

"अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस वर दीन जानकी माता॥"

किमधिकम्। इस स्तोत्र का संक्षिप्त परिचय है। मूल्य २० पैसे।

२—"श्री शिव शतक"—शीघ्र ही शिव जी को प्रसन्न करनेवाली अपूर्व पुस्तक। मूल्य २५ पैसे।

३—"दो सौ वर्षों का अद्भुत स्थाई कैलेण्डर"—इसकी मदद से सन् १८०१ से सन् २००० ई० तक के किसी भी तारीख का दिन वगैरह बड़ी सरल रीति से जाना जा सकता है। मूल्य २५ पैसे।

४—मैट्रिक नियमानुसार वजन की परिवर्तन सूची का कार्ड।
मूल्य ५ पैसे।

5—Feet and Inches to Metres (Card)

Price 5 paisa

सूचना—यह पुस्तकें सूर्यप्रसाद एण्ड कम्पनी, बड़ा गणेश, वाराणसी के ग्राहकों को बिना मूल्य भेंट की जायेंगी।

ओंकार प्रेस, काशी।

कारखाना श्री सीताराम भवन, नवापुरा

फोन नं० ३०६४ "तार लोहावाला

सूर्य प्रसाद एण्ड कम्पनी

बड़ागणेश, वाराणसी

क्रमांक.......... दिनांक..............

प्रिय महोदय,

सादर हरिस्मरणम्

हमारे यहाँ का बना हुआ "सूर्य ब्राण्ड" तुल (काँटा) का भाव निम्नलिखित है। थोक खरीद भेजें

मैट्रिक भार	लगभग लम्बाई	प्रति का भाव कच्चा "ग"	विशेष विवरण
५ किलो	४५० एम एम या १८"	रु० १६)००	
२ किलो	४०० एम एम या १६"	रु० १२)८०	
१ किलो	३३० एम एम या १३"	रु० १०)४०	
५०० ग्राम	२७० एम एम ११"	रु० ८)८०	
१०० ग्राम	६"	रु० ६)५०	

टाटा तारकिल ५० किलो के बोरी में प्राप्त।

आपके लिये नवीन भेंट

ज्योतिर्विद श्री सीताराम एडवोकेट कृत—वर-वधू-रेखा-मेलापक

प्रस्तुत पुस्तक के प्रणेता आदरणीय श्री सीताराम जी महोदय पौर्वात्य और पाश्चात्य सामुद्रिक शास्त्र के निष्णात् विद्वान् हैं। मैंने आग्रह पूर्वक एक लेख आपसे लिखवाकर विश्व-विख्यात "चिन्ता हरण जन्त्री" में प्रकाशित किया था, जिसकी बेहद प्रशंसा सर्व सामान्य ज्योतिष प्रेमियों से लेकर इस विषय के विशेषज्ञों ने भी की थी। इस पुस्तक में आपके चिर परिचित और शतशः अनुभूत सामुद्रिक-योगों का सरल संक्षित वर्णन है जिससे पाठकों को आशातीत लाभ होगा। आशा है किहिन्दी जगत इसे अपना कर लेखक का उत्साह बढ़ायेग ताकि वे शीघ्र ही इस विषय का बृहद् ग्रन्थ प्रकाशित कर सकें।

जगजीवनदास गुप्त—सम्पादक चिन्ताहरण जन्त्री।

प्रश्न-सिन्धु—यह ग्रन्थ पण्डित वासवानन्दजी के छन्द की मनोहर छटा के साथ ही साथ नित्यप्रति के प्रश्नों का सटीक उत्तर दिया गया है।



श्रद्धांजलि—

श्रीसीताराम गुप्त एडवोकेट का परिचय

आप काशी के बन्धु हितैषी पुस्तकालय, श्रीनृसिंह लीला कमेटी, कांग्रेस कमेटी के मन्त्री पद पर रह चुके हैं। आप श्री बड़ागणेश [illegible]-कालय के संस्थापक, [illegible] के सिद्ध ज्ञाता और [illegible] में भी सम्मानित [illegible] शाली रहे। [illegible] द्वारा हम उन[illegible] रहे हैं।

ज्योतिष चमत्कार

१—वर-वधू-रेखा-मेलापक	३)
२—प्रश्न सिन्धु	२।
३—प्रश्न प्रकाश	मू० २)५०
४—प्रश्नावली शतक	मू० १)
५—जादूगर—प्रत्यक्ष चमत्कार	१)५०
६—रामायण ककहरा प्रश्नावली	१)
७—श्री शुक्राचार्य प्रश्नावली	२० पैसे
८—रमलसार प्रश्नावली	२५ पैसे
९—हिन्दी रेलवे टाइम-टेबुल	६)५०
१०—श्री शिव शतक	२५ पैसे
११—दो सौ वर्षों का अद्भुत स्थायी कैलेण्डर	२५ पैसे
१२—आश्चर्यजनक प्रश्नावली	२)
१३—श्रीविनायक कल्प	२० पैसे
१४—श्रीकालीशतनाम स्तोत्र	
१५—श्रीअन्नपूर्णा तन्त्र	२० पैसे
१६—हनुमत्साधन तन्त्र	२० पैसे
१७—जीवन फलदर्पण	२)
१८—ज्योतिषसार (प्राकृत)	३)
१९—श्रीशिव संहिता	५)



द्वारा अपना भूत-भविष्य फल और वर्तमान का सच्चा हाल ११) में मालूम करें।

श्री बड़ागणेश पुस्तकालय

बड़ागणेश, वाराणसी